रूमानिया

धरती के लाल

रूमानिया के ख्याति-प्राप्त उपन्यासकार
मिखाइल सादोवीनू के दी मड-हट-ड्वैलर्स
(THE MUD HUT DWELLERS)
का हिन्दी रूपान्तर

भूमिका
नरोत्तम नागर (द्वारा)

अनुवाद
वीरेन्द्र त्रिपाठी (द्वारा)

सम्पादन
यज्ञदत्त (द्वारा)

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक
साहित्य-प्रकाशन

प्रथम बार]

[मूल्य दो रुपये

मुद्रक
रामाकृष्णा प्रेस
कटरानील, दिल्ली।

यह छोटा-सा उपन्यास......

इस छोटे-से उपन्यास को—एक ऐसे उपन्यास को जो छोटा होता हुआ भी बड़े उपन्यासों से ज्यादा वज़नी और ज्यादा प्रभाव डालने वाला है—अनेक बार मैंने पढ़ा है, और हर बार एक नयेपन का, एक नयी ताज़गी का, अनुभव किया है।

वह क्या चीज़ है जो इस उपन्यास को एक नयापन, एक नयी ताज़गी—एक ऐसी ताज़गी जो बासी पड़ने से इन्कार करती है—प्रदान करती है ?

वह चीज़ है इस उपन्यास की सादगी, जीवन को उसके अपने सीधे-सादे रूप में पेश करने की इस उपन्यास के लेखक की क्षमता। लेखक में किसी ऐसे मोह या दुराग्रह का अभाव है जो जीवन में पाये जाने वाले चरित्रों को अपने कल्पना-प्रसूत टाइपों या दिमागी ग्रन्थियों के रूप में प्रकट किए बिना नहीं रहता।

क्या आप किसी ऐसे उपन्यास की कल्पना कर सकते हैं जिसके सभी पात्र—भले भी और बुरे भी, कोड़े मारने वाले भी और कोड़े खाने वाले भी—हीरो हों ?

इस उपन्यास के पात्र, बिना अपवाद के, ऐसे ही पात्र हैं।

और क्या आप किसी ऐसे लेखक की कल्पना कर सकते हैं जो सभी पात्रों में—आम तौर से आधी ज़मीन में धँसे हुए मिट्टी के घरौंदों में रहने वाले पात्रों में—हीरो बनने की क्षमता के दर्शन कर सकता हो ?

इस उपन्यास का लेखक, असंदिग्ध रूप में, एक ऐसा ही लेखक है।

इस उपन्यास का लेखक और इस उपन्यास के पात्र, लगता है

जैसे बहुत ही नज़दीकी और मजबूत नाते में जुड़े हैं—एक सा जीवन उन्होंने बिताया है—ज़मीन दोज़ कच्चे घरौंदों में, और घरौंदों से उठने वाले धुँए की गंध और कीचड़ में वे पले और बढ़े हैं........

नीता लेपादतू को देखिए—उपन्यास को शुरू करते ही जिससे हमारा परिचय होता है। एकदम अकेला आदमी, न माँ न बाप, न बीवी, न बच्चे, न सिर छिपाने के लिए कोई घर—लगता है जैसे वह धरती फोड़ कर प्रकट हुआ हो।

कुछ भी तो उसके पास नहीं है—सिवा दो हाथों के—मज़बूत और काम करने वाले हाथों के—ऐसे हाथ जिनसे वह किसी का गला नहीं घोंटता, न ही किसी को अपना गला घोंटने देता है।

कितनी शक्ति है उसके इन हाथों में। उपन्यास के एक-एक शब्द में यह शक्ति व्याप्त है.......

और अकेले नीता लेपादतू के पास ही नहीं, इस उपन्यास के सभी पात्रों के पास यह शक्ति मौजूद है।

यह शक्ति, और इस शक्ति के धनी इस उपन्यास के पात्र, और उनका जीवन जो केवल इस एक समस्या को हल करने में उलझ कर रह जाता है कि इस शक्ति का उपयोग्य करने का अवसर कैसे प्राप्त किया जाय।

इस उपन्यास का जीवन-क्षेत्र एक ऐसा प्रदेश है जहाँ दीन-दुनियाँ की हवा प्रवेश नहीं कर पाती, जहाँ न स्कूल हैं और न इस तथा उस लोक को सुधारने वाले मन्दिर-गिरजा। साल-भर में एक बार कर उगाहने वाला सरकारी कारिन्दा आता है और अपनी जेब गरम करके चला जाता है। पुलिस और फौज यहाँ दखल नहीं कर पाती, और न्याय की लम्बी भुजा अपराधियों की खोज में वहाँ तक नहीं पहुँचती। और यहाँ की ज़मीन,—बस, उसकी कुछ न पूछिए। वह सोना उगलती है। इतनी ऊँची फसल पैदा होती है कि घोड़े पर सवार आदमी भी उसमें छिप जाय!

इस समूची, सीमाहीन, ज़मीन का मालिक है जार्ज। एक छत्र उसी का यहां राज्य है। उसके सिवा अन्य कोई पंछी यहां पर नहीं मार सकता।

जार्ज जिसके पास ज़मीन ही ज़मीन है, नीता लेपादतू और उसके दूसरे साथी जिनके पास युग-युग से संचित काम करने की ललक लिए केवल हाथ-हा-हाथ हैं—ऐसे हाथ जिनकी जार्ज को, जार्ज की ज़मीन को, ज़रूरत है।

जार्ज को नीता लेपादतू जैसे हाथों की ही नहीं, ऐसे हाथों की भी ज़रूरत है जो काम कराना जानते हों—ऐसा काम नदी के प्रवाह की भाँति जिसका कभी अन्त नहीं होता!

फलीबोग ऐसा ही आदमी है जिसके कोड़े की सनसनाहट समूची बस्ती में गूँजती है। न्याय के शिकंजे से बच कर उसने यहां शरण ली है और मालिक ने उसके हाथ में कोड़ा देकर अपनी जागीर की रक्षा करने तथा लोगों को काबू में रखने के लिए उसे खुला छोड़ दिया है।

लेकिन फलीबोग का जोर उसके निर्मम कोड़े में नहीं, किसी और चीज़ में है। रात को जब चारों ओर सन्नाटा छा जाता है और सफेद घोड़े पर सवार छलावे की भाँति वह बस्ती में घूमता है, तो चोरी-डकैती के पुराने जीवन की याद उसे आती है और व्यंग-भरी मुसकराहट के साथ वह सोचता है—जिन लोगों की सम्पत्ति पर एक दिन मैं छापा मारता था, उन्हीं की सम्पत्ति की आज मैं रक्षा करता हूं—यह दुनिया भी खूब है!

इस दुनिया के प्रति जो कि 'खूब' है और इस बस्ती के भीतर सिमट कर जो रह गई है, अपने भावों को फलीबोग, खास अपने ढंग से प्रकट करता है।

"देखो नीता," कौड़ियों की भाँति अपनी आंखों को निकालते हुए फलीबोग कहता है—"यहां का मालिक मैं हूं, और तमीज़ के साथ

तुम मुझसे बातें किया करो। क्या तुम बता सकते हो कि यहाँ इतनी ज्यादा बारिश क्यों होती है कि मैं तंग आजाता हूँ?—और कीचड़ इतनी क्यों होती है कि उसमें आदमी समा जाय?—और परेशानियाँ इतनी कि सिर भन्नाने लगे। अपनी झुंझलाहट उतारने के लिए मुझे कोई चाहिए जिसके सिर पर मैं कोड़ा फटकार सकूं। और इसके लिए, नीता, आज मैंने तुम्हें चुना है।"

कोड़ों की सनसनाहट इस खीज को शान्त नहीं कर पाती—कर भी नहीं सकती। अन्त में कोड़े को खैरबाद कह फलीबोग चला जाता है—नये जीवन की खोज में।

नये जीवन की खोज, अच्छा जीवन बिताने की आकांक्षा, नीता लेपादतू से लेकर फालीबोग तक जो सभी के हृदय में व्याप्त है, इस छोटे-से उपन्यास की सब से बड़ी निधि है।

× × × ×

यह उपन्यास १६१२ में लिखा गया था, और इससे भी बहुत पहले के बड़े-बड़े जागीरदारों के भयानक उत्पीड़न के शिकार धरती के लालों के जीवन और उनके सुख-दुख का यह चित्रण करता है। तब से अब तक रूमानिया बहुत बदल गया है—सामन्तों-पूंजीपतियों का निज़ाम खत्म हो गया है और नीता लेपादतू, फलीबोग जैसे लोगों को सुखी जीवन की खोज में अब दर-दर की खाक नहीं छाननी पड़ती। काम करने की युग-युग से संचित ललक लिए अपने हाथों से अब वे नये जीवन का निर्माण कर रहे हैं।

—नरोत्तम नागर

धरती के लाल

(१)

नीता लेपादतू जार्ज एन्रामीनू की जमींदारी इलीसेनी में अकेला ही आया; सिर्फ एक टोपीदार लबादा और चमकदार लाठी उसके हाथ में थी। शरद ऋतु थी। वह पहाड़ी के एक सिरे से उतरा और खेतों-खलिहानों की ओर पहुँचा। फिर थोड़ी देर के लिए अपने पैरों के पास के तलब और जमींदार के घर का मुआइना करने के लिए रुक गया।

चारों ओर, जहाँ तक भी उसकी निगाह गई, खुले-खुले खेत थे, उसके पीछे बड़ी दूर तक, जिधर से वह चल कर आया था, पूरब की ओर दूर प्रुत नदी तक न जाने कितने मील वह चल आया था, बिना किसी इंसानी आबादी के दर्शन किये हुये। उन दिनों जिजिया और प्रुत क्षेत्र रेगिस्तान के सिवा और कुछ नहीं थे।

नीता खलिहानों के बीच आगे बढ़ गया। एक मड़ैया में से उसे काम करते हुए नाज पछोरने वालों की लयपूर्ण संगीत ध्वनि सुनाई आ रही थी। एक अंधेरे कोने में बंधा एक छोटा घोड़ा शांत खड़ा था। शरद की सुनहली किरणों में उसका सिर नीचे झुका हुआ था। तभी एक भद्दी शक्ल का कुत्ता बाहर की ओर कूदा और किसी अजनबी के पैर देखकर बड़ी तेजी से भौंकने लगा।

नीता ने अपनी लाठी से उसको दूर रखा, और धीरे-धीरे मड़ैया की ओर आगे बढ़ने लगा, जहाँ से कि उसे नाज पछोरने की भद्दी आवाज सुनाई दे रही थी।

मेमने जैसी थरथराती एक महीन आवाज आई, "कौन है ?"

और मड़ैया से नंगे सिर, बिखरे बालों वाला एक छुटका-सा बूढ़ा

आदमी बाहर निकला—"क्या है ? ...चुप रहो कोतुन !" वह कुत्ते की ओर चिल्लाया और उसकी ओर झुका—"भागो, चलो ! अपनी जगह जाओ, जंगली !" उसने लकड़ी का एक टुकड़ा उठाकर कुत्ते की ओर फेंका और उसे भगा दिया। तब वह नीता लेपादतू की ओर मुड़ा और एक गहरी जाँच पड़ताली निगाह से उसे देखा।

"हुँ ...", कुछ अचरज से उसने कहा, "बच्चे, तुम इस ओर के रहने वाले तो नहीं जान पड़ते। मैंने तुम्हें पहिले कभी नहीं देखा। ....क्या चाहते हो तुम ?"

यात्री ने कहा, "आपका खयाल ठीक है। मैं बड़ी दूर से सफर करता हुआ आ रहा हूँ। उधर से...."

"किसी ने तुम्हें भेजा है यहाँ क्या ?"

"जी, किसी ने भी नहीं....पर अगर आप बुरा न मानें तो मैं पूछूँ, यह किसकी जागीर है ? आपका क्या ख्याल है; मुझे यहाँ कोई काम मिल सकता है ?"

बूढ़ा अपनी महीन आवाज में थरथराया, "ठीक है बेटे; जब तुम यहाँ आ ही गये हो, तो काम बहुतेरा। जागीर काफी बड़ी है और मालिक, वह अच्छे दिल वाले हैं।"

" उनका नाम क्या है ?"

"मिस्टर जार्ज....यही है उनका नाम। मिस्टर जार्ज एन्रामीनू... तुम वहाँ उनके घर जाकर बात करलो।"

"जी अच्छा" नीता लेपादतू भुनभुनाया।

बूढ़े ने अपनी छोटी चमकदार आँखों से उसे भली प्रकार जाँचा।

अजनबी थका हुआ था। उसका चेहरा सड़क की धूल से काला हो रहा था। वह अपनी भोहों और झोआदार पलकों के नीचे गहरी धंसी हुई आंखों से सूनेपन के कारण दुखी-सा दिख रहा था। काफी दिनों से उसकी हजामत नहीं बनी थी, पर उसकी घुँघराली और नीचे

झुकी मूँछों ने उसके मुँह पर अपना छत्र नहीं बिछा पाया था। उसके होंठ सूखे थे और उनपर पपड़ी जम गई थी; रह-रहकर वह उनपर अपनी जीभ फेरता था, ताकि वह गीले बने रहें।"

उसने कोशिश करके कहा," मैं प्यासा हूँ। अगर आप मुझे एक लोटा पानी दे देंगे, तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

"क्यों नहीं" बूढ़ा 'बोला, "मैं पानी न पिलाकर पाप थोड़े ही लूँगा अपने सिर पर। चलो, मेरी झोंपड़ी में चलो।"

उसके चेहरे पर मित्रता की रेखाएँ उभर आईं।

झोंपड़ी को ओर साथ-साथ चलते हुए, उसने हँसते हँसते कहा, "मुझे लोग नश्ताश तेन्ती कहते हैं। मैं इधर कई बरसों से रह रहा हूं...तीन पुश्तें मालिकों को—दादा, पिता और पुत्र—सब ने मुझे यहाँ पाया और छोड़ दिया...मैंने तुम जैसे बीसियों थके हुए नौजवानों की प्यास बुझाई है। मैंने उन्हें पानी इसलिए पिलाया, ताकि जब मैं दूसरी दुनियाँ में जाऊँ, तो प्यासा न मरूँ..."

वह छोटे-छोटे कदम रखकर चल रहा था, उसकी सुअर की खाल की बनी सेंडिलें धूल भरी जमीन को दचक रही थीं। हवा की लहरों से उसकी मोटे सूत की कमीज, जो उसके दुबले शरीर पर बहुत बड़ी लग रही थी, फर्र फर्र उड़ रही थी।

ऊँचे ऊँचे खलिहान-मडैया जहाँ आदमी नाज पछोर कर अन्न निखार रहे थे, पीछे छूट गये।

चचा नश्ताश तेन्ती लेपादतू को अपनी झोंपड़ी में ले गये, जो जमीन में आधी धँसी-सी प्रतीत हो रही थी। वह पहिले भीतर घुसे।

यात्री उनके एक छोटे मिट्टी से पुते कमरे में घुसा, जिसके एक कोने में चूल्हा था, जिसकी चिमनी कच्ची छत के बीच से गुजरती थी।

कमरे की दीवारों के सहारे लकड़ी की बेंचे पड़ी थी, जिन पर ऊनी चादर बिछी थी और अन्त में एक छोटी सी सेन्ध थी, जिस पर काँच

लगाकर बड़ी खूबसूरती के साथ खिड़की बना ली गई थी। वह खिड़की इतनी छोटी थी कि उसके बीच से बाहर की ओर झांकना मुश्किल ही था। रोशनी मुख्यतः दरवाजे से ही आती थी।

चूल्हे के पास एक नीची तिपाई पर कोई २१ वर्षीय एक तरुणी बैठी थी, जो मक्की के भूसे से आग जलाने की चेष्टा कर रही थी।

जब बूढ़ा और नीता भीतर आये, तो अजनबी को देखकर उसने ताज्जुब जाहिर करते हुए कमरे भर में देखा, फिर एक दम मशीन की मानिन्द अपनी छपी स्कर्ट और सूती ब्लाऊज़ को लम्बा खींचा और मुस्कराई।

"दिन मुबारक" नीता लेपादतू ने कहा और उसकी आँखें तरुणी पर टिकी रहीं।

"दिन मुबारक..."

चचा नस्त्राश ने किवाड़ के पीछे बाल्टी खोजी और अपनी सैंडल की ठोकर मारकर भुनभुनाया, "हुंः" इतनी बड़ी लड़की और खाली बाल्टी! मार्वियोलीता, बाल्टी लो और भरके लाओ, ताकि मुसाफिर पानी तो पी सके।"

लड़की ने जल्दी से, बल्कि शर्माते हुए कहा, "अभी लाती हूँ पिताजी।" उसने बाल्टी उठाई और नीची आँखें किए हुए बाहर चली गई।

"हूं..."अब चचा नस्त्राश ने काफी तरंग में आकर कहा, "यह मेरी अकेली बच्ची है। मेरी बीबी मुझे नहीं मालूम उसका क्या हुआ, एक खुशनुमा दिन वह बाहर गई—बारह-तेरह बरस हुए और तब से आजतक उसका कोई पता—निशान नहीं। मेरी छोटी बच्ची, बड़ी मेहनती है यह, लेकिन तमाम दिन यहाँ रहने के कारण वह ऊब जाती है। यहाँ इतवार को जाने के लिये कोई गिरजा भी नहीं है। वैसा भी नहीं जैसा सेरेट में या मोल्दोवा की तरह—जहाँ कोई ऐसा

गाँव नहीं जहाँ गिरजा या पादरी न हो। तुम कह सकते हो कि वहाँ नीचे के लोग दूसरी तरह के हैं। यहाँ, हमारे यहाँ नाच का रिवाज भी नहीं। जब मैं छोटा था, तब दूसरी जगहों पर रहा था और मुझे याद है आदरणीय लोग हमें नाच की दावत देते थे....यहाँ तो हम जैसे रह सकते हैं; रहते हैं ईश्वर की मेहरबानी पर। समझे, मेरी बेटी भी औरों की तरह है....वह भी जब तक जवान है, जिन्दगी को अच्छी तरह से गुजारना चाहती है। लेकिन यहाँ, मेरी इस झोंपड़ी में वह क्या जिंदगी गुजारे....क्या लुत्फो आराम उठाये ?..."

बेंच पर बैठे लेपादतू ने एक आह भरी और कहा, "समझा !"

"हुँ :" बूढ़ा कहता गया, "यहाँ इंसान दरिन्दा बन जाता है। मेरी लड़की भी जंगलियों की तरह बढ़ी है। यह ठीक है कि वह कभी-कभी जमींदार के घर जाती रहती है और वहाँ की स्त्रियों ने उसे अपने आप को ढंग से रखना और बात करना सिखा दिया है।... और दो एक बार वह शावेनी नगर भी जा चुकी है, पर इससे आगे कुछ नहीं। भला कैसे उससे सब कुछ जानने की उम्मीद की जा सकती है ?"

नीता लेपादतू ने धीरे से कहा—"इन्सान जैसे रह सकते हैं, वैसे ही तो रहते हैं।"

"हुँ, यह तो सही है, अब मेरी ओर ही देखो। जब भी कोई इधर आता है मुझे बड़ी खुशी होती है...किसी से बातचीत कर सकूं या ख्यालों का तबादिला कर सकूं...तुम कहीं बहुत दूर से आ रहे हो ? क्या दक्खिन से ?"

"जी हाँ, दक्खिन से, पर बहुत दूर से नहीं।"

"शायद तुम इयाशी के कस्बे से आ रहे हो...?"

"जी नहीं, इयाशी तो बहुत दूर है...मैं वहाँ कभी नहीं गया। मैं तो एक गरीब—अनाथ हूँ। मेरे कोई नहीं।..."

"हुँः" चचा नरताश ने एक उसाँस खींची और खड़े हो गये, "लो, लड़की पानी लेकर लौट आगई !"

और वह हाँफती, लम्बी साँस भरती अपने नंगे पैरों से बड़ी-बड़ी शब्द करने वाली डगें भरती आई। उसकी बड़ी आँखें उसके साँवाले चेहरे पर चमक रही थीं। वह झोंपड़ी में, दो कदम रखकर भीतर गई, फिर चूल्हे के पास से एक मिट्टी का प्याला लाकर उसे पानी से भरा और मुसाफिर को दे दिया।

नीता लेपादतू एक ही घूंट में सारा पानी पीगया और फिर माँगा। दूसरा भी पी गया, फिर ओठों और मूछों को अपनी कमीज की बांहों से पोंछा। मिट्टी का प्याला लड़की को दे दिया और ताजगी महसूस करते हुए धन्यवाद के नाते बोला, "यहाँ का पानी तो बहुत अच्छा है ! भगवान् आपको अच्छी तरह रखे और आपकी मनोकामनाएँ पूरी करे...."

बूढ़ा अपनी ही धुन में बोला, "हुँः पानी से बढ़कर अच्छी चीज दुनियाँ में और कोई नहीं है।"

लड़की किंचित मुस्कराई। उसने बाल्टी फिर किवाड़ों के पीछे रख दी और चूल्हे के पास पड़ी अपनी नीची तिपाई पर जा बैठी। नीता लेपादतू ने ध्यान से देखा तो पाया कि उसके गाल रक्तिम हो उठे थे और उसके बाल अधिक मुलायम और चिकने लग रहे थे। निश्चय ही उसने अपना मुखड़ा किसी जलाशय में देखा था और उसे धोया था और बालों को भी साफ पानी से सहेजा था।

यात्री ने ऊर्ध्व श्वाँस लेकर पूछा, "अब मैं क्या करूँ ?"

"हुँ... क्या करो ? सबसे पहिले तुम हमारे साथ खाना खाओगे, हम इन्सान हैं न ? फिर हम जमींदार के घर चलेंगे। मेरा खयाल है तुम्हें काम मिल जायगा, क्योंकि मिस्टर जार्ज को हमेशा आदमियों की जरूरत रहती है...."

मार्थियोलीता, जो चूल्हे के पास बैठी हुई थी, बीच में ही बोल पड़ी, "उन्हें मवेशियों के लिए एक आदमी की जरूरत है।"

बूढ़े ने पूछा, "तुझे कैसे मालूम ?" उसकी आवाज बहुत ऊँची थी और वह सिर हिलाकर हँस रहा था।

"जब मैं उनके घर गई थी, तो वहाँ कोई कह रहा था।"

"हुँः···लड़की ठीक कहती है। उन्हें मवेशियों के लिए आदमी की जरूरत होगी।" और यह कहने पर उसकी वाणी आश्वस्त प्रतीत हो रही थी।

लम्बी यात्रा और सूखी हवा के कारण नीता लेपादतू थक गया था। लेकिन ताजा पानी, झोंपड़ी में आराम और बूढ़े की लड़की द्वारा तैयार किये गए भोजन ने उसको काफी स्वस्थ कर दिया।

वह भी इधर-उधर की बातें करने लगा—एक और जमींदार के बारे में जिसे वह जानता था। अपने घर के बारे में, रहने के कस्बे के बारे में। फिर वह चचा नरताश की कहानियाँ सुनता रहा, इस खयाल से कि इस दौर में उसे तरुणी की ओर देखने का अच्छा अवसर मिलेगा; और उसमें यह भावना जाग आई थी कि इस झोंपड़ी में वह अपने दोस्तों के बीच है।

(२)

साँझ होने से कुछ पहिले वह बाहर निकले और जमींदार के घर की ओर चले। झोंपड़ी की देहरी पर खड़ी तरुणी उनको जाते देखती रही। उसने सोचा, अगर मुसाफिर को नौकरी न मिली, तो वह बिना झोंपड़ी पर वापस आये और उससे मिले अपनी 'यात्रा' पर निकल जायगा। उसे लगा, जैसे उसका दिल बैठा जा रहा है। आँखों से वह शरीफ और शान्तिप्रिय दीखता है। वह कितना चाहती है कि वह वापस आकर एक बार फिर बेंच पर बैठे और उसकी ओर ललचाई आँखों से देखे और पीने के लिए एक गिलास और ठंडा पानी माँगे।

पश्चिम में सूरज घनी पहाड़ियों के पीछे बादलों की चमकीली चकमक में छिपता जा रहा था। मैदान में अब भी सूखी हवा चल रही थी। जहाँ तक निगाह जाती थी चरी और मकी के जुते हुए खेत फैले थे। ढालुवें मैदान में तालाब का शान्त पानी झलमला रहा था। एक पहाड़ी पर कुछ घनी झाड़ियाँ उभरी हुई थीं। कहीं पर जंगल, बागीचा या गाँव का कोई निशान नहीं था; और इस भू-भाग के ऊपर फैला आस्मान शान्ति की चादर के समान विस्तृत था।

दोनों आदमी तंग धूल भरे रास्ते में धीरे-धीरे चल रहे थे। उनके पैरों से उठी धूल की बदली हवा के पंखों पर सवार होकर चरी और मक्की के खेतों के बीच फैली झाड़ियों पर विश्राम करने बैठ जाती थी।

खलिहान के पीछे से मानो हवा के आलसी झोकों के सहारे, कौवे और मैना उभरीं और घाटी में अन्तर्धान हो गईं।

"हुंः अब जमींदार का घर बिल्कुल पास है," बूढ़े ने कुछ देर बाद कहा। "आज शनिवार है, जमींदार घर पर ही होंगे···शनिवार को वह खेतों से जल्दी ही आ जाते हैं!"

लेपादतू ने पूछा, "क्या बहुत बड़ी जमींदारी है ?"

चचा नश्ताश ने उसकी ओर अचरज भरी दृष्टि से देखा, "क्या ? जहाँ तक तुम्हारी नजर जाय और उससे भी आगे ! जमींदारी बहुत-बहुत बड़ी है। संसार की सब जमीदारियों में सबसे बड़ी।" कुछ ठहर कर वह फिर बोला, "एक बार मैंने जमींदार से पूछा, मि० जार्ज इतनी जमीन और इतने धन आप का क्या करते हैं ?"

"और उन्होंने क्या जवाब दिया ?"

"क्या जवाब देते ?...हुँ...उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। बस खिलखिला कर हँस पड़े।"

नौजवान ने अपना सिर हिलाया और मुस्करा दिया। बूढ़ा किसान भी मुस्कराया, लम्बे बाल हिलने लगे, तब अपनी झुर्रियोंदार कलौंच खाई अंगुलियों से इशारा करते हुए बोला—"वहाँ, वह नीचे है जमींदार का मकान और वह रहे नौकरों के मकान..."

तालाब के पास था सफेद मकान, नीचा और गोल लट्ठों का बना हुआ—चारों ओर फूंस की मड़ैया थीं, अस्तबल थे।

चचा नश्ताश ने कहा, "जमींदार का मकान बहुत सुन्दर है। जमींदारों को बहुतेरे कमरे चाहिएँ। एक और अवसर पर मैंने उनसे पूछा—"मिस्टर जार्ज, आप इतने बड़े-बड़े कमरों का क्या करते हैं ? आपको इतने कमरे क्यों चाहिएँ ?"

"क्या कहा उन्होंने ?"

"हुँः कहते क्या ? उन्होंने कुछ नहीं कहा। वह सिर्फ हँस पड़े..."

दूसरे ढलवानों से अधिक ढालुआँ और जमींदार के घर से अधिक दूर पर नहीं, झोंपड़ियों की एक लम्बी पंक्ति थी। कुछ तो जैसी कि झोंपड़ियाँ आम तौर पर बनती हैं—आधी धँसी हुई और मिट्टी से ढकी हुई वैसी ही थीं। दूसरी पहाड़ की खोह की ओर झुकी हुई थीं और सरकंडों से, खप्पचों से चारों ओर से ढकी थीं, जिन पर मिट्टी की

हलकी-सी पोती फिरी हुई थी, जो अब धीरे-धीरे झरने लगी थी। इन अधधँसी झोंपड़ियों से धुँये की बदलियाँ ऊपर की ओर उठ रही थीं।

यहाँ-वहाँ एक काँच की खिड़की थी, जो कि हाथ भर से किसी हालत में बड़ी नहीं होगी, सूरज की तिरछी पड़ती किरणों को झलकाती थी। कहीं पर भी और किसी किस्म के बाड़े नहीं खिंचे हुए थे।

मवेशी और सुअर दरवाजे के बाहर बेतरतीब जमा थे। मुर्गियाँ झोंपड़ियों की छतों पर कूड़ाकबाड़ और गोबर को छिछोरती थीं।

"यहाँ मिट्टी की झोंपड़ियों में रहने वाले बसते हैं," बुड्ढा बोला। "इन्हीं आदमियों के साथ मिलकर हम जमींदारी पर काम करते हैं।"

"देखने से तो यह जान पड़ता है कि जमींदार के यहाँबहुतेरे आदमी हैं काम करने के लिए। उनके पास...."

"हुँः सो तो है ही। तुम्हारा क्या ख्याल था? जिस जगह से तुम आये हो, क्या वहाँ के जमींदार के यहाँ इतने आदमी नहीं थे। हमारा जमींदार सबसे बड़ी जमींदारी का मालिक है, समझे! इसलिए उन्होंने चारों तरफ से आदमी बुला रखे हैं। समय-समय पर कुछ लोग काम छोड़ कर चले जाते हैं, उनकी जगह नए आ जाते हैं।....जब काम पूरे जोरों पर होता है, तो वह ऐसी जगहों से आदमियों को बुलाते हैं, जहाँ उनकी बहुतायत होती है और इसलिए और आदमी बढ़ जाते हैं।.... लेकिन हम भारी काम झोपड़ियों में रहने वालों के साथ मिलकर ही करते हैं।"

लेपादतू भुनभुनाया, "हुँ, हमारे यहाँ भी ऐसा ही था। मैं खुद इसी तरह की एक कीचड़ की झोंपड़ी में पैदा हुआ था, वहीं बढ़ा और वहीं रहा।...."

"हुँ, पर खैर...इसी तरह की झोंपड़ी में...लेकिन और जगहों पर

तो लोग सचमुच के घरों में रहते हैं। मैं तो सोच भी नहीं सकता, भला जाड़ा वहाँ कैसा होगा ?····एक बार मैंने जमींदार से पूछा, मिस्टर जार्ज, अपनी झोंपड़ियों में हम सर्दी की चिन्ता नहीं करते। पर आपको अपने इतने बड़े घर में ठण्ड नहीं लगती ?"

"उन्होंने क्या कहा ?"

"क्या कहा तुम्हारे खयाल से उन्होंने ? वह हँस भर दिये। बोले कि वह आग जलवा लेते हैं। पर मैं यह सब क्या समझूँ ?"

"चचा नश्ताश बात दरअसल यूँ है। हमारे जैसे इन्सान आधे जमीन के ऊपर रहते हैं और आधे नीचे। आप तो जानते हैं कि कभी-कभी कितनी भयानक सर्दी पड़ती है और हम मवेशियों के साथ खेतों पर ही बने रहते हैं। हम इन सब चीजों के आदी हो गए हैं। और रहा जमींदार, सो उससे आप क्या उम्मीद करते हैं ? वह जमींदार है और उसकी आदतें दूसरे ही तरह की हैं···· ।"

चचा नश्ताश ने बात पूरी की—"उसकी चमड़ी भी और तरह की है···"

इस वाक्य पर दोनों हँस पड़े। वह और नीचे उतरे और झोंपड़ियों के सामने से गुजरे। बहुतेरे आदमी चिथड़े लपेटे आ-जा रहे थे, मवेशियों को पानी पिला रहे थे, घोड़ों को सैर करा रहे थे, ढेंकुलीदार कुए पर अपने पीने के लिए पानी लेने के लिए अपनी-अपनी बारी ले रहे थे।

बूढ़े ने उन्हें पुकार कर पूछा—"जमींदारजी वापस आ गये क्या ?"

किसी ने भर्राये गले से उत्तर दिया—"हाँ-हाँ, आगये।"

चचा नश्ताश आप से ही, भुनभुनाये "अच्छा हुआ।"

जमींदार के घर के आस पास भी चारदीवारी का घेरा नहीं था। नौकरों के घरों में आदमी धँसे पड़े थे। साईस अपने घोड़ों को अस्त-

बखों में लेजा रहे थे। घर के पीछे मवेशियों का एक झुन्ड गुजरते हुए धूल के बादल उठा गया। चरवाहों की आवाजें चीख-पुकारें, डाँट-फटकारें रह-रह कर गूंज रही थीं। कभी बहुत जोरों की भद्दी गालियाँ सुन पड़ती थीं और मवेशियों की पीठ पर मार के धमाके भी सुन पड़ते थे।

मवेशियों के गले में बँधी न दिखाई देने वाली घंटियाँ धूल भरी हवा में दरद की झन्कार की मानिन्द गूँज जाती थीं।

"देखो, जमींदारजी के कितने मवेशी हैं?" बुड्ढे ने बिना किसी घमन्ड की भावना के कहा।

वह लकड़ी के बने घर के पास घूम कर पिछले दरवाजे के पास जाकर रुक गये। काफी इन्तजार करना पड़ा। बराम्दे की खिड़कियों में यदा-कदा उन्हें एक स्त्री की परछाईं दीख जाती थी।

चचा नश्ताश फुसफुसाये—"जमींदारजी के घर की देख भाल करती है यह!"

छाया एक बार फिर सामने आई, और इस बार वह हटी नहीं; रुकी, बाहर आकर दरवाजा खोल दिया। एक दुबली-पतली, पीले चेहरे वाली, कोयले जैसी आँख और काफी तीखी नाक वाली स्त्री थी। वह गहरे रंग के कपड़े पहिने थी और बालों को तरतीब से ढकने के लिए भी वैसा ही गहरे रंग का रूमाल काम में लाया गया था।

उसने कुछ तीखी आवाज में पूछा—"क्या बात है चचा नश्ताश?"

"हम जमींदारजी से कुछ बात करना चाहते हैं..."

"अच्छी बात है! पर अब अपनी बेटी क्यों को नहीं भेजते कभी मेरे पास? यहाँ बहुतेरा काम करना होता है, कुछ मदद ही कर देगी हमारी।"

बूढ़ा कोमलता से बोला, "कौन मार्थियोलीता? उसे घर पर कुछ काम करना है; पर मैं उसे तुम्हारे पास भेजूंगा, जरूर, हाँ, क्यों नहीं?"

"अच्छा यह तो बताओ, तुम्हें जमींदारजी से क्या कहना है?" उस दुबली स्त्री ने पूछा। जल्दी बोलने में उसकी आवाज और भी तीखी सी लगी।

"यह नौजवान है न, यह उनसे कुछ बात करना चाहता है।"

गृह-रक्षिका ने नीता लेपादतू की ओर एक तीखी दृष्टि डाली और फिर दरवाजे को एक धमाके के साथ बन्द कर लिया।

"हुँ", चचा नश्ताश, मुस्कराये। "देखा, यह नन है। जैसा तेज बोलती है, वैसा ही तेज बर्ताव भी है इसका।"

लड़के ने ताज्जुब से पूछा, "नन क्या?"

"अरे वाह, यह एक कन्वेन्ट (धर्म-शिक्षा-केन्द्र) से आई है और अब जमींदारजी के घर की देख भाल करती है। कितनी तेज है, देखा! इसी तरह बोलती है हमेशा। यह हम पर यह जतलाना चाहती है कि यही है घर की सब कर्त्ता-धर्ता। वैसे दिल बुरा नहीं है। कभी-कभी यह मार्घियोलीता से गप्पें हाँकती है, तब अपने बारे में बतलाती है। कुछ भी हो, कोई बहुत खुशी की बात नहीं थी, जिस कारन वह, इस वीराने में रहने आई।"

गृह-रक्षिका एक बार फिर पहिले से भी तेजी से वरांडे के शीशों पर काली चमक की तरह गुजरी। फिर उन्होंने किसी मर्द के पैरों की आहट सुनी, और जमींदार ने आकर दरवाजा खोला।

दोनों आदमियों ने अपने सिर नंगे किये। मिस्टर जार्ज एग्रामीनू जवान और मजबूत, उदार, हँसमुख और साँवला चेहरा, उनके सामने, अपने हाथ पतलून के जेब में डालकर खड़े हो गये। उनकी ओर देखा, और फिर मुस्कराए।

"चचा नश्ताश!" उन्होंने भर्राई आवाज, लड़खड़ाती-सी आवाज में कहा, "क्या नया समाचार है?"

"मिस्टर जार्ज, आप किस नये समाचार की उम्मीद करते हैं। अब तक सब ठीक चल रहा है ।"

जमींदार अपनी पतलून की जेब में पड़ी चाबियों को खनकाते हुए प्रसन्नता पूर्वक बोला, "सचमुच ? फिर आपका आना कैसे हुआ ? खलिहान अकेला छोड़कर क्यों चले आये ?"

"पर मैंने उन्हें अकेला तो नहीं छोड़ा मिस्टर जार्ज ! वहाँ कई विश्वासपात्र लोग हैं अभी; और फिर मुझे अपनी बेटी का भी तो सहारा है..........."

"क्या ? बेटी का क्या सहारा ?...लेकिन यह आदमी कौन है ? तुम दोनों चाहते क्या हो ?"

चचा नश्ताश ने नीता की ओर ऐसे देखा, मानो पहली बार देख रहे हों उठकर बोले", "यह ! एक लड़का है.......हमारे यहाँ आज ही आया है ।.........

"क्या नाम है इसका ?"

चचा नश्ताश ने कोई उत्तर नहीं दिया, पर फिर उस नौजवान की ओर देखा और उसकी ओर सिर हिलाया। आगन्तुक ने अपनी टोपी हाथों में मोड़ी-तोड़ी और उत्तर दिया—"नीता लेपादतू ।"

बूढ़े ने सिर हिलाया और ऐसा दिखाया मानो उसने उस नौजवान का नाम पहली बार सुना हो और कुछ अजीब-सा नाम हो।

जमींदार ने दुहराया, "नीता लेपादतू ? कहाँ से आये हो ?"

"नीगोइस्ती से ।"

"जिला इयाशी ? क्या चाहते हो ?"

अब चचा नश्ताश बोले, "मिस्टर जार्ज, यह मवेशियों के देखभाल का काम चाहता है ।"

"हुँ, तो यह मवेशियों के देखभाल का काम चाहता है, सचमुच ? खैर, किसी को जानते हो ? कोई ज़मानती ?"

"जी नहीं," नीता बोला, "हमारी तरफ तो कोई जमानती नहीं माँगता।"

"सच ? चलो, मैं भी कोई ज़मानती नहीं माँगता-बस एक शर्त है, तुम अपना बर्ताव अच्छा रक्खोगे। हाँ एक बात, तुमने नीगोइश्ती के जमींदार की नौकरी क्यों छोड़ी ?"

नीता ने धीमी आवाज में उत्तर दिया, "मिस्टर जार्ज यह न समझें कि मैं बुरा आदमी हूं। यह सच है कि मैं गरीब हूँ इसमें कोई शक नहीं....मेरे मा—बाप नहीं, कुटुम कबीला नहीं रहने के लिये मकान नहीं....मेरे पास इन भुजाओं के सिवा और कुछ नहीं—लेकिन ये भुजायें काम कर सकती हैं और मैं ईमानदार हूं। मैं नीगोइश्ती के ज़मींदार के यहाँ दस साल रहा, और मुझे लड़के की तन्खा मिलती रही। मैं यह जानता था और चाहता था कि अब मुझे आदमी की तन्खा मिलनी चाहिए और इसी लिए मैंने उनसे तन्खा में बढ़ोत्री के लिए कहा। उन्होंने देनी नहीं चाही और मैंने नौकरी छोड़ दी। मुझे अफ़सोस है। मैंने उनके लिये दस साल तक गुलामों की तरह काम किया। लेकिन मैं क्या करता ? इस लम्बी चौड़ी दुनियाँ में कहीं रोटी का टुकड़ा तो हासिल करना ही था। मैं पिछली रात वहाँ से चला और चलते-चलते यहाँ आ गया। अगर आप मुझे नौकर रखलेंगे, तो मैं यकीन दिलाता हुँ मैं ईमानदारी से खिदमत करूँगा !"

मिस्टर जार्ज चुप्पी साधे उसकी बात सुनते रहे, अलबत्ता पतलून की जेब में चाबियों की घूम जरूर जारी रही थी। जिस बंजर जमीन की वह आजकल सफाई करवा रहे थे उसे इसी प्रकार के गंवार किया करते थे। इन्हीं की मदद से वह अपने मवेशियों की तादाद बढ़ाते थे और गलाती भेजने से पहिले गल्ला एकत्र करवाते थे। इस किस्म के अलग-अलग और रेगिस्तानी भाग में उन्हें आदमियों की हमेशा जरूरत रहती थी। कहाँ से आये और पहिले किसके यहां थे, यह सवाल उन्हें परेशान नहीं

करता था। यह कोई साधारण कानूनों द्वारा शासित इलाका तो था नहीं। यहाँ, वह अकेले ही कर्ताधर्त्ता थे। कस्बे और सभ्यता के दूसरे केन्द्र यहाँ से बड़ी दूर थे। यहाँ तो 'कहीं' या 'मैदान में' वाली बात थी। टैक्स वसूल करने वाले जितना जमींदार देना चाहता था, उतना ही वसूल करते थे। फौजी अधिकारी यहाँ किसी भगोड़े को तलाश करने नहीं आते थे और न अपराधियों का कोई न्याय होता था। जमींदारी से लगी हुई कोई सड़क नहीं थी। वहां कोई गिरजाघर नहीं थे और स्कूलों को बाबत तो कभी किसीने सुना तक नहीं था। बस वहां एक ही चीज थी—जमीन-ढेर सारी जमीन। उस पर काम करना होता था और जमींदार उस पर काम करने के लिए अपनी जरूरत के हिसाब से आदमियों को रख लेता था। इसी कारण मिस्टर जार्ज ने नीता से सवालात करने में ज्यादा वक्त बर्बाद नहीं किया। उन्होंने समझ लिया कि एक कंगाल, बेघर-बार, बेमाँ-बाप, लेकिन मजबूत दिखाई देने वाले मेहनतकश से उनको वास्ता है और वही उनके लिए काफी है।

उन्होंने प्रमुदित होते हुए कहा—"तय रहा। नीता लेपादतू मैं तुम्हें अपने मवेशियों की देखभाल के लिए रख लेता हूँ। पर काम ढंग से करना। मैं तुम्हें ईमानदारी से उजरत दूँगा। मैं तुम्हें एक कोट दूँगा, एक पर लगी जाकेट, जूते और टोपी, सिर ढकने के लिए, जब भी तुम्हें चाहिये ले लेना। और खाने को तुम्हें कोई कमी नहीं होगी। वहाँ बहुतेरा है ईश्वर की मेहरबानी से! तुम यहीं—किसी झोंपड़ी में रियासत के दूसरे नौकरों के साथ सोओगे...और देखो बर्ताव अच्छा रहे—उसी हिसाब से मैं तुम्हें इनाम दूँगा।"

नीता धीमे स्वर में बोला, "मालिक, अब तक मैंने चाकरी करने के सिवा और कुछ नहीं किया है...मुझे यकीन है आप मुझसे सन्तुष्ट रहेंगे।"

जमींदार ने अपनी जेब से एक छोटीसी नोट बुक निकाली और नए

चाकर का नाम उसमें लिख लिया। तन्खा की बात तय करके उन्होंने दूसरी सहूलियतों समेत उसे भी दर्ज कर लिया। फिर नोटबुक बन्द करके बोले, "बस। अब तुम इस बूढ़े के साथ जा सकते हो। कल मैं तुम्हारे काम को पूरा समझा दूँगा और तुम्हारी तैनाती कर दूँगा।...."

मिस्टर जार्ज ने अपनी जेब से एक सिक्का निकालकर नीता को दिया और कहा—"ईमानदार रहना, मेहनत से काम करना, सब ठीक चलेगा। अच्छा, मौज करो!"

नए चाकर ने जमींदार का हाथ चूमा और कुछ कदम पीछे खड़े बुड्ढे के पीछे हो लिया। मिस्टर जार्ज ने बरामदे का दरवाजा बन्द कर लिया। दोनों ने अपने सिरों पर फिर टोपी रखली और झोंपड़ियों की ओर चल पड़े।

चचा नश्ताश अठखेलियां करते-से बोले—'देखा, आखिर तुम रुक ही गए न हम लोगों के साथ रहने के लिए...."

"मैं भी बहुत खुश हूँ!" नीता बोला, "मैं कुछ ब्रान्डी खरीद कर पीना चाहता हूँ।..."

"बहुत अच्छे, मेरे छोकरे, पर यहाँ कोई दुकान नहीं है। लेकिन शनिवार को अक्सर कोई न कोई घोड़े पर जाता है और कुछ ले आता है! खैर हम लोग फिर कभी पियेंगे, अपनी पहली मुलाकात की खुशी में; चिन्ता मत करो। मेरा खयाल है अब तुम हमारे साथ ही बने रहोगे। जमींदार जी बड़े अच्छे आदमी हैं।....

"सचमुच, वह नौजवान और दोस्त क़िस्म के हैं।" लेपादतू ने विचार निमग्न वाणी में कहा।

सूरज छिप गया था। और शरद की संध्याकालीन ललिमा ताजगी लिए निखरी हुई थी। झोंपड़ियों में आग जल रही थी। मवेशियों की आवाजें, कुत्तों की भूँक और बेहिसाब इन्सानी आवाजें सुनाई पड़ रही थीं।

उसी निस्तब्धता में अचानक उन्होंने दौड़ते हुए घोड़ों और चीखों का शोर सुना, जो एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक गूँज गया।

और अचानक कहीं से, उस डूबते सूरज की घिरती पीली-सी रोशनी में, कौओं का एक झुंड काँव-काँव का शोर मचाता उमड़ा और फिर तितर-बितर होकर विलीन हो गया।

चचा नश्ताश और नीता लेपादतू झोंपड़ियोंके पास पहुँच गए थे और उन्हें काम पर से लौटे हुए आदमियों की आवाजें साफ सुनाई पड़ रही थीं। ऊँचाई पर मवेशियों के बाड़े से आगे घाटी की तलहटी में कई अलाव काफी चमक से जल रहे थे। लोग ज्वार की लपसी पका रहे थे। उनकी काली छाया लपटों की रोशनी में अजब ढंग से चल फिर रही थी।

वह जबकि अलाव के पास आये तो उनके नथुने ज्वार की लपसी की गन्ध से भर गये। एक बड़े बर्तन से काफी भाप निकल रही थी, जिसमें गोश्त पक रहा था। मजदूर लोग ब्यालू की प्रतीक्षा कर रहे थे। कई तरह के लोग थे और कई तरह की पोशाक पहिने हुए। उदार और उजले रंग के चेहरे वाले और चमकदार आँखों वाले चेहरे। मोल्दोवा नदी के किनारे मिलने वाले सफेद कपड़े भी थे और ऐसे श्यामल कपड़े भी थे; जिन्हें मैदानी लोग पहिनते हैं। कुछ बड़े फैल्ट हैट लगाये हुए थे, और कुछ गोल स्ट्राहैट लगाये हुए थे जिनके ऊपर लाल धागे की प्लेट पड़ी हुई थीं। कुछ पुरानी फरकैप ओढ़े हुए थे, जो बारिश और तेज धूप के कारण बिल्कुल लिबलिबी हो गई थीं।

कुछ छोकरे भी वहाँ पर थे,—दस बारह साल के लावारिस—उनके सिर नंगे थे। बस उनके सरपर टोपी के नाम पर सिर्फ घने और घुँघराले बाल थे। बहुतेरी औरतें गहरे भूरेरंग की रूमाल लपेटे और ब्लाउज़ पहिने इधर से आ जा रहीं थीं। उनके चेहरे अधिक श्यामल थे और आदमियों के चेहरों से अधिक दुखी नजर आते थे। सब खामोश

थे—सारे दिन कड़ी मशक्कत जोकी थी। लोहे की कांटेदार बाड़ के, जो मवेशियों के घेरों के आस पास लगी थी, नजदीक अलाव जल रही थी, चमक के साथ; और अपनी अजूबा लाल लपटों से इस बेतरतीब विभिन्न भीड़ को चमका रहा था। एक दुर्बल, लम्बी गर्दन वाला लड़का सरकंडों के बड़े ढ़ेर में से मुट्ठीभर सरकंडे उठाकर आग की भूख मिटा देता था।

चचा नस्ताश और नीता लेपादतू जमीन को मचकते हुए चल रहे थे। जमींदार के घर का एक नौकर एक लकड़ी की चम्मच से ज्वार की लपसी पका रहा था, जब कि दूसरा मटन स्टू के पास एक बड़ा सा करछुल लिए तैयार खड़ा था।

भूखे लोग अपने कठौते लिए तैयार बैठे थे। किसी को भी अजनबी की मौजूदगी का अहसास नहीं था। जब लोगों को करछुली भर-भर स्टू और रोटियाँ मिल गईं और वह खाने लगे, तब कहीं उन्होंने लपटों की रौशनी में इधर उधर देखा भाला। उन्होंने आगन्तुक की ओर ध्यान दिया और उससे बात करने लगे।

उस साँझ आगन्तुक को कई लोगों के सवालों का जवाब देना पड़ा हालाँकि वह उन लोगों में से शायाद ही किसी को जानता था।

जब रात बहुत गुजर गई और अधिक खाने वाले लोग जब वहाँ से चले गए और अलाव के पास कुछ ही लोग रह गये, तब नीता लेपादतू उन झोंपड़ियों में रहने वालों को कुछ जान सका।

उसे सब से पुराने मवेशी रखवारे घियोर्घी बरबा को और जमींदार के आमोद-प्रमोद का ध्यान रखने वाले मिखाइलेच पेस्कूरी और खलिहान के बुजुर्ग इरीम्या इज्द्रेल को जानना जरूरी था।

हर शनिवार की रात की तरह वह अलाव के पास बैठे उस छोकरे का इन्तजार कररहे थे जो घोड़े पर शराब लाने के लिए गया था।

अन्त में चारों ओर निस्तब्धता का राज्य फैल गया। कुछ झोंपड़ियों

में आग जल रही थी या जमींदार के घर में रोशनी थी । यहां-वहां कुछ आवाजें सुनाई पड़ जाती थीं। भगवान की रक्षा से तिरस्कृत दुनियाँ के इस भाग में जहाँ चारों ओर छाया और शान्ति का समुद्र हिलोरें मार रहा था, ये आवाजें, जो बोलना न होकर गुनगुनाना थी, किसी कदर नरम और दोस्ताना लगती थीं।

छोकरा ब्रान्डी लेकर आ गया। अलाव के और पास बैठे लोग पीते-पीते शरद ऋतु के काम की कठिनाइयों और सर्दी के काम की तैयारियों पर बात-चीत करने लगे।

तभी एक दौड़ते घोड़े की आवाज उस रात की घनी हवा को चीर कर पास आती सुनाई दी। घोड़ा मवेशियों के बाड़े के ऊपर ठहर गया।

चचा नस्ताश ने विहसते हुए कहा—"यह साँदू फलीवोग है।"

एक भद्दी और कर्कश आवाज ने कहा–"जी हाँ, इंजानिब !"

लपटों की चमक में उन्होंने देखा एक दुबला लम्बा आदमी, लम्बी नाक, चमकदार आँखें जो भौंहों के नीचे गहरे गड्ढों में घुसी हुई थीं।

उसने अपना चाबुक अपनी गर्दन के चारों ओर लपेट रखा था और हँस रहा था। उसके ऊपर के दो दाँत नहीं थे।

उसने फुर्ती से कहा, "मैं तार की तरह आया हूँ ! हवाचक्की से अगर तुम मिस्टर नस्त्रातिन को अपने घोड़ों के पीछे दौड़ते देख सकते।

वह अट्टहास कर उठा और उसकी आँखों में चमक आगई। उसने चारों ओर देखा और उसकी निगाह सुराही पर पड़ी।

"ओहो ! तुम लोगों के पास पीने के लिए है ?" उसने भारी आवाज में पूछा ! "लाओ, एक प्याला मुझे दो !"

पीने के बाद उसने एक बार फिर चारों ओर देखा और उसकी दृष्टि नीता लेपादतू पर टिक गई।

एक दम, उसने अपने सिर को पीछे करके, पूछा, "यह कौन है ?"

जब वह बोला तो उसकी गर्दन की खाल के नीचे की गोली ऊपर नीचे उतरी चढ़ी।

चचा नश्ताश ने मुस्करा कर उत्तर दिया, "नया है। यह मवेशियों की देखभाल के लिए रख लिया गया है।"

"खूब! कहाँ से आये हो?"

"निगोइस्ती से!" लेपादतू ने मुलायम स्वर में कहा।

"और तुम्हारा नाम क्या है?"

"नीता।"

"नीता क्या?"

"नीता लेपादतू।"

"यहाँ क्यों आए तुम?"

"काम की तालाश में!"

"काम? खैर उसके बारे में देखा जायगा..."

उसने आगन्तुक का भयानक दृष्टि से परीक्षण किया। ब्रान्डी का एक और घूँट भरा और अपने गले को खंखार कर साफ किया।

"साली बड़ी तेज है!...और हाँ तुम नीगोइस्ती से क्यों भागे?"

"भागा नहीं। मर्जी से छोड़ कर आया हूँ।"

"अच्छा! खैर इसके बारे मे भी देखाजायगा। तो तुम्हें मवेशियों के काम के लिए रख लिया गया है। तो मेरे बच्चे, तुम यह जान लो कि तुम्हें मेरे हुक्म की तामील करनी पड़ेगी। मेरा नाम साँदू फलीबोग है। कुछ सुना है मेरे बारे में?"

"बड़ी प्रसन्नता हुई आपस से मिलकर, साँदू फलीबोग। मैंने तुम्हारे बारे में कभी कुछ नहीं सुना।"

"तब" अब सुन लोगे और यह भी जान लोगे कि मैं कैसा आदमी हूँ! अगर तुम मेहनती हो, तो मुझसे तुम्हारी खूब निभजायगी, और अगर मेहनती नहीं हो तो बस, ईश्वर ही...

फलीबोग ने अट्टहास किया और वह कहता गया— "काश, कि तुम मिस्टर नस्त्रातिन को अपने घोड़ों की तलाश करते देख पाते! मैंने सूरज छिपने पर, उसे पहाड़ी की चोटी से देखा था। मिस्टर नस्त्रातिन हम जैसे लोगों के लिए रोशनी दिखाने के भी काबिल नहीं है। मैं बड़ा चतुर हूँ और दूसरी सब बातों की तरह घोड़ों की बाबत भी सब कुछ जानता हूं। तुम तो यही समझते कि उसकी यह भाग दौड़ सिर्फ हमारी रियासत में यहाँ-वहाँ घूमना है।...हमारे जमींदार को हर जगह घास कुचली हुई और खेत बर्बाद किये हुए मिलते थे। और घोड़ों का कहीं पता तक न चलता। उनको पकड़ना और तलाश करना बड़ा मस्ला था, क्योंकि नस्त्रातिन सूरज निकलने से पहिले ही उन्हें खदेड़ ले जाता था। मैं अपने आप यही कहूँ कि 'यही मामला है'....देखो और इन्तजार करो देखो। सो मैंने कल रात अपनी सफेद घोड़ी ली और नस्त्रातिन की जमींदारी में गया और उसके घोड़ों के आसपास मँडराने लगा।...मेरी घोड़ी की घन्टी टुन-टुनाने लगी और धीरे-धीरे एक के बाद एक छोटे दस्यु मेरे पीछे चलने लगे....और फिर मुझे समझ थी ही कि कैसे क्या करना चाहिये। कभी इधर और कभी उधर, मैं रास्ते काटता-कूटता उन सबको अपने जमींदार के घर ले आया। अब सब वहीं पर हैं और नस्त्रातिन परेशान भटक रहा है। देखना, अब कितना भारी जुर्माना उसे अदा करना पड़ेगा ?...भला इस तरह कहीं काम चलता है। पहिले ये मवेशी रियासत के कोने से उस कोने तक आवारगी करते थे। पर, अब जान लो, यह सब कुछ खत्म हो गया है! फलीबोग की नज़र उन पर है। मेरे पास एक चाबुक है और एक बन्दूक। मुंशी, नौकर, पहरुए, मैं किसी की भी परवाह नहीं करता। हमारी रियासत में जो भी आयगा मेरे कोड़े से उसे मुलाकात करनी ही पड़ेगी। मुझे नमकहलाल ही होना पड़ता है। अगर हम किसी दूसरे की जमीन पर एक दो कदम जाते हैं, तो इससे किसी को

क्या ? पर हमारी जमीन....उसे छूना भी खतरा है !"

फलीब्रोग चुप हो गया और अपने चारों ओर गुस्से से देखा।

"कहां है प्याला ? मेरा गला सूख गया है ?" फिर वह नीता की ओर मुड़ा" ए, लेपादतू तुम्हारी शादी हो गई है क्या ?"

लेपादतू ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया—"नहीं।"

"मैं शादी शुदा हूँ और मेरी बीबी बड़ी करारी है, मर्दों की तरह घोड़े पर सवारी करती है और निशाना लगाती है।"

लेपादातू ने बीच में ही अपनी बात बिना कुछ ख्याल किये, बोल दी—"अच्छा है दोनों के लिये !"

फलीब्रोग प्याले को ओठों से लगाये, पीते-पीते रुक गया और भौंहों में बल पड़ गये। गुस्से से चिल्लाया—" मुझसे इस किस्म की बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ?"

नीता ने धीरे कहा, "क्यों जैसा तुम पूछते हो, वैसा ही मैं जवाब देता हूँ।"

"ओह, यह बात है ? ठीक है, लेकिन तुम शायद यह भूल रहे हो कि तुम्हें काम मेरे ही साथ करना है।"

"नहीं, मैं कुछ भी नहीं भूल रहा हूँ।"

"मैं नहीं..."

फलीब्रोग उछल कर घोड़े से उतरा और अपना चाबुक संभाल लिया। लेकिन लेपादतू ने अपनी जगह से उछल कर, अपने लबादे के भीतर से एक पीतल की बर्छी निकाली जिसकी मूँठ कुत्ते की हड्डी की थी।

लेपादतू बोला, "सुनो फलीब्रोग ! मैं अमनपसन्द आदमी हूँ। सिर्फ एक बात से जरा-सी मेहरबानी-नरमी से तुम मेरे साथ चाहे जो कर सकते हो। पर, मुझे गुस्सा मत दिलाओ, क्योंकि इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा...और यह बात तुम गाँठ बाँध लो कि मैं डरपोक

नहीं हूँ।"

फलीबोग अपना सिर झुकाये नीता की ओर घूर रहा था।

लेपादतू ने भी दृढ़ता से, बिना पलक गिराये उसे घूरा।

चचा नरताश अपनी पतली आवाज में बोले—"छोड़ो-छोड़ो—कैसे खूंखार हो तुम लोग! अभी मिलने की देर नहीं हुई कि कुत्ते बिल्ली की तरह लड़ने लगे।"

नीता ने अपनी कटारी खोली में वापस रखते हुए नरमी से कहा—"चचा नरताश, तुमने बिलकुल ठीक कहा। मुझे किसी से गिला नहीं और मैं हरेक का दोस्त बनने को तैयार रहता हूँ। मेरे दिल में जरा भी नफरत नहीं है।"

फलीबोग गुस्से से चिल्लाया, "तुम, मेरे दोस्त?" और फिर वह खिलखिलाकर हँस पड़ा उसके खराब दाँत चमकने लगे।

वह कहता गया—"ऐ नीता, तुम्हारी कटार बड़ी खूबसूरत है! ऐसे दोस्त के होते हुए, तुम सारी दुनिया में निडर विचर सकते हो। यहाँ आओ। मैं तुमसे दोस्ती करूँगा—पर यह बात साफ है कि तुम मेरी हुक्मउदूली नहीं करोगे। तुम अभी जवान हो और मैं-मेरे बाल तो सफेद हो चुके हैं।"

"ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही हो जायगा......"-फलीबोग द्वारा दिये जाने वाले प्याले को लेते हुए नीता लेपादतू ने कहा।

बौंदू फलीबोग अलाव के पास सरक आया। एक सिगरेट बनाई, जलाया और फिर उछल पड़ा।

अपनी भारी आवाज में उसने कहा,—"मैं भेड़िया घाटी तक एक चक्कर लगाकर फौरन आता हूँ। अपने चाबुक को फटकारा और सिगरेट का धुंआ उड़ाता बाहर चला गया। उन्होंने सफेद घोड़ी के भागने की आवाज सुनी—पहिले पास थी, फिर दूर—और दूर और इतनी दूर हो गई कि रात की खामोशी में छिप गई।

अलाव के पास बैठे लोग, कुछ देर शान्त बैठे रहे। चचा नश्तारा ने कुछ और लकड़ियाँ आग में डाल दीं थियोघी बर्बा ब्रान्डी की सुराही को रोशनी में ले आया। झोंपड़ियाँ पूरे तरह से अंधकार से आच्छादित थीं। अंधेरे में, सिर्फ ऊपर तारे टिमटिमा रहे थे। दिन भर चलने वाली हवा उस समय भी मवेशियों के बाड़े में धीमे-धीमे झुनझुना रही थी।

मिखालेच प्रेस्कूरी ने शान्ति भंग की—"जमींदार के यहाँ फलीबोग जैसा कोई मुन्शी पहिले नहीं था और न फिर कभी होगा। देखो न, हवा की तरह पूरी रियासत का चक्कर लगा देता है। जितनी रखवाली अब खेतों की होती है, वैसी पहिले कभी नहीं हुई।"

लेपादातू ने पूछा—"कहाँ का रहने वाला है?"

प्रेस्कूरी उसकी ओर मुड़ा, और बोला—"मुझे नहीं मालूम। कोई भी नहीं जानता....पर यह सब जानते हैं कि वह यहाँ कब आया... गर्मी का मौसम था। एक अजनबी भूसे के ढेर के पास सोया पड़ा मिला। हमें भी इसका फौरन पता पड़ गया। शाम को हम उसे अलाव पर ले गये और खाना भी खिलाया। उसने हमें बताया कि बड़ी दूर से भागा हुआ आया है और घुड़सवार पुलिस उसका पीछा कर रही है। लेकिन सचमुच वह कहाँ से आया, यह सिर्फ परमात्मा ही जानता है....हो सकता है कि वह कहीं से फरार होकर आया हो। जमींदार को भी पता चला कि कोई अजनबी आगया है। उसने तो उसे ज्वार में छिपे हुए भी देखा था, पर कुछ कहा नहीं। क्यों! कभी गुंडे तो इधर देखे नहीं। और अगर भगोड़ा है, तो अगर उसे यूंही न छोड़ दिया गया तो फस्ल में कहीं आग न लगा दे—ऊपर ही सवार न हो जाय। एक दिन जमींदार मवेशीखाना देखने आये और उस आदमी से मिले। एक दो मीठी बातें कीं और नौकर रख लिया। तब से फलीबोग हमारे साथ रह रहा है। और जमींदार को एक मेहनती अनथक मेहनती और दयाहीन नौकर मिल गया है।"

नीता लेपादतू बोला, "सचमुच ही यह जैसा निर्दयी है, वैसा ही मेहनती भी दिखता है।"

उन सबमें बूढ़े चचा इरीम्या इज्द्रेल ने आगन्तुक की ओर विचार पूर्ण दृष्टि से देखा—"लेकिन मेरे बेटे, तुम जहाँ पहले थे, वहाँ तुम्हें काफी सहन करना पड़ा है। जब मैं कोई आदमी देखता हूँ तो मैं उसके विचार पढ़ लेता हूँ और देखता हूँ कि क्या उसने काफी मुसीबतें उठाई हैं।"

नीता बोला—"कौन जाने उसने भी मुसीबतें उठाई हों। मुझे अपने माँ-बाप की याद नहीं। मैं अजनबियों में बड़ा हुआ, कुछ मुझे मारते थे और कुछ मेहरबान थे। मेरे लिए दुखी होते थे। इसी तरह मैंने अच्छे दिल वालों की इज्जत करना सीखा। लगता है जैसे भगवान् ने उन्हें खास भेंट दी है। मैंने हमेशा काम किया है, किसी न किसी का हमेशा नौकर रहा हूँ। और मैं सचाई से कह सकता हूँ कि मैं हमेशा ईमानदार और वफादार नौकर रहा हूँ। मैंने प्रत के किनारे, जिज्या के किनारे सैर की है और मैंने सुना है कि उसके पार दूसरे देश हैं, जिनमें बड़े गाँव हैं, बड़े कस्बे हैं और बहुतेरे आदमी हैं, लेकिन मैं उन्हें देखने नहीं गया। मैं इधर के हिस्सों को, जहाँ आदमी कम हैं, चाहता हूँ। और मैं दूर जा भी कैसे सकता था, मैं गरीब जो था। अपनी तरफ से मैं भरसक काम करता था, पर जमींदार एवज में मुझे बहुत नहीं देते थे। हो सकता है मैं अभागा होऊँ। मैं ऐसी झोंपड़ियों में रहा हूँ। जो कुछ उन्होंने मेरी थाली में रख दिया, वही खाया है। मैंने गधे से ज्यादा काम किया है और कभी किसी से झगड़ा नहीं किया। एक दिन मैंने सोचा—अब वक्त आ गया है कि मैं कुछ दुनियाँ घूमूँ। और आजकल मैं यहाँ रुका हुआ हूँ और मुझे ऐसा लगता है कि मैं और कहीं जाना भी नहीं चाहता।....बड़े शहर में मैं कर भी क्या सकता हूँ, वहाँ तो अनेकों आदमी होंगे। मुझे लगता है कि मवेशियों से ही मेरी पटरी

बैठेगी। इन्हीं के साथ मैं बड़ा हुआ हूं। और इन्हीं के साथ मेरी निभती है।...”

चचा हरीम्या इज्ड्रेल ने कहा—“ठीक है मेरे बच्चे, यह तो मैं देख ही रहा हूँ कि तुम पर क्या-क्या गुजरी है। फिर भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि शहरों की अजूबा बातें और तरह-तरह के आदमियों को न देखना अफसोस की बात है। मैंने कइयों से सुना है कि वहाँ आग उगलने वाली गाड़ियाँ चलती हैं। लोग वहाँ तीन और चार मंजिल के भी मकान बनाते हैं और वहाँ नगरों में रात दिन लोगों का ठट्ठ जमा रहता है, जैसे यहाँ सावनी के मेले के मौके पर होता है। पर मुझे इन सब को जानने की जरूरत भी क्या है। मैं तो बूढ़ा हो ही चुका हूँ सुनो नीता, हम जो सब यहाँ बरॉडी के बर्तन के आस पास इकट्ठा हुए हैं, उनमें तुम मैदानों से आये हो, मिखालेच पेस्कूरी प्रुत-पार से आया है, घियोर्घी बर्वा जब बच्चा ही था तब पहाड़ों से इन हिस्सों में आया, और हम सब लोग जो इस रियासत में रहते हैं और मेहनत करते हैं, हर कहीं से इकट्ठा हुए अजनबी यहाँ बस गये हैं।—क्योंकि यहाँ हमें कुछ ज्यादा जमीन और रहने के लिए कुछ ज्यादा जगह मिलगई है। मुझे ही लो, तुम देख रहे हो मैं बूढ़ा आदमी हूँ। कल या परसों...कौन जाने मैं चल बसूँ। भगवान की मर्जी थी, यहीं बस गया—क्योंकि उसकी लीला अपरम्पार है। और मेरे बच्चे, यह भी जान लो, मैं पहले यहूदी था, और एक दिन भगवान् ने मुझे सपना दिया और मैं ईसाई हो गया और महात्मा ईसा को क्रास पर चढ़ाने वालों से बिछुड़े मुझे सत्तर साल हो गये हैं। मैं मोल्दाविया का हूँ और मैं भगवान् की मर्जी से तुम लोगों के साथ धरती के इस कोने में रहता हूँ।”

चचा नस्ताश तेन्ती ने अपनी तीखी महीन आवाज में कहा, “भाई हरीम्या, अब मुझी को लो —कहाँ से आया मैं ? हुँ...आज शनीचर

की रात है। हम पी रहे हैं और बातें कर रहे हैं····कितने बरस हो गये इस तरह हमें हर शनीचर को मिलते ? अभी यह लड़का नीता जवान है, पर एक दिन यह भी हमारी ही तरह हो जाएगा और तब जब यह दूसरों के साथ पियेगा तो हमें—आज के बूढ़ों को याद किया करेगा। बस, ऐसे ही हम वक्त गुजार देते हैं—हमेशा अपने लोगों के बीच क्योंकि न हमारे यहाँ कोई पादरी है और न कोई गिरजा घर। हम अकेलेपन की जिन्दगी बसर करते हुए गरीब लोग हैं।····"

चियोर्घी बर्बा अपना भारी सिर हिला कर हँसने लगा —

"नौजवान, यह यहूदी जब से मुझे याद पड़ता है, यूंही बोलता-बकता रहा है और बूढ़ा नस्ताश तो बोलता क्या है मिमियाता है। कभी एक बात कभी दूसरी, पर होती हमेशा एक ही बात है। और एक बार जब बरांडी हमने पीली और बर्तन खाली हो गए तो हम जाकर, अपने बिस्तरों में सो जाते हैं। मैं पहाड़ों से आया हूँ, वहाँ जंगल है ? क्या तुम लोगों ने हमारे जैसे जंगल देखे हैं ? हमारे जमींदार की जमीन के दस गुने से भी ज्यादा—दसगुना भी हमारे जंगलों का मुकाबला क्या करेगा ? ओह कितना बड़ा है जंगल-सुन्दर हरे रौआँदार पेड़ों का जंगल। और उनके बीच से गुजरने वाली हवा के झोंकों की गरज—ओह उन्हें सुन कर बस यहाँ की सर्द हवा की गरज मालूम होती है। कैसी नई और दूसरी दुनियाँ है वहाँ। कौन जाने मैं एक दिन वहीं वापस लौट जाऊँ ?···न जाने कितनी बार मैं यह कह चुका हूँ और मैं मालिक के चरवाहे की ही उम्र का हूँ पर आज तक अपनी जवानी के दिनों में रहने वाले इलाके में नहीं जा सका हूँ। मैं वहाँ जाना चाहता हूँ चाहे वहाँ जाकर मर ही क्यों न जाऊँ, सिर्फ मरने भर के लिए भी मैं वहाँ जा सकता हूँ।"

अलाव के और पास इन लोगों की बातें नीता लेपादतू बड़ी देर तक सुनता रहा। बीच-बीच में ब्रांडी का प्याला लेने और पीने की

बारी उसकी भी आ जाती थी और वह उस तरल ज्वाला के कुछ घूंट भर लिया करता था। जैसे वह पीता गया; धीरे-धीरे उस पर एक मदिर-खुमार छाता गया और उसमें एक गहरी कोमलता, सहृदयता की भावना बढ़ती गई—बढ़ती गई। थोड़ी देर में बोलने की आवाजें धीमी पड़ती गईं, बहुत ही धीमी और अन्त में मवेशियों के बाड़े की सरकंडों से गुजरने वाली हवा की धीमी-धीमी फुसफुसाहट से घुल मिल गईं।

दूसरे ही दिन, रविवार को, नीता लेपाद्तू ने जमींदार के मवेशियों में अपना काम चालू कर दिया। सांदू फलीवोग उसे विभिन्न बाड़ों में ले गया और अपनी भद्दी-कडुवी आवाज में उसे जो कुछ काम करना था, उसके बारे में हिदायत दीं।

"मेरे बच्चे, ये हैं मवेशी जिनकी हम देख भाल करते हैं। इस बाड़े में दुधारी गायें हैं और उधर दूध न देने वाली, उससे आगे बछियाँ। देख ही रहे हो, सब मवेशी ढंग से बँटे हुए हैं। तुम दुधारी गउओं के जिम्मेदार होगे। तुम उन्हें बढ़िया से बढ़िया जगह में चराने के लिए ले जाओगे—उन चरागाहों के पास, जहाँ घास अभी भी हरी है। वहाँ, जहाँ अभी भी ज्वार की कुछ खूँटियाँ शेष रह गई हैं।"

"बहुत अच्छा, हम दोनों चलेंगे, मुझे चल कर वह जगह और दिखा देना।"

"हमही चलेंगे, हालांकि यह सभी चपरकनाती उन जगहों को जानते हैं।"

फिर उसने उन चपरकनातियों को सम्बोधित करते हुए कहा,—"ओ, छोकरो, देखो मैं तुम्हारे लिए किसे लाया हूँ! तुम इसका हुक्म मानोगे और हुकुमअदूली की तो फिर कान मले जायँगे। चलो, सब चलें।" और वह चिल्लाया।

छोकरों ने बाड़ों के कुन्डे खोले और मवेशी एक के बाद दूसरा

भीतर से बाहर निकलने लगा। उनमें कोई छोटा था, कोई बादामी, कोई लाल और सफेद, कोई पतला, कोई मोटा। छोकरे सीटियाँ बजाते, आवाजें कसते, चाबुक फटकारते और मवेशियों को तालाब की तरफ खदेड़ते हुए चारों ओर दौड़ने लगे।

फौरन चारों ओर काली धूल की लहरे उठने लगीं और फैल गईं।

फलीओग बोला, "फिलहाल, तुम इस छोटे सुन्दर भूरे घोड़े को लो। तुम्हें एक बेत मिलेगी, रस्सी का एक बन्डल और काठी के सहारे लटकता एक चाबुक। इन लड़कों की अच्छी खबर रखना ताकि मालिक की दौलत कहीं बरबाद न हो जाय।..."

वे दोनों अपने घोड़ों पर सवार होकर झुंड के पीछे-पीछे चलने लगे। फलीबोग ने उसे सब हिदायतें और सलाह अपनी कर्कश आवाज में दीं। कुछ देर बाद भौंहें तरेरते हुए उसने नौजवान से कहा,—"नीता, कल रात तुम बस बच ही गये..."

"क्यों?"

"बस, यह मत पूछो। मैं अपनी हुकुमअदूली बरदाश्त नहीं कर सकता।..."

"मैंने तुम्हारी कोई हुकुम अदूली नहीं की। तुम्हीं ने मुझसे अजीब बर्ताव किया था।"

"मैंने तुमसे अजीब बर्ताव किया?" फलीबोग नीता की आँखों में अपनी आँखें तरेरते हुए चिल्लाया।

फिर मुन्शी ने धीमे और बैठे गले से कहा,—"सुनो नौजवान, मैं तुम्हें कुछ अच्छी नसीहत करना चाहता हूँ। तुम्हें मुझसे अच्छा बर्ताव करना चाहिए। जानते हो कैसे? सुन्दर सफेद गिलास की मानिन्द!"

तेजी से फलीबोग ने अपनी सफेद घोड़ी मोड़ी।

और चिल्लाया,—"और मवेशियों की तरफ ध्यान रखना!

अलविदा !"

उसने अपना चाबुक फटकारा और बड़ी तेजी से चल कर धूल के मोटे बादलों में छिप गया।

सड़क तालाब की ओर जाती थी। मवेशियों का झुन्ड धीरे-धीरे उतर रहा था आगे की कुछ गायों के गले में बँधी घंटियाँ टुनटुना रही थीं। ताँबे के रंग जैसे बादलों के बीच से सूरज झाँक रहा था। तभी हवा में लाल-सी रोशनी छितरी-सी लगी। और फिर मद्धिम सी रोशनी पहाड़ियों और घाटियों में उमड़ने लगी। जमींदार का घर और झोंपड़ियाँ पीछे छूट गईं। झील भी, जिसकी सतह पर बत्तखें अठखेलियाँ कर रहीं थीं, पीछे निकल गई। कुछ देर बाद घंटियों की आवाज भी कानों से ओझल हो गई। मवेशी ठहर गये; उन्होंने अपनी गर्दनें फैलायीं और उस हरियाली भरी घाटी की भीगी-भीगी घास शान्ति पूर्वक चरने लगे।

अपने भूरे छोटे घोड़े पर बैठा नीता लेपादतू झुंड के चारों ओर घूमा। और जब छोकरों के पास से गुजरा तो उन्होंने उस पर गुस्से भरी निगाहें फेंकी। कभी, जब कोई गाय झुंड से इधर-उधर भटक जाती तो आवाजें उठतीं, उस ताजी सवेरे की हवा में,—"हुई-हुई चलो। इधर चलो !"

लेकिन हर प्रकार की आवाजें तेजी से खत्म हो जातीं और हरेक चीज को शांति ढक लेती। कभी-कदा एक छोटी घंटी बज उठती और गायें ताजा घास चरती धीमे-धीमे आगे बढ़ जातीं।

कभी कोई चिड़िया घाटी पर फैले आस्मान को फलाँगती उड़ जाती और अपने पीछे तीखी आवाज की सिर्फ एक लकीर सी खेंच जाती। कहाँ से आई वह ? क्यों उस वीराने में यह उड़ रही है ?

लेपादतू घोड़े से कूद पड़ा और उसे एक ठूंठ से बाँध दिया। फिर उसने उन छोकरों से बातों में उलझने की कोशिश की। उसने हर गाय का नाम पूछा, उसकी आदतें पूछीं और छोकरे उसे एक से दूसरी

के पास ले गये––उसके हरेक सवाल का जवाब भी देते गये। कुछ देर बाद उसने छोकरों से नाम धाम पूछा, उनके मां बाप के बारे में पूछा। कुछेक के मां-बाप झोंपड़ियों में ही रहते थे, और कुछ गरीब व अनाथ थे, जो रोटी के टुकड़े की तलाश में किसी दूर गाँव से इस ओर भटक आये थे।

नीता लेपादतू ने उनसे नरमी से सवालात पूछे और उनकी बातें सुनीं और उनकी बातों के सहारे से उसने भी उस नए मुल्क के बारे में सोचा जिधर कि वह आ भटका था–और आने वाले दिनों में छिपी अपनी जिंदगी के बारे में भी उसका ख्याल दौड़ा।

(३)

अनावृष्टि के मौसम में परिवर्तन लाकर नवम्बर जा चुका था। नीता और उसके मवेशियों ने रियासत के दूर-दूर हिस्सों के कोनों-कोनों की छान-बीन कर मारी थी। अब वह रास्तों, झरनों, चरागाहों और झीलों से पूरी तरह परिचित हो गया था। लोगों के नाम, जानवरों के नाम और फलीबोग का गुस्से में बहकना और जमींदार की रुचि को भी भली भाँति समझ गया था। कभी-कभी वह घाटी में स्थित छोटे कारखाने में, जई का आटा लेने जाता था और शाम को अपने छोकरों और झोंपड़ी निवासी कुछ लोगों की मदद से एक किस्म की माल्टा (जौ की शराब) बनाता था जो वह गायों के जाड़े के थोड़े से खाने में मिला देता था।

इसे छोड़कर, उस समय की जिंदगी साधारण थी।

पर नीता को अच्छी तरह मालुम था कि शीघ्र ही जाड़े की बरसात होगी और फिर कुहरा पड़ेगा और तब शीत—भयानक बर्फीले तूफान। तब जिंदगी कठिन हो जायगी—हर किस्म के मौसम में मवेशियों के साथ बाहर फिरना या बाड़ों में रहना या छप्परदार छतों के नीचे रहना।

अपने मवेशियों के झुंड के साथ आते-जाते वह लोगों को अपनी झोंपड़ियों में काम करते देखता—कभी छेद बन्द कर रहे हैं, तो कभी सड़ी-गली छत सुधार रहे हैं।

जमींदार कभी उन्हें चैन न लेने देता था। चौबीसों घंटे हुक्म चलाता रहता—कभी यह करो, कभी वह करो।

जहाँ तक नीता पता लगा सका उसे यही पता चला कि यह नौजवान मालिक रियासत का पूरा काम खुद ही चलाता है। बड़े तड़के उठकर, इधर उधर घूमना और रात घिरे तक जरा भी आराम न करना—बस एक छोटी सी गाड़ी में बैठा, जिसे दो छोटे घोड़े खींचते, वह पहाड़ियों

पर चढ़ता, ढलानों पर उतरता, हल जोतों का मुआयना करता, फिर भेड़ों के बाड़े में जा धमकता और फिर घुड़साल में—खलिहानों में। न जाने कितने सवाल पूछता। किसी के कसूर पर उसे धमकाता, नाराज होता और फिर खामोश हो जाता—और जितनी जल्दी आया था उतनी ही जल्दी अपनी छोटी गाड़ी में बैठकर चला जाता। उसके चेहरे और चमकीली आँखों पर कोई भी पढ़ सकता था कि वह कितनी मेहनत और अटूट तमन्ना के साथ अपनी शक्ति के अनुसार काम करके धन बटोरना चाहता है।

नीता सोचता—"कितना ठीक कहा था चचा नश्ताश ने : उसे इतनी जमीन और इतने धन का क्या करना है; क्यों चाहिए उसे यह सब ?"

शान्त नवम्बर के शनिवार की एक दोपहर नीता लेपादतू ने बूढ़े की झोपड़ी जाकर उससे मिलना तय किया। जिस दिन से वह यहाँ आया था, उस दिन के बाद से वह उसके घर नहीं जा सका था—सच तो यह था कि उसे एक मिनट की भी फुर्सत नहीं मिली थी।

बूढ़ा पछोरने वालों के छप्पर में था। सफेद कुत्ता बहुत शिद्दत से भौंकने लगा और नीता के पैरों में लिपटने के लिए बेताब हो उठा। चचा नश्ताश फौरन् हाथ में लकड़ी और होठों पर गालियाँ लिए बाहर निकल आये।

"राम करे तू मर जाय ! कोल्तुन ! चल नीचे भाग यहाँ से।" और कुत्ता सिर नीचे किये गुर्राता हुआ छप्पर के पीछे की ओर चला गया।

नौजवान अब उस बूढ़े के पास तक पहुँच गया। बूढ़ा उसे पास से पहिचान कर मुस्कराया और बोला—"ओफ्फोह ! तुम ! एक महीना हो गया होगा, कम से कम जब तुम पहिली मर्तबा यहाँ आये थे। क्या हाल चाल है नीता ?"

नीता ने अपनी चमकीली लाठी नीचे रखते हुए और अपने सिर पर पड़े लबादे को ठीक करते हुए कहा—"अच्छा है !"

"फलीबोग से कैसी निभ रही है ?"

"खूब बढ़िया !......"

बूढ़ा हँसने लगा।

"हुँः हुँः हा हा हा ! ठीक है ठीक है ! मैं खूब समझता हूँ। वह तुम्हें अपने इशारों पर नचाना चाहता था। हुँः कोई फिक्र की बात नहीं। काम प्यारा होता सबको ।...सभी से पाला पड़ता रहता है जिन्दगी में।"

नीता चारों ओर देखकर बोला, "मैं काम से काम रखता हूँ और और हमारी निभे जा रही है। लेकिन तुम चचा, तुम अभी भी यह अनाज पछोर रहे हो ? नदी की तरह बढ़ता ही जा रहा है यह तो; खात्मे का नाम ही नहीं लेता ?"

बूढ़े ने गर्व से कहा,—"हमारी जमीन ही ऐसीहै। इस साल बहुत अच्छा रहा। हम काफी गाड़ियाँ लाद चुके हैं और पता नहीं कितनी और लादेंगें। न जाने जमींदार को कितनी रकम मिली है ? काफी मुनाफा होगा, बहुत काफी। मैं पूछना चाहता था मालिक से एक दिन, पर सूखा के कारण, उनका चित्त ठिकाने नहीं था। इसलिए मैंने नहीं पूछा।"

नीता बोला—"हलवाहे के लिए सूखा बुरी चीज है।"

"अरे ! बेटे ! सूखा तो सबके लिए खराब होता है। लेकिन किया क्या जाय इसके लिए ? मैंने तो जमींदार से भी यही कहा—मैंने कहा मिस्टर जार्ज, हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते। यह तो सब ईश्वर की माया है। जब वह चाहेगा, तभी बारिश होगी।..."

"उन्होंने क्या जवाब दिया ? क्या वह हँसे ?"

"नहीं वह हँसे नहीं।...उन्होंने सिर हिलाया और फिर अपनी कोठी में चिन्तित से चले गये। यही होता है। भले ही वह जमींदार हों, पर वह निश्चिन्त होने का बहाना तो नहीं कर सकते ! खैर...

चलो झोंपड़ी में चलें ।....” बूढे ने कहा और उसे सिर हिलाकर घर चलने की दावत दी ।

खलिहानों के बीच से रास्ता बनाकर वह चलने लगे । जमीन मक्का और चरी के ढेरों से ढकी हुई थी । जैसे-जैसे यह आगे बढ़े हवा का शोर बढ़ा और पछोरने की फड़फड़ाहट मद्धिम होती गई । नीता ने देखा और महसूस किया कि मार्घियोलीता का सिर झोंपड़ी के दरवाजे में एक पल के लिए झलका ।

जब वह पास पहुँचे तो बूढ़ा चिल्लाया—“ओ, छोटी मोटी !” और चचा नशतश ने किंचित हास्य प्रदर्शित किया । “ओ, मारघियो लीता, तुझे सुनाई नहीं देता क्या ? जा, जाकर ताजा पानी ला ! शक्कर तो होगी ही घर में; है न ? देखो, वह प्यासा छोकरा था न, वह वापस आया है !”

और जब वह बाँये हाथ में बाल्टी और सीधे हाथ में प्याला लेकर झोंपड़ी से बाहर तेजी निकली से, तो लेपादतू हँसा ।

“न तो मैं थका हूँ और नहीं उतना प्यासा हूं, जितना उस दिन था....”और फिर उसकी आँखों में आँखें डालकर बोला, “क्या हाल चाल है ?”

मार्घियोलीता ने उत्तर दिया, “तुम्हारे विचार से हाल-चाल कैसा होना चाहिए ? हमेशा अकेली और हमेशा काम !”

बूढ़ा बीच में ही बोला, “अरे यह जमींदारजी के घर भी तो गई थी । वहाँ नन ने इसे लेस बनाना सिखा दिया । उसने कुछ गुड़ भी इसे दिया । मार्घियोलीता, दे न, इसे भी तो गुड़ और कुछ पानी, जैसे जमींदार लोग करते हैं.......”

लज्जित-सी हँसी के साथ नवयुवती ने अपने ब्लाउज से कागज की एक मुड़ी-तुड़ी पुड़िया निकाल कर, सावधानी से उसे खोलकर गुड़ की कई डलियाँ चुनी । कुछ उसने नीता को दीं कुछ अपने पिता को दीं

और फिर उनके बीच पानी की बाल्टी और पीने के लिए वर्तन रख दिया।

छोकरा झोंपड़ी के सामने बैठ गया और बूढ़ा मकई की कड़ब की बनी चटाई के ऊपर लेट गया। माघियोलीता खड़ीथी और नीता ने गुड़ खाते-खाते गौर किया कि वह सफेद ब्लाउज पहिने थी, जिसकी बाहों और कालर पर फीता लगा था, बाल उसके सँवारे हुए थे और चमक रहे थे। उसकी छोटी चोटियाँ ताज की तरह उसके सिर के चारों ओर लिपटी थीं। उसे लगा जैसे पहिले दिन से वह आज कुछ बड़ी हो गई है और उसकी कमर में लगी लाल पट्टी उसे सम्हाले हुए है।

उसने गर्मी के सूरज में तपे उसके चेहरे की ओर देखा, माघियोलीता ने उसकी नजरों से बचना चाहा और अपनी कंजी खूबसूरत आँखें कहीं और जमा दीं।

अपना वर्तन भरते हुए नीता ने कहा—"गुड़ में तुलसी की खुशबू आ रही है..."

लड़की मंद मुस्कराई। उसकी आँखें सिमट आईं और उनमें चमक छिटक आई।

चचा तेन्ता ने कहा, "अरे, क्या है? इन छोकरियों को हर किस्म की जड़ी बूटी अपने सीने में छिपाकर रखने की आदत है।"

"लेकिन पिताजी, तुलसी जड़ी बूटी नहीं होती!" माघियोलीता ने तुरन्त उत्तर दिया।

उसने वर्तन और बाल्टी उठाई और तेजी से झोंपड़ी में चली गई कुछ देर दोनों ने उसकी यहाँ-से-वहाँ चलने-फिरने और चीजों की उठा-धरी की आहटें सुनीं। और वह सूरज की मद्धिम किरणों में बैठे-बैठे अपनी बातें करते रहे। लेकिन जब माघियोलीता को बूढ़े की तीखी महीन-सी आवाज सुनाई नहीं दी, तो वह बाहर आकर लीता से कुछ दूरी पर

बैठ गई, कुछ लज्जा और संकोच से जैसा कि अक्सर नवयुवतियों की आदत होती है। चचा तेन्ता उठकर छोटे सुअरों की कुछ देखभाल को चले गए थे जो अपने बाड़ों में चीख रहे थे। जब नीता ने देखा कि वह काफी दूर निकल गए हैं तो वह मार्घियोलीता की तरफ मैत्री पूर्ण मुस्कान बिखेर कर बोला, "कल मैंने खलियानों की ओर आने की सोची—और सौभाग्यवश आज मौसम बहुत सुहावना है।'

मार्घियोलीता ने उत्तर दिया, 'हाँ, भला शीतकाल है! मैंने कुछ फूल लगाये थे जो अब खिलने वाले हैं।"

"कहाँ से मिल जाते हैं फूल तुम्हें? आसपास में तो कहीं अधिक दिखलाई नहीं पड़ते···"

"इस साल गर्मी में जमींदार जी के घर की जो कर्त्ताधर्त्ता हैं न, उन्होंने मुझे दो जड़ें दी थीं। उनके पास कुछ हैं। उन्होंने मुझे पौध लगाना भी सिखाया कि झाड़ी के पास कैसे लगाया जाय, जहाँ कि गोबर की शैया पर उन्हें घनी सूरज की रोशनी मिलेगी। वह बड़े हो गये हैं और आज खूबसूरत हैं। जल्द ही उनमें फूल लगेंगे···"

एक क्षण के लिए उनकी आँखें मिलीं और वे मुस्कराये।

नीता बोला, "जहाँ से मैं आया हूँ, वहाँ फूल नहीं होते। वहाँ नीचे जो चक्की वाला है न, उसने मुझे बताया कि दूसरी जगहों पर फूलों से लदे पौदे और फूलों से गुलजार बड़े-बड़े बागीचे हैं। वह जर्मन है और सारी दुनियाँ घूम चुका है। न जाने कितनी बातें जानता है वह! एक बार उसने मुझसे कहा कि यह कई बड़े शहरों में गया, इतने बड़े शहर कि पूरे दो दिनों में भी उनके आरपार न पहुँचा जा सके। उसने मिलों की बाबत भी बताया, जिनमें आग से चलने वाली मोटरें लगी हैं, जैसे कि हमारे जमींदार की पछोरने की मशीन है—बहुत बड़ी मिलें—पूरे देश की फसल को पीस डालने की ताकत रखने वाली। उसने रेलगाड़ियों के बारे में भी बताया····"

"ये क्या होती हैं ?" माधियोलीता ने अचरज में भर कर पूछा ।

"मैं नहीं जानता, पर मैंने लोगों को यह कहने सुना है कि वह एक किस्म की गाड़ी होती हैं, जो मशीन से चलती हैं, चाहे बारिश या बर्फ़ पड़ रही हो यह बहुत तेजी से चलती है । अभी एक क्षण पहिले यहाँ और दूसरे ही पल न जाने कहां, ओझल ।"

"कैसा अचरज हैं !" लीता भुनभुनाई, "बिलकुल परियों कीकहानी की तरह······यहाँ तो वैसी कोई भी चीज नहीं है ।"

"चक्की वाले के पास घड़ी भी है ।" नीता ने बात जोड़ी ।

पर माधियोलीता बीच में ही बोल पड़ी, "हमारे जमींदारजी के भी पास है । घर की मालकिन ने मुझे दिखलाई थी····"

"मैं भी दुनियाँ घूमना चाहता हूँ और ये सब चीजें देखना चाहता हूँ", नीता ने मुस्कराते हुए कहा ।

माधियोलीता विचार-निमग्न थी कुछ बोली नहीं ।

शरद की वह दोपहर बहुत शान्त थी और मानो कि दीर्घ शान्ति दूर-दूर तक फैले भू-खण्ड को और उदास बना रही थी ।

सब प्रकार का शोर गुल खामोश था । पड़ोस की झाड़ियों में लम्बे मकड़ी के जाले चमक रहे थे । कभी-कभी मन्द समीरण उसके लम्बे चंदीले ताने-बाने को झुला देता था और ठहरी हुई वायु में घूम-घूम जाते थे । नीता और नवयुवती अकेले रह गये थे, झोंपड़ी के दरवाजे के सामने एक दूसरे के पास बैठे हुए । उन्होंने बात-चीत बन्द कर दी पर कोई रहस्यमयता उन्हें एक दूसरे के पास खींचे ला रही थी । अचानक घूरे की पास की एक छोटी झाड़ी से नेवला निकला । आरक्त दिन की किरणों में भयाकुल वह ठहरा, और फिर अपनी छोटी-छोटी काली आंखों से चारों ओर देखने लगा । उसके रोंये इतने सफेद थे कि शुद्धतम बर्फ की मद्धिम नीलाभ जैसे लग रहे थे । वह शीघ्र ही बर्फ़ की तरह विलुप्त हो गया । दोनों नौजवान और नवयुवती एक दूसरे

की ओर मुड़े और मुस्कराये—दोनों की मुस्कान एक-सी ही नरम थी ।

सूरज ढलने पर, अपने दिल में प्रेम की खिलती कली को अपने लेकर नीता लेपादातू अपने मवेशियों के पास चला गया । उसने उनकी नाँदे देखीं, छोकरों की मदद से ग्वार और भूसा उनको दिया और स्त्रियाँ गायों को दुहने के लिए अपनी बाल्टियाँ ले आईं । झोंपड़ियों में लोग बत्तियां और आग जला रहे थे । तब शाँति छागई, धीरे-धीरे । ऊपर गहरा नीला आकाश चँदोवे की तरह तना था, जिस में बड़ी-बड़ी सोने की कीलें जड़ी हुई थीं ।

अपनी भेड़ की खाल की जाकट पहिने, नीता लेपादतू पीठ के बल अपने मवेशियों के पास भूसे के एक ढेर पर पड़ा हुआ था । वह आस्मान की तरफ देख रहा था । उसने सितारे गिने और धीमे-धीमे बड़ों के नाम गुनगुनाये कि उन्हें उसने बड़े-बड़े आदमियों के बीच सुना था, जिनके साथ उनका बचपन बीता था । पहिले उसने खास बात के बारे में नहीं सोचा । उसे अपने अकेलेपन में मजा न आया । फिर कुछ ही क्षणों बाद, उसे अपने पास, अँधेरे में मार्घियोलीता की आँखें चमकती दिखाई दीं । उसने पलकें बन्द करलीं और ऐसा लगा जैसे स्वप्नों में वह उसके पास आ गई है । तब उसे समझ आई कि वह उसे चाहता है और उसे फिर देखने की इच्छा करता है ।

उसने फिर अपनी जलती हुई आंखें खोलीं और आस्मान की गहराई देखी और उसमें जगमग करने वाले तारों को देखा और चारों ओर देखता रहा और सुनता रहा । मवेशियों के अपनी नांदों के पास चारा चबाने की आवाज के सिवा और कुछ भी सुनाई नहीं दिया । जमींदार का घर और झोंपड़ियाँ खामोशी में डूबी हुई थीं ।

नीता खड़ा हो गया और बकसुआ लगी बेल्ट को कसा । पीतल की मूठवाली सोंटी लबादे के भीतर छिपाई, भेड़ की खाल वाली जाकेट

को कँधों पर डाला और खलिहनों की ओर चल दिया ।

मवेशियों के नांदों के पास जहाँ बूढ़े लोग रहते थे, उनकी झोंप-
ड़ियों से अधिक दूरी पर नहीं, एक अलाव जल रही थी। वह इसी
ओर बढ़ा, और जब वह कुछ कदम रह गया तो उसने फलीब्रोग की
कर्कश आवाज और चचा नस्ताश की मिमियाती-सी महीन आवाज
साफ-साफ सुनी। उसने जरा भी झिझक महसूस नहीं की और फौरन
पहाड़ी के ऊपरी ओर चल दिया। जब तक उसे नाज के ढेर अंधेरे में न
दिखाई देने लगे वह धीमा नहीं पड़ा। वह उसके पास से बड़ी साव-
धानी से दरवाजे पर पहुँचने के लिए घूमा ! पर बड़े सफेद कुत्ते को
उसकी आहट लग गई और वह भयंकरता से भौंकने लगा। वह
उसकी ओर कूदा और इस तेजी से झपटा मानो उसे पछाड़ देना
चाहता हो।

"कोल्तुन....ओ कोल्तुन !" नवयुवक ने कुछ प्यार भरे लहजे में
उसे पुकारा ।

परन्तु उस पशु को शान्त करने की कोशिश व्यर्थ थी। अपने को
अपनी सोंटी से यथासंभव बचाते हुए वह कदम-कदम झोंपड़ी की
ओर बढ़ा ।

पछोरने वाली मड़ैया से किसी की मोटी उनींदी आवाज आई
"कौन है ?"

उसी समय मार्घियोलीता की स्पष्ट आवाज कुत्ते को पुकार
रही थी। कोल्तुन का भौंकना फौरन रुक गया, पछोरने वाली मड़ैया
में शान्ति छा गई और नीता चुपके-चुपके तेजी-से झोंपड़ी की ओर
बढ़ा ।

"क्या तुम हो ?" लड़की ने पूछा ।

नीता ने उत्तर नहीं दिया। उसके पास जाकर सामने रुक गया,
और उसके हाथ पकड़ लिए ।

"मैं फौरन समझ गई थी कि कौन हो सकता है?" लड़की ने फिर कहा। "क्यों आये हो तुम ?"

"मैंने सोचा....मैंने सोचा, चलो तुम्हें देख आऊँ"—नीता ने हकलाती-सी आवाज से कहा।

मार्घियोलीता की कमर में हाथ लिपटा, पर उसने कुछ नहीं कहा। नीता ने उसे अपने सीने से लगाते समय यह महसूस किया कि उसकी छाती में तुलसी की गंध आ रही है।

अचानक उसने धीमे स्वर में कहा—"नहीं, दिन में आना, तब हम लोग बातें करेंगे। अब चले जाओ....पिताजी वापस आ रहे होंगे।"

नीता ने यह नहीं सोचा था कि वह उसकी बाहों में से इतनी आसानी से निकल जायगी। उसने तभी जाना जब वह निकल चुकी थी। उसने झोंपड़ी के दरवाजे बन्द होने की और सांकल चढ़ाने की आवाज सुनी। और कुत्ता पहिले से भी अधिक क्रोध में भौंकने लगा।

मड़ैया से फिर एक उनींदी आवाज चीखी—"कौन है !"

नीता जिस रास्ते से आया था, उसी से नीचे लौट पड़ा।

सोचा—"लड़की क्या डायन है। उसे सब मालूम है कि रात को कैसे बोलना बरतना चाहिए....मुझे यकीन है कि दरवाजा बन्द करते समय मुझे उसकी हँसी सुनाई दी थी।....सबसे पहिले मेरी समझ में कुत्ते से दोस्ती करनी चाहिए...और रही वह, सो ऐसा जान पड़ता है कि वह मुझे नापसन्द नहीं करती। उसे मालूम था न, कि मैं जल्द ही लौट कर आऊँगा..."

वह धीमे-धीमे अपने आप ही बतिया रहा था और नाँदों के पास पहुँचते-पहुँचते उसके मुँह पर मुस्कराहट आ गई।

उसने उल्लसित होकर सोचा—यह प्रेम है, यही प्रेम है और उसका रोम-रोम अनिर्वचनीय तन्तुओं से झंकृत हो उठा।

बिना यह जाने की वह क्या रहा है, वह मवेशियों के पास अपनी

जगह, घास के ढेर पर पहुँच गया। उसने फिर तारों की ओर ताका और गर्म माथे पर धीमे धीमे तिर रही रात की सर्द हवा को भी बिल्कुल महसूस न किया।

कुछ दिनों बाद तीखी की बारिश हुई, पहिले ठहर ठहर कर और फिर लगातार बारिश और कुहरे की घनी परतों की नाईं शरदकालीन वर्षा आगई। क्षितिज पर हर दिशा में ऊँची-ऊँची भूरी दीवालें उठ खड़ी हुई थीं, शीत, और निरन्तर बूंदें बादलों की नीची छतों से गिररही थीं, इमारतें भीग गई थीं, मवेशियों के बाड़े चुचुआते थे और उनकी नाँदे सूनी पड़ी थीं। अच्छी धरती अपनी साँसों में पानी को सोख लेती थी, फिर उसे उगल देती थी, जिस कारण बाड़ा और सड़कों पर आदमी और मवेशी कीचड़ में लदर-पदर चलते थे। पूरे एक हफ्ते तक झोंपड़ियों में रहने वाले मवेशियों के लिए बचाव के बाड़े बनाने में मेहनत करते रहे। फिर नांदों में खाना भी देने लगे। वहाँ मवेशी सुस्त से, सिर नीचा किये, उन छाये हुए छप्परों की छतों के नीचे एक दूसरे की ओर ताकते सहमे से खड़े थे। वह अपने भूसे में मुँह डाले रहते थे। सर्द भाप सभी चीजों को अपने दामन में छिपाये थी।

कोई भी अपनी झोंपड़ी नहीं छोड़ता था। सभी मुख्यतः निरन्तर जलने वाले अलाव के पास बैठे अपने भीगे चिथड़ों को सुखाने की कोशिश करते रहते थे। कभी-कभी वह टाट के टुकड़ों को सिर पर रखे, फटी-फटाई भेड़ की खाल की जूतियों को पहिने बाहर निकलते, कीचड़ में गिरते पड़ते, और फिर जितनी जल्दी मुम्किन होता अपनी झोंपड़ियों में घुस जाते।

इस मौसम में फलीयोग हमेशा से अधिक चुस्त था। सफेद घोड़ी पर, सिर और कंधे को लबादे से ढके वह हर जगह मौजूद होता। और लोगों को काम पर जाने के लिए बलपूर्वक मजबूर करता। जमींदार को

ऐसे मौसम से सख्त चिढ़ थी—अपने घर में उसे कोई काम न था। नाज और गरमी में मोटे किये सुअरों को बेच ही चुका था। पूरे साल का हिसाब बन कर तैयार था। इसलिए, एक खुशनुमा दिन वह, नन और अपनी गृह-परिचारिका को विदा कहकर, फलीबोग और नौकरों को छोड़कर अपनी गाड़ी मँगा आनन्द की जिंदगी बिताने के लिए निकल गया। उसके जाने के बाद आस्मान से तगड़ी बारिश हुई। और फलीबोग ने पानी से डूबे खेतों को देखकर सन्तोष की साँस लेकर कहा; "हमारे मालिक भाग्यवान हैं। सच, बहुत भाग्यवान!"

मालिक की गैर हाजिरी में रियासत के रोजमर्रा के काम में कोई तब्दीली नहीं हुई। खलिहान और मड़ैया खाना और कपड़ा और जो भी नौकरों को चाहिये था, उससे भरे पड़े थे...और फलीबोग नमकहलाल और चौक्कना नौकर—वह शिकारी कुत्ते की मानिन्द खूंखार था।

बरसात के भीगे, उदास और अकेले दिनों में नीता लेपादत् को अपने प्यार के बुखार को सहेजने का कम मौका मिला। वह दूसरी बार खलिहानों की ओर गया। झोंपड़ी कीचड़ में लदी-फंदी थी और उसका एक छोटा कमरा उदास और ठंडा था।

मार्घियोलीता उसकी ओर मुस्कराई पर खिड़की के शीशों को भेद कर पड़ने वाली रोशनी उसके चेहरे पर भूरी परछाई फेंक रही थी। पहिले तो वह बुड्ढे से और उससे बात करता रहा पर कुछ समय बाद, साँझ पड़ने पर तीनों खामोश होगये—किसी को भी किसी से कुछ कहना बाकी न रह गया। गोधूलि की उदासी झोंपड़ी पर छा गई, और बारिश धीमे-धीमे मिट्टी की सपाट छत पर पड़ती रही—।

लेपादत् अपने दिल में बसन्त के आगमन का अरमान छिपाये झोंपड़ी से बाहर आया। देहली से कुछ दूर तक मार्घियोलीता

की आँखो ने उसका पीछा किया।

उसने अपनी रोंयेदार टोपी पर लबादा रक्खा और सँभाल-सँभाल कर कदम रखता हुआ चल पड़ा। अपने विचारों में डूबा, वह खलिहानों से मवेशियों के बाड़ों की ओर धीरे-धीरे उतरा।

तभी उसे शरद का वह दिन याद आया; जब उसने पहिली बार यह महसूस किया था कि वह प्यार करने लगा है। भारी दुःख उमड़ आया और उसका दिल अतृप्ति की गहरी भावनाओं में डूब गया। ओह, सच, सर्दी गरीबों के लिये, जो नेवले की तरह जमीन के नीचे रहते हैं, कितनी भयानक होती है।

ज्योंही वह बाड़े के पास पहुँचा, उसने देखा कि उस बारिश में फलीबोग अपनी घोड़ी की पीठ पर बैठा उसका इन्तजार कर रहा था।

लबादा अपनी आँखो पर खींचते हुई नीता अपने आप ही बुड़-बुड़ाया— "इस वक्त यह क्या चाहता है ?"

वह उसके पास से गुजर जाना चाहता था, पर फलीबोग ने उसे रोक कर अपनी कर्कश और बैठी हुई आवाज से कहा "इतनी जल्दी नहीं बरखुरदार, इतनी जल्दी नहीं। कहाँ से आ रहे हो भला ?"

नीता को घोड़ी की थूथन अपनी कोहनी के पास जान पड़ी। अपने भूरे रंग के मुँढासे वाले लबादे को पहिने फलीबोग जल्दी से नीचे उतरा और नौजवान के पास आ गया।

और उसकी बाँह पकड़ कर तीखे से पूछा—"कहाँ गये थे ?"

नीता ने झुंझला कर जवाब दिया, "छोड़ दो मुझे अकेला ! क्या चाहते हो तुम ? क्या तुम समझते हो और कोई काम है ही नहीं मुझे ?

"पर तुम मवेशियो को अकेला छोड़ कर क्यों गये ?"

"अगर मैं उन्हें छोड़कर गया भी, तो जाने से पहिले उन्हें ठीक-ठीक कर गया था।"

"बरखुरदार, काफी अरसे से मैं तुमसे खार खाये था। देखो आज

तुम मुझे ऐसे मौके पर मिले हो जब मैं आनन्दमग्न हूँ ..."

"चचा सॉंदू, मुझे मालूम है कि तुम शुरू से ही मेरे खिलाफ हो...पर मैं उसके लिए कुछ नहीं कर सकता...मैं अपना काम करता हूँ और तुम अपना काम करो......"

नीता ने दृढ़ता पूर्वक कहा था। वह बाड़ों में चला जाना जाहता था पर फलीबोग ने सामने आकर उसकी बाँह पकड़ कर वह उसे जहाँ पर खड़ा था उस ओर मुड़ने पर मजबूर किया।

और तीखी आवाज से बोला—"ठहरो भी एक मिनट। जल्दी क्या है?"

फुर्ती से नीता ने अपने हाथ को छुड़ा लिया।

फिर रोष से बोला—"चचा सॉंदू, तुम क्या चाहते हो?"

फलीबोग की आँखें मानो माथे से निकली पड़ रही थीं; वह चिल्लाया, "सुनो, मैं यहां मालिक हूँ, तुम्हें मुझसे सोच समझकर बोलना चाहिये। क्या तुम बता सकते हो कि बारिश इतनी क्यों है कि मैं इससे परेशान हो उठा हूँ? और इतनी कीचड़ कि आदमी डूब जाय? और क्यों हैं मुझे इतनी चिन्ताएँ कि मुझे फुर्सत नहीं यह सोचने की भी कि किधर मुड़ूँ। मैं अपना गुस्सा उतारना चाहता हूँ किसी पर, मैं किसी के सिर पर अपना कोड़ा फटकारना चाहता हूँ और मैंने तुम्हें मारने का तय किया है, समझे नीता लेपादतू!"

फलीबोग हँस रहा था। नीता की भौंहें सिकुड़ीं और अपने मुँडासे को कंधे पर फेंक कर वह दो कदम पीछे हट गया।

फलीबोग रेंका—"क्यों तुम खुश नहीं हो इससे? एक मिनट ठहरो, मैं तुम्हें अपने कोड़े से प्यार करना सिखादूंगा···"

उसने अपनी घोड़ी की रास छोड़ दी, दो कदम पीछे हटा और अपने काले कोड़े का ढीला छोर हिलाया।

और फिर गरजा,—"अगर तुमने मेरा सामना किया तो मैं मुर्गी के

बच्चे की तरह तुम्हें दो हिस्सों में बाँट दूंगा।...मैंने भी जवानी में कुछ अच्छे काम किये हैं। मैं चाहता हूँ तुम भी दूसरों की तरह मुझसे डरो...काँपो जब कभी फलीबोग का नाम सुनो!"

नीता आश्चर्य से चिल्लाया, "पर चचा साँदू, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

फलीबोग ने अपना चाबुक फटकारा, पर लेपादतू तेजी से स्प्रिङ्ग की नाईं उपर उछला, उसका सीधा हाथ जकड़ा और पीठ पीछे लेजाकर मोड़ दिया।

वह उसका बाँया हाथ, जिससे कि वह छूटने की कोशिश कर रहा था, थामे था; फिर उसे भी उसने दायें से मिलाकर चाबुक से साँदू के दोनों हाथ बाँध दिये। तब गुस्से से हाँफते हुए उसने उसे जमीन पर दे मारा और उसके ऊपर धम्म से बैठकर अपना पीतल का सोटा निकाल लिया।

फलीबोग जोर-जोर से सांस ले रहा था और उसकी आँखें भयानकता से इधर-उधर घूम रही थीं—गुस्से और घृणा में वह गालियाँ बक रहा था और उसके मुंह से बराँडी की बदबू आ रही थी।

नीता ने उसके ऊपर झुकते हुए, अधखुली आँखों से पूछा—"क्या चाहते हो तुम?"

उसके चमकदार पीतल के सोटे पर वर्षा की बूँदें चमकने लगीं।

सहसा फलीबोग डर से गुर्राया,—"नीता, मेरे बच्चे, मुझे जान से मत मार।"

लेपादतू कूद कर खड़ा हो गया। सोटी पीठ पीछे अपनी पेटी में खोंस ली और उसके भावों में नरमाई आ गई, उसने फलीबोग को उठकर खड़ा होने में मदद दी।

और शीघ्र ही बोला,—"चचा साँदू, मैं तुम्हें जान से नहीं मारना चाहता, मुझे तुमसे कुछ शिकायत नहीं। मैं यह अच्छा समझता हूँ कि यहाँ से काम छोड़कर कहीं और चला जाऊँ, क्योंकि तुमसे रोज-रोज

झगड़ा हो और न जाने मैं क्या कर गुजरूँ ? यह लो अपना चाबुक और मुँडासा भी। सिर ढक लो, पानी बरस रहा है। घोड़ी पर चढ़ कर अपने घर जाओ। और अब तुम यहाँ कभी मेरी सूरत न देखोगे।"

फलीबोग के चेहरे पर अनुराग के कुछ भाव आये और उसके मुंह से निकल पड़ा,—"क्या कह रहे हो तुम ? तुमने मुझे क्यों नहीं मार डाला अपनी छुरी से ? मैं तो समझा तुम्हारे पास वह है ही नहीं···मैंने सोचा था कि तुम नश्ताश की बेटी से मिलने जाने के पहिले उसे घर पर छोड़ गये होगे।"

"चचा सॉँदू मुझे अकेला छोड़ दो। मेरा दिल तुम्हारे जैसा नहीं है····"

उसने अपना मुंडासा आँखों के ऊपर खींचा और थोड़ी देर रुका—तय नहीं कर पाया कि वह बाड़ों की ओर जाय या सड़क पकड़ ले किसी नई अनिश्चित दिशा के लिए···

फलीबोग ने उसकी ओर स्थिरता से देखा, मानो वह किसी शब्द या इशारे की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने फिर नीता को बाहों से पकड़ लिया और उसे घूमने पर मजबूर करने लगा।

उसने और भी भर्राई आवाज में कहा,—"सुनो नीता, मत जाओ यहाँ से···मैं चाहता हूँ कि हम दोनों में सुलह रहे····"

नीता ने उसे देखा, एक हल्की सी मुस्कराहट ओठों पर खेल गई।

फलीबोग चिल्लाया, "क्यों हँस रहे हो तुम ? तुम्हें मेरा यकीन नहीं ! मैं अपनी जवानी में बड़ा जालिम था····पता नहीं तुम्हारे खिलाफ मुझमें क्या भावना थी···इसीलिए मैंने तुम्हें नाराज कर दिया, चिढ़ा दिया। पर ऐसा मालूम होता है कि तुम्हें अपनी ही तकलीफें बहुत हैं····इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम दोनों सुलह कर लें···"

नीता ने झुंझला कर कहा,—"छोड़ो भी इन बातों को।" और वह जाने के लिए मुड़ा।

फलीबोग चिल्लाया—"मुझे गुस्सा मत दिला, छोकरे! मैं चाहता हूँ सुलह हो जाय और इस खुशी में पीने का दौर चले।"

नीता का सीधा हाथ मजबूती से पकड़े वह उसे घसीटने की कोशिश करने लगा।

"मेरे साथ आओ।"

लेपादतू शान्ति पूर्वक उसके साथ चलदिया। बारिश अभी थमी नहीं थी—घुमड़-उमड़ कर जारी थी और गोधूलि को अपनी धुंध में डुबा रही थी।

किसी ने भी न देखा न सुना कि उन दो आदमियों के बीच क्या हुआ?

झोंपड़ों के निवासी अपनी खोहों में घुस गये थे। यहाँ-वहाँ आग की मद्धिम-सी किरणें, फैले हुए अन्धकार की छाती को चीर कर, चमक जाती थीं।

फलीबोग और नीता खिसकी हुई धरती पर धीरे-धीरे चलरहे थे।

सिर नीचा किये घोड़ी भी उनके पीछे-पीछे चल रही थी।

वे लोग खाली मवेशियों के बाड़े के पास और एक झोंपड़ी के नजदीक पहुँचे, जहाँ कि इन गंदीले घरों में रहने वाले बूढ़े शनिवार की शाम को, अक्सर इकट्ठे हुआ करते थे। यह भी शनिवारी साँझ थी, झोंपड़ों के भीतर रोशनी थी और काफी गर्मी भी। चरवाहा, घियोर्घी, बरबा, इर्मिया इज्रेल और मिखालेच प्रेस्कूरी अपना रात का भोजन समाप्त कर रहे थे। दो लड़के चूल्हे के पास अपने कपड़े सुखा रहे थे, जिसमें कि कड़ब जल रही थी।

फलीबोग ने एक ठोकर से दरवाजा खोला, और झोंपड़ी के भीतर घुस गया। नीता लेपादतू उसके पीछे-पीछे था।

उसने एक दुबले-पतले लड़के से भर्राई आवाज में कहा—"ए ग्रेक्रूसर, मेरी घोड़ी बाहर खड़ी है, उसे जाकर घर छोड़ आओ। और देखो

जना से यह कह देना कि वह एक मटका शराब लेकर यहाँ आजाय। बस, जल्दी करो। इधर-उधर मत रम जाना....."

प्रेकूसर अपनी जगह से छाया की तरह उठा और बाहर चला गया।

फिर अपने बुरे दाँत चमकाते हुए, फलीबोग टूटी-सी आवाज में बोला—"बोलो तुम्हारा क्या ख्याल है, मैं इस नौजवान की दावत करना चाहता हूँ....."

उसने नीता की पीठ थपथपाई।

"हममें कुछ कहा-सुनी हो गई थी," वह कहता गया—"पर अब सुलह हो गई है। है न लेपादतू ?"

नीता ने कुछ नहीं कहा।

तो फलीबोग गुस्से में चिल्लाया—"नहीं बोलोगे तुम कुछ भी ? तुम मुझे अभी तक जान नहीं पाये हो....नहीं जानते मैं कितना ज़ालिम हूँ · मैं कटखने कुत्ते की तरह हूँ बिल्कुल....बस यह जान लो मैं सीधे को नहीं काटता। नीता वहाँ बेंच पर बैठ जाओ, आग के पास और सिर से मुँडासा उतार दो !"

मुंशी सोंदू ने लेपादतू का सफेद लबादा खींचा, अपना भी भूरा लबादा उतारा और नौजवान को जबर्दस्ती बेंच पर बिठा दिया और खुद चूल्हे के पास पड़ी एक नीची तिपाई पर बैठ गया।

फिर हँसी में उससे पूछना शुरू किया—"चचा इज़्द्रेल, क्या नया समाचार है ? मैं तो इस बारिश से तंग आ गया हूँ, भगवान् बचाये इससे। ऐसा लगता है जैसे घने कुहरे में फँस गया हूँ और यहाँ दम घुट रहा है। यहाँ झोंपड़ी में तो अच्छा लगता है। आज की शाम तो मैं कुछ पीना चाहता हूँ।"

चचा इज़्द्रेल ने भी मुस्करा कर जवाब दिया—"बारिश तो भगवान् भेजता है, हम इसके लिए क्या कर सकते हैं। और रही तुम्हारी पीने की बात, सो तुम्हारे चाहने पर तुम्हें क्या नहीं मिलता ?"

"ठीक-ठीक, मैं अभी अपने को खूब मस्त करूँगा, पर मैं इस नौजवान को कुछ जगाना चाहता हूं । नीता, तुम कुछ बोलो भाई !"

"मैं क्या बोलूँ ? मैं तुम लोगों की बात-चीत सुन रहा हूं…"

"अच्छा, पर लगता ऐसा है जैसे तुम्हें कुछ सन्देह हो रहा है… खैर कोई बात नहीं !"

उसने घुर्रा कर साँस ली, मानो उसकी छाती पर बोझ रखा हो, और फिर अपने चारों ओर देखा ।

"चचा बरबा, अपनी बाँसुरी निकालो और उसे कुछ भिगो लो । क्योंकि तुम जानते हो तभी तुम मेरे लिए कोई धुन बजा सकते हो…"

बरबा ने मोटी आवाज में, जिस कोने में वह बैठा था वहीं से कहा—"क्यों नहीं, बड़ी खुशी से ।"

और फिर कुछ देर के लिए सब शान्त हो गये ।

फलीबोग मिट्टी के फ़र्श की पड़ताल कर रहा हो, ऐसा लग रहा था । अचानक उसने अपना सिर उठाया और अपनी चमकीली आँखें दरवाजे पर गड़ा दीं ।

"आगई जना !" उसने शक्तिशाली आवाज़ में पूछा ।

दरवाजा खुला और एक चौड़ी व मजबूत गहरे रंग के चेहरे और घनी भौहों वाली स्त्री ने प्रवेश किया । उसने बारिश से बचने के लिए जो बोरी ऊपर डाल रखी थी, उसे उतारा और वहाँ इकट्ठा लोगों को देखा और हँसी, फिर कूल्हों पर कलाइयाँ रख कर फलीबोग की ओर मुड़ी ।

"क्या बात है जो ऐसे चीख चिल्ला रहे हो ?" वह मर्दानी आवाज में बोली—"मैं यह खड़ी हूँ और अपने साथ मटका भी लाई हूँ …."

गेकूसर भीतर मटका लिये आया और फलीबोग झटपट मिट्टी के

प्यालों में शराब उँडेलने लगा और दूसरों को भी अपने आप लेने की दावत देने लगा।

फिर खुशी में कहा—"अरसा हुआ कि हमने यहाँ शराब देखी है। यह काफी पुरानी शराब है। मैंने सवेनी के एक यहूदी से ली थी। देखो, मैं अपना प्याला उठाकर जना के लिए पी रहा हूं, क्योंकि हम बहुत पुराने चाहने वाले हैं, एक दूसरे के। यह मेरे साथ सारी दुनियाँ घूमी है....और मैं नीता लेपादतू की तन्दुरुस्ती के लिए पी रहा हूं, ताकि वह मेरा दिल अच्छी तरह पहिचान सके....चलो चचा बरबा, बांसुरी तैयार है न?"

उसने एक ही घूँट में अपना प्याला खाली करके जना के हाथों में थमा दिया।

दूसरे लोगों ने भी जाम छलकाये। लेपादतू ने भी पी। फलीबोग उसे तीखी नजरों से देखता रहा और बरबा एक पहाड़ी धुन बजाने लगा।

धुन समाप्त करते हुए उसने कहा—"पहाड़ी प्रदेशों, में बाँसुरी की धुन कुछ और ही-सी लगती है। यहाँ मुरली बजाओ तो ऐसा लगता है कि घाटियाँ और दर्रे जवाब में धुन बजा रहे हैं..."

मुँशी साँदू चिल्लाया—"बरबा तुम क्या कह रहे हो? जना से पूछो, वह बतायगी कि उसका इस बारे में क्या ख्याल है....कभी-कभी जब हम पहाड़ों में आवारों की तरह फिरा करते थे।"

"हाँ, हमने काफी दुनियाँ घूमी है," जना ने, सपना देख रही हो मानो, ऐसे उत्तर दिया और आग की-सी-मीठी गरमी के पास सरक आई।

"यह सच है"—फलीबोग कहता गया, "जब कभी मैं सोचता हूँ कि हमने घोड़े की पीठ पर किन-किन जंगलों और मैदानों की खाक छानी है; तो...कैसा खतरनाक काम कर रहे थे हम लोग उस समय..."

मुँशी मुस्कराया, मानो स्मृतियों के उभार में उसे रस आगया हो।

एक बार फिर जाम भरे गये और सभीने पी। चूल्हे में चमकने वाली लपटों की रोशनी में फलीबोग की आँखें वहशी की नाईं दमदमा रही थीं। हाथ में जाम और खड़ा होकर वह अपनी भद्दी आवाज में गाने लगा —

सुनो जना, जना, जना इधर आओ,
आओ, और आकर मेरा बिस्तर बिछा दो।
वहाँ, जहाँ तीन या चार सड़कें मिलती हैं,
तहखाने के पास, दलदल के ऊपर।
जहाँ टोंटी के खुलने की आवाज आयगी,
और सुन्दर लाल शराब बहेगी·······।

"याद है न तुम्हें नजारे" उसने कहा। उसका चेहरा अजीब तरह से दमदमा रहा था। "यह जब मैंने तुम्हें अपने साथ सारी दुनियाँ घूमने के लिए कहा था, तब यही गीत तो गाया था,····और जना, तुमने कैसे-कैसे मुझे तड़पाया ! मेरा दिल तुम्हारे प्यार और मायूसी में कितना कज्जल-काला था···और वह इली रागजों, जो वह गीत गाया करता था, जो मैंने तुम्हारे लिए बनाया था—मैं तुम्हारी तरफ निहारता था और तुम न जाने किस ओर देखती थीं—

वह कमनीय सुन्दरी जिसे मैं प्यार करता था,
अपने पूरे हृदय की कोमलता से और सचाई से···
अपने दुख के बोझ को डुबाने के लिए
बस पीना जी भरके पीना ही सबसे अच्छी बात थी···
और मैंने एक दिन पी, दो दिन पी।
और चालीस दिन पीता ही रहा·········

....

और मैं अपने सुन्दर भूरे घोड़े को बेच कर पी गया,
बिना सुन्दर शराब का सही स्वाद जाने·········

फ़लीबोग की आँखें अपनी पत्नी पर जमी थीं। उसकी आवाज कर्कश थी। वह शब्दों को घसीट रहा था, मानो गाना उसके वश की बात न हो।

उसने शराब का एक और मग बड़ी हौंस से डकारा और फिर नीता लेपादतू की ओर मुड़ा।

"ओह, नीता मेरे दोस्त! देख रहे हो इस औरत को तुम? जब मैं जवान था तो इसी के साथ मिल कर चोरी करता था। काश कि तुम जान पाते हमने कितनी नदियाँ पार कीं, किन जंगलों में घूमे और किन वीरानों में भटके...अब तो मैं उन सबको भूल गया हूँ। हम द्रोग्रोग्या में, बन में और प्रुत से भी दूर गये हैं....पहाड़ों पर चढ़े हैं, घाटियों में उतरे हैं, किसे मालूम हमने कितने घोड़े चुराये और उनकी अच्छी नस्लें तैयार कीं। एक बार मैं सजा भी काट चुका हूँ, पर मैं भाग निकला। और जना हमेशा मेरी तलाश में रहती थी; फिर खोज भी लेती थी और अब, अब तो मैं ईमानदार और वफादार नौकर हो गया हूं। लेकिन तुम्हें अब भी नहीं मालूम कि मैं हूं कौन? कभी-कभी मेरे दिल में हुड़क उठती है और फिर मैं कहीं चलदेना चाहता हूं। तब मैं जना की ओर देखता हूं और पीता हूं....और जना की आँखें मुझ से कहती हैं—'आओ!' मेरी हड्डियाँ शरीर में भारी होने लगती हैं और फुसफुसाती हैं 'यहीं ठहरो!"

> सोचने का कोई अवसर नहीं,
> आह, जानने का भी अवसर नहीं।
> कभी कहीं अन्त है
> मेरी इस तड़पती इच्छा का?

"बरबा कुछ और धुन बजाओ....मेरा दिल भारी हो रहा है और मुझे लग रहा है जैसे जना की आँखें फिर कह रही हैं 'आओ!"

स्त्री मुस्कराई और अलाव की रोशनी में और भी चमक उठी। उसके चेहरे पर सुन्दरता के चिन्ह अब भी थे और आँखों में थीं उन्माद

की परछाइयाँ। उसने अपने पति की ओर ताका और सम्पूर्ण भूतकाल मानो उसकी स्मृति में उमड़ आया--मूर्खताओं और अमानवीय भावावेगों का भूतकाल !

बरबा की बाँसुरी एकबार फिर झोंपड़ी में गूंज उठी, लेकिन उसमें एक वेदना थी : मानो प्रुत के पूरे फैले मैदान वहाँ बिखर गये हैं और हेमन्त की नीलाभ चारों ओर छितर रही है और अनन्त का वह आकर्षक गीत हर दिशा में छितरा रहा है।

जना ने अपनी बाँह से एक आँसू पोंछा और फिर उसकी गहरी आँखें शराब की ओर से कहीं दूरी की ओर ताकने लगीं। फिर सहसा वह हँस पड़ी।

कुछ ही क्षणों बाद फलीबोग ने भारी आवाज में कहा—"नीता, मेरे साथ एक और मग पियो....तुम मजबूत आदमी हो....तुम शायद उन हिस्सों में रहे हो जहाँ गिरजे हैं, पादरी हैं। तुम्हारा दिल भिन्न है...तुम जानते हो दया और मित्र-भाव किसे कहते हैं....मैं तो इस बारे में कोरा हूँ।"

काफी देर हो गई थी, जब वह झोंपड़ी की गरमाहट छोड़ कर शीत भरी रात में बाहर निकले। बूढ़े अपने सोने की तैयारी में लग गये। सिर्फ वियोर्घ बरबा ने अपना लबादा लपेटते हुए यह निश्चय किया कि वह जमींदार के बैलों और उनके रखवार छोकरों पर एक बार नजर तो डालले।

नोता लेयादतू और फलीबोग साथ-साथ चलरहे थे, जना उनके आगे।

कारिन्दा बोला—"जना, घर जाओ और जाकर सो जाओ। मैं घोड़ी लेकर चक्कर लगाने जाऊँगा....देर नहीं लगेगी।"

स्त्री अन्धेरे में लुप्त होगई। फलीबोग अपनी घोड़ी ले आया। फिर बोला—"नीता, मेरे बच्चे, तुम जाकर अपना घोड़ा लेआओ और मेरे साथ चलो।"

वह नीचे गायों के बाड़े में गये और नीता अपना घोड़ा ले आया। फिर वह उसी बरसात में, शीतल और हृदयहीन बरसात में, जो अभी तक थमी नहीं थी, साथ-साथ चल पड़े।

काफी दूर तक वे दोनों एक दूसरे के बराबर-बराबर चलते रहे।

नीता उन जगहों को पहिचान भी नहीं पारहा था, जहाँ से वे गुजर रहे थे। लेकिन कारिन्दा अपने घोड़े को रास्ता बताने में वैसे ही था जैसे कोई और दिन के चाँदने में करे; कोई भी तो गलती उससे नहीं हो रही थी।

कुछ देर बाद वह बोला—"आज रात मैंने कुछ ज्यादा पीली···पर फिर भी रियासत का चप्पा-चप्पा याद है।···"

उन्होंने सब बाड़ों को देखा-भाला। फिर वह तालाब के किनारे गये, चक्की के पास से गुजरे, भेडों के बाड़ों में गये, फिर रियासत की उत्तरी सीमा के पास पहुंचे। जब वह इक्का-दुक्का झोंपड़ियों के करीब से निकले तो वे कुत्ते गुर्राये जो पानी में लेट रहे थे। इसके सिवा खेत नंगे और वीरान थे। सिर्फ दो आदमी एक काली दीवाल में धँसे चले जा रहे थे जो जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहे थे, वैसे-वैसे दूर होती चली जा रही थी।

लौटते समय फलीबोग बुड़बुड़ाया—"यही ठीक मौसम है, मैं इसे खूब जानता हूँ, दो या तीन आदमी आएँ और बढ़िया मवेशियों को हाँक ले जायँ, अगर उनकी रखवाली ढंग से न की जाय।"

खलिहानों और ओसारों को वापस लौटते हुए, उसने भद्दी आवाज में पुकारा, पहरेदार ने ऊँघता-सा जवाब दिया।

कुत्ते अपने मालिकों की ही तरह ऊँघते से एक दो बार भौंके। उसके बाद रात की गहरी होती परछाइयों ने उन्हें डस लिया।

काफी देर बाद वह जमींदार के घर के आगे आकर खड़े हुए।

फलीबोग फुसफुसाया—"नन भी सो गई है—मालिक के घर में

अकेली है···हिसाब-किताब रखने वाला बूढ़ा है, इसलिए कानों पर टोपा चढ़ाकर जल्दी ही सो जाता है।····अगर रियासत में आग लगजाय या बाढ़ आजाय, तो इन्हें तो पता भी न चले। जमींदार न जाने कहाँ और कितनी दूरी पर ऐश उड़ा रहे हैं—क्या मालूम विदेश में हों। और यहाँ फलीबोग जैसा चोर उनकी सम्पत्ति की रक्षा कर रहा है। नीता, देखो कैसी-कैसी अजीव चीजें होती रहती हैं इस दुनियाँ में।···· पर···छोड़ो···अच्छा फिर मिलेंगे, जाओ और आराम करो जाकर।"

लेपादतू ने अपना घोड़ा रोका।

"चचा साँदू, एक पल रुको।" वह बोला

"क्या बात है?"

"चचा साँवू, जो कुछ हुआ उसके लिए मुझे माफ कर दो।"

"सुनो नीता"—फलीबोग ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम सचमुच नेक आदमी हो—फरिश्ता! जाओ सोओ जाकर और उन खलिहानों में रहने वाली उस लड़की के सपने देखो···"

कारिन्दा अन्धकार में अन्तर्धान हो गया। लेपादतू घोड़े से उतरा और उसे अस्तबल की ओर पैदल लेचला। फिर उसने मवेशियों के पास ही अपना बिस्तर लगाया। सोटी निकालकर सिर के नीचे रख ली और अपने को भेड़ की खाल से ढक लिया। और पड़े-पड़े सोचने लगा: फलीबोग के वचनों और व्यवहार पर कुछ शंकित हुआ और बड़ी देर तक सोने से पहिले इसी उधेड़बुन में लगा रहा। कुछ देर बाद उसका ध्यान चचा नश्ताश की पुत्री की ओर चला गया। वह उसे बहुत दूर दिखलाई पड़ी: अस्थिर पानी पर काँपती-सी, शीत कालीन कुहरे में छिपी और आने वाले शीतकाल की हवाओं में लिपटी-सी।

नींद आने से पहिले उसने अंधकार को चीरकर आनेवाली, कई अजनबी चिड़ियों की शोक भरी आवाजें सुनीं।

●

(४)

सप्ताह के अन्त में बरसात कम होगई थी, पर मौसम भीगा ही रहा। क्षितिज पर भारी-भारी कुहरा छाया रहता था। सूरज के कभी दर्शन नहीं होते थे, जान पड़ता था किसी दूसरी दुनियाँ को रोशनी देने किसी दूसरे आकाश में चला गया था। ज़मींदार के घर के आसपास, उन झोंपड़ियों में रहने वाले लोग घोड़ों पर चढ़कर मवेशियों को पानी पिलाने लाते थे।

खलिहानों और मड़ैया में नौकर-चाकर बड़ी मुसीबत से आते-जाते थे, उनके कपड़े हवा की नमी से भीग जाते थे। सिर्फ फलीबोग का गुलगपाड़ा हर कोने में गूंजता रहता था। और उसकी सफ़ेद घोड़ी कीचड़ भरी गलियों और पटरियों पर फुदकती रहती थी।

नीता लेपाद्तू ने एक पूरा दिन कपड़े बनाने वाली मड़ैया में बिताया क्योंकि उसे अपने लिए तथा अपने नीचे काम करने वाले लड़कों के लिए इजेला से सुअर की खाल की जूतियाँ लेनी थीं और भेड़ की खालों की जाकटों की मरम्मत करवानी थी। जूतियां और जाकटें एक दूसरे के ऊपर छत तक लदी हुई थीं और उनमें से चमड़े की अजीब गंध आरही थी। दोनों आदमी सूखे फर्श पर खड़े थे और चौड़े खुले किवाड़ के पार दूर पर फैले भूरे वातायन को देख रहे थे।

इजेला, जो बूढ़ा और गेहुएँ रंग का खानाबदोश था, जिसके सफेद मूछें और दाढ़ी थी, पालथी मारे बैठा था और धीरे-धीरे बात कर रहा था, जब कि उसकी सुई एक भेड़ की खाल के किनारे पर चल रही थी

वह बोला—"मेरे बच्चे, अपने नौजवान मालिक के पिता योर्दाश मालिक के जमाने में मैं एक गुलाम था। उन दिनों हम और नीचे

मोल्दोवा के किनारे बसे हुए थे और दूसरी रियासत में काम करते थे। तब गुलामों के लिए अलग मुंशी होते थे जो हमें कोड़े मार-मार कर-तब तक काम करवाते थे जब तक कि हमारे हाथ-पाँव हिलने-डुलने से इन्कार ही नहीं करदेते थे......

नीता ने कहा—"मैंने सुना है कि उस इलाके में बहुतेरे गाँव हैं और काफी पास-पास हैं।"

"हाँ, वहाँ नीचे सब कुछ भिन्न है। हर आदमी का अपना-अपना घर होता है और एक बगीचा भी। पुराने जमाने में यहाँ ताता-रियों का राज था—ऐसा वह चक्की वाला अन्तोन है न, कहता है..."

"क्या हमारे जमींदार का बाप बहुत अमीर था?" नीता ने पूछा।

उसने अपने काम से सिर हटाकर उसकी ओर देखकर हामी भरी।

"बहुत अमीर! जमीन, मवेशी, सैंकड़ों नौकर चाकर और घर तो उनके तुम देख ही चुके हो...एग्रामेनी में बड़ा और खूबसूरत... पुराने मालिक के पाँच बेटे थे और चार बेटियाँ। उन्होंने हर एक के दहेज में एक रियासत दे दी। ओफ, कैसी खूबी से पहिले मालिक रियासतों का इन्तजाम करते थे...वह भारी शरीर के थे; भरी-भरी मूछें...सब उनसे डरते थे। मदाम प्रोफीरा भी थर-थर काँपती थी, जब कभी पुराने मालिक को गुस्सा आता था। योर्दाश मालिक ने एग्रा-मेनी में निकुलाई नामक एक अल्बानी कारिन्दा के तौर पर रखा हुआ था। वह बहुत ही मेहनती था पर स्वभाव का खराब था; अपने फलीबोग से मिलता जुलता ही समझो! यह अल्बानी निकुलाई भी अपनी जवानी में लुटेरा था। उसे कठिन मशक्ती कैद भी मिल चुकी थी। जमींदार ने उसे छुड़वाकर अपनी रियासत में रख लिया, जिससे कि लोग उससे हमेशा डरते रहें। क्योंकि, तुम जानो, नौकर तो उन दिनों भी सुस्ती दिखलाते ही थे...।"

वह खुले दरवाजे के पार देख रहा था, मानो कुहरे के भीतर से

अपनी पुरानी स्मृतियाँ काम से बुला रहा हो और लेपान्तू एक तेज़ चाकू से अपनी चप्पलों के लिए पट्टी काट रहा था।

इज़ेला ने आगे बताना शुरू किया—"जमींदार के आखिरी बेटे यह हमारे मालिक, जार्ज हैं; मैंने इन्हें गोदी में खिलाया है, कहानियाँ सुनाई हैं, घोड़े पर चढ़ना सिखाया है...पर तब मैं भी जवान था। अब वह बड़े हो गये हैं और मैं सिर्फ एक बूढ़ा इन्सान रह गया हूँ। पर वह मुझे भूले नहीं हैं और अब भी मेरी पूछ-ताछ करते रहते हैं। बस, यह अफ़सोस है कि वह इस रेगिस्तान में अपनी जवानी बर्बाद कर रहे हैं। वह नौजवान हैं और नौजवानी के खास तकाजे होते हैं, अधिकार होते हैं····यहाँ हम अकेले में रहते हैं—दुनियाँ से अलग-अलग। अपने लिए मुझे खूब मालूम है कि मैं कल या परसों, सदियों पुराने फर बेचने वालों या खानाबदोशों से जाकर मिल जाऊँगा; पर वह जमींदार हैं और फिर जवान····उन्हें कुछ और भी चाहिए···उन्हें दूसरी तरह की जिंदगी चाहिए; वही उन्हें फबेगी····।"

बाहर, दरवाजे के पास पैरों की हल्की आहट और स्त्रियों की आवाजें सुनाई दे रही थीं।

इज़ेला ने, मानो अपनी इच्छा के प्रतिकूल, कुछ क्रुद्ध-सा होकर पूछा, "कौन है?"

दोनों ने एक ही प्रकार की भावभंगिमा के साथ देखा।

अपने कपड़ों की गर्द झाड़कर नन और तेन्त की बेटी माथियोलीता ने मड़ैया में प्रवेश किया। उनके पीछे अन्तोन भारी कदमों से, मुंह में पाइप दबाये और अपनी पुरानी गन्दी टोपी ओढ़े घुसा। उसकी बड़ी दाढ़ी, मुट्ठी भर लाल और सफेद धागे मानो मिल गये हों, ऐसी लग रही थी।

इजेला बुदबुदाया—"उफ, लो, खासी महफिल जुट गई···।"

नन ने फौरन सिर हिलाया—"दिन मुबारक, कैसी गुजर रही है?"

इजेला अपनी दाढ़ी में ही भुनभुनाया—"मैं आपके हाथ चूमता हूँ।"

अब नीता बोला—"देख ही रही हैं आप, हम लोग जाड़ों के लिए तैयारी कर रहे हैं।"

वह मुस्कराया और फिर उसने माघियोलीता की ओर देखा। अन्तोन ने अपना पाइप मुंह के एक कोने से निकाल कर दूसरे में दबाया और फिर भेड़ों की खाल के ढेर पर बैठ गया। वह अपने आप ही कुछ बुड़बुड़ा रहा था।

इजेला ने हँसते हुए और उसकी ओर सिर हिलाते हुए कहा—

"गूट वोर्गा, गूट वोर्गा; अर्थात् दिन मुबारक।"

जर्मन भी मुस्कराया और पाइप मुँह से निकाल लिया। वह रूमानियन भाषा मुश्किल से बोल पाता था।

"इजेला, क्या कर रहे हो तुम?"

"क्या ख्याल है तुम्हारा; मैं क्या कर रहा हूँ मिस्टर अन्तोन? मैं खालें सी रहा हूँ।"

"अच्छा, बोत अच्छा!" अन्तोन ने दाद देते हुए कहा और फिर पाइप होठों में दबा लिया।

नन बीच में अपनी तिरछी आवाज में बोली—"चचा इजेला, यहाँ तो लोमड़ी की कई फरें होंगी, जो मिस्टर अन्तोन लाये थे···।"

अन्तोन ने हामी भरी—"जोरूर, जोरूर!"

इजेला ने उत्तर दिया—"हाँ हैं तो और मैंने उनकी कायदे के मुताबिक देख भाल की है—क्या आप खूबसूरत कोट बनवाना चाहती हैं?"

अन्तोन भेड़ों की खाल के ढेर पर बैठे-बैठे ही भुनभुनाया—"हमने लोमड़ी को मारा था।"

इजेला ने फौरन ही कहा—"ठीक है, तुमने लोमड़ियों को मारा और मैंने फरों को कमाया!"

"अच्छा, अच्छा!" अन्तोन, अपना पाइप सँभालते हुए बोला।

चचा इजेला ने वह कोट जिसे वह सिल रहे थे, एक ओर रख दिया और कुछ उकताते-से उठ खड़े हुए। फिर वह मढ़ैया के एक कोने में जाकर अंधेरे में जोर से उठा-पटक खोज-खखोल करने लगे और फिर लोमड़ियों की फरें ले आये। रोशनी में लाकर उन्होंने फरों को नन के सामने फैला दिया। गोधूलि भरी साँझ की रोशनी में उनका बादामी और चंदीला रंग निखर उठा।

इजेला ने धीमे स्वर में कहा—"वह अच्छे पशु थे।"

नन ने सिर हिलाते हुए कहा—"तुम इन्हें कोठी पर लाओ।" और एक उलटी रखी बाल्टी पर बैठ गई। मार्घियोलीता उसके पास खड़ी थी। उसका भूरा शाल कंधों पर पड़ा था और बाल काले रूमाल से ढके हुए थे।

अन्तोन कुछ सोच रहा था। अचानक, मानो उसका पाइप बोल रहा हो, वह भर्राया—"मेरा खेयाल है अगर मालिक शादी करलें तो खूब रहेगा।"

"क्या, शादी ?" इजेला ने आश्चर्य में भरकर पूछा।

नन हँसी से खिलखिला उठी—"ठीक, मिस्टर अन्तोन का यही विचार है। बरसात से पहिले यह अपने जमींदार के शहर में औजार खरीदते समय थे···।"

अन्तोन ने जोड़ा—"हम बोतोश्नी गया था!"

"हाँ, बोतोश्नी तक, वे दूसरे जमींदारों से मिलने गये थे और मिस्टर अन्तोन ने सब देखा और सुना····और समझा कि हमारे मालिक शादी करने वाले हैं।····"

नन के पीले चेहरे और काली आँखों में उथल-पुथल की छाया झलकी और चिन्ता काँपती दिखाई दी।

इजेला ने फर समेटते हुए पूछा—"अगर ठीक समझो, तो यह भी बताओ, हो किससे रही है ?"

अन्तोन गुराया—"बोत वड़ा जिमींदार है····नाम है मास्टर योन्स्कू-बालेनी में बड़ी रियासत है····पाँच हजार एकड़ जंगल····और अकेली बेटी···।"

"तब तो यह वही होंगे, जो मेरे जमाने में एव्रामेनी में हमारे जमींदार से मिलने आया करते थे। मैं उन्हें जानता हूँ; मैं उनकी बेटी को भी जानता हूँ, तब वह बहुत छोटी थी—खूबसूरत बालों वाली नन्हीं-सी! वह मिस्टर योन्स्कू की पोती है।"

नन ने अपनी आँखें नीची करते हुए भुनभुनाया—"तो, यह सच है; और तुम यह भी जानते हो कि वह कौन है?"

इजेला प्रसन्नता में कहता गया—"हाँ, क्यों नहीं जानता? मैं उन्हें जरूर जानता हूँ। मिस्टर योन्स्कू काफी बूढ़े हो गए होंगे और उनकी पत्नी; वह शायद मर गईं!"

अन्तोन कुड़मुड़ाया—"ठीक, ठीक। बूढ़ी वेगम जिन्दा नहीं हैं। लेकिन नौजवानी में पगी वह मिस, फूल की मानिन्द सुन्दर और मीठी है····।"

"इसका मतलब है···इसका मतलब है अब हमें मालकिन मिल जायगी", नन ने अजीब मुस्कराहट के साथ कहा और नीता खेपादतू की ओर तिरछी दृष्टि से देखा।

नीता ऐसे चौंका मानो उस दृष्टि ने उसे जला दिया हो। वह तो किसी और बात के बारे में सोच रहा था।

मार्घियोलीता नरमाई से बोली —

"मुझे बड़ी खुशी है कि हमें मालकिन मिलेगी!"

नन ने उसकी ओर घूरते हुए पूछा—"भला क्यों है?"

"मुझे नहीं मालूम···पर मेरा ख्याल है कि मालकिन के आने के बाद यहाँ की रंगत बदलेगी।"

इजेला ने भी इस बात का समर्थन किया; वह बोला—"इसमें कोई

शक नहीं कि यहाँ चीजों में परिवर्तन होगा। उनके जैसी नई माल-किन! उन्हें खूबसूरत घर और अच्छे नस्ल के घोड़ों से भरा अस्तबल बहुत पसन्द है''''और देखना हमारे जमींदार उन्हें खुश करने को पेड़ और फूल लगायँगे।"

"बिल्कुल ठीक", अन्तोन ने शान्त स्वर से कहा, "मैं गाड़ी पर रोगन करूँगा।"

इजेला ने प्रसन्न होकर नन से कहा—"देखा, यह बात हुई।"

नन ने कुछ झुँझला कर प्रश्न किया—"लेकिन अगर वह भले ढंग से पली नवयुवती हुई तो इस रेगिस्तान में कैसे रह सकेगी? और फिर यहाँ कौन रह सकता है? न पार्टियाँ, न संगीत, न थियेटर, कुछ भी नहीं जैसा बड़े कस्बों में होता है। मैं जानती हूं, अच्छी तरह से। मैं दूसरी जगहों पर रह चुकी हूँ। मैं याशी में रह चुकी हूँ।"

सभी आश्चर्यचकित उसकी बातें सुन रहे थे।

मार्वियोलीता, अचानक सपनों में डूबी-सी, धीमे से बोली—"हाँ, ऐसा ही होगा।"

नन बोली—

"ऐसा ही होता है.... मैं भी न जाने यहाँ आकर कैसे अपने को सम्हाल पाई और बस सकी!"

उसकी कुटिल मुस्कान आनन्दपूर्ण हास्य में बदल गई और उसने एक बार लेपादतू की ओर देखा।

"तुम-नीता, तुम क्या सोचते हो इस बारे में?"

"मैं क्या सोचूँ, तुम्हीं बताओ? अगर वे दोनों सचमुच एक दूसरे से प्रेम करते हैं तो वह कहीं भी खुश रहेंगे, यहाँ भी।"

नन बड़ी देर तक उसके चेहरे को ताकती रही, मानो वह अपनी आँखें उसके चेहरे से हटना ही न चाहती हो।

मार्घियोलीता शीघ्रता से मुड़ी और उसका छाया में छिपा चेहरा

उस घर के भीतर न जाने क्या देखने लगा जिसमें कितनी ही चीजें अटीहुई रखी थीं। उसने अपना मुँह रूमाल से ढक लिया था और आहों को रोक-सी रही थी। नन स्प्रिङ्ग की तरह अपने पैरों पर उछली।

"अच्छा चचा इजेला! तुम फरों को लेकर कोठी पर मेरे पास आओगे······पर पहिले इन्हें किसी चीज में लपेट लेना।"

इजेला ने काम छोड़ते हुए शीघ्रता से कहा—"अच्छा, अब चलूंगा।"

"और नीता, तुम आज शाम या कल सवेरे मेरे पास आना। मुझे तुमसे कुछ काम है।"

नीता ने उसकी ओर अचरज भरी दृष्टि से देखकर कहा—"अच्छा।"

अन्तोन उठ खड़ा हुआ—"मैं जाकर मिल चलाता हूँ····" वह बुड़बुड़ाया—"मैं यहाँ आया, पाइप पिया, कुछ बातें कीं और अब चला।"

नन ने मारघियोलीता से पूछा—"तुम नहीं चल रही हो?"

युवती ने सहसा मुड़ कर देखा और बोली—"नहीं, मैं घर जा रही हूँ। पिताजी इन्तजार कर रहे होंगे···"

"अच्छा, पर कल कोठी आने की कोशिश करना।"

नन ने अपना पीला चेहरा और काली आँखें प्रकाश की ओर फेरीं और शीघ्रता से एक विशिष्ट शालीनता के साथ चल दी। चचा इजेला ने लोमड़ियों की फर पीठ पर लादीं और उसके पीछे बेमन से और बोझे से अत्यधिक झुके हुए चल पड़े।

और अपने आप ही बुड़बुड़ाया—"हुँ, मुझे फलीबोग को ढूँढकर उसे लोमड़ियों वाली बात बता देनी चाहिए·······क्योंकि अगर मैंने उससे न कहा और उसे पता चल गया, तो वह मुझसे बहुत नाराज होगा।···"

अन्तोन भी कुछ ध्यानमग्न दृष्टिगोचर हो रहा था। वह अपने आप ही कुछ कह रहा था, जो किसी को भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। अपने पाइप की कोर वह दाँतों से काटे जा रहा था और अन्त में वह वहाँ से अपने भारी बूटों को घसीटता हुआ चल ही पड़ा। पर दरवाज़े तक पहुँचते-पहुँचते वह फिर मुड़ा और थकी जबान से बोला—"नीता लेपादतू, तुम क्या कर रहे हो?......आओ मेरी चक्की पर चलो। हम बातचीत करेंगे। बीवी मेरी मर चुकी है.......अकेला हूँ....... बड़ी कोफ्त रहती है तबीयत। अच्छा फिर मिलेंगे।"

और वह पाइप धुआँ उड़ता चला गया।

छप्पर में सदा की नाईं मौन वातावरण भर गया, जिसे धुँधली रोशनी और भी बढ़ाती हुई प्रतीत हो रही थी।

नीता तुरंत अपनी जगह से उछटा और मार्घियोलीता के पास पहुँचा।

उसकी ओर मृदुल मुस्कराते हुए उसने उसका हाथ अपने हाथ में लेना चाहा। मार्घियोलीता ने आँखों को ढकने वाले अपने रूमाल को हटाया और चेहरे पर से घूँघट हटा लिया। वह पीछे हटी और सहमी-सी उसकी ओर देखने लगी।

फिर तीव्रता से प्रार्थना भरे स्वर में बोली—"कोठी पर मत जाना।"

उसके हाथ निस्तेज से अपने स्थान पर ही थे और वह उसकी ओर प्रश्नवाची ढंग से घूरता रहा—

"पर क्यों, बात क्या है?"

मार्घियोलीता की आँखों में आँसू चमक आये।

"मत जाना नीता—मैं अब समझी हूँ कि उस मन के मन में क्या है? मत जाना..."

"पर मार्घियोलीता, आखिर मामला क्या है? तुम इतनी परेशान क्यों हो?"

युवती ने उसकी ओर प्यार और क्रोध की मिश्रित दृष्टि से देखा।

वह बाँहें बढ़ाये उसके करीब आई। नीता समझ नहीं पाया कि बात क्या है, पर जब उसकी कँपकँपी काफी निकट आई तो नीता का बदन थरथरा उठा। उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया और वह निरन्तर शिथिलता से अपने को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रही थी कि नीता ने उसे समेट कर चूम लिया।"

"तुम नहीं जाओगे? नहीं जाओगे न?" वह धीरे-धीरे जैसे-तैसे विकृत स्वर में फुसफुसाई—"आज शाम झोंपड़ी में आना.... मैं पिताजी को वहाँ से भेजने का जतन कर लूँगी। हम कुछ बातें करेंगे........"

सहसा वह चल पड़ी। बाहर चरणों की चाप सुनाई दी और उन्हें नन की तीखी आवाज सुनाई पड़ी।

''मार्घियोलीता! यहाँ आओ।........क्या वहाँ हो मार्घियो-लीता।"

फिर कुछ नरमी से बोली—"चचा इजेला, मेरे लिए इन्तजार न करो; तुम चलो, मैं फौरन पहुँचती हूं।"

युवती लेपादतू के आलिंगन से मुक्त हुई और अपने चेहरे पर रूमाल ढक लिया। घृणा की एक रेखा उसके चेहरे पर गहरी हो गई। दरवाजे की ओर बढ़ते-बढ़ते यह शीघ्रता से फुसफुसाई—"तुम आज जरूर आओगे प्यारे..."

नीता अकेला रह गया स्तम्भित सा। छप्पर के फर्श पर जूतियों के ढेर के पास भेड़ों की खालों पर वह बैठ गया। उसने चाकू और सुई उठाई और फिर काम करना शुरू कर दिया, पर सब बेकार...

उसकी आँखों के सामने चकाचौंध मचाती वह घनी झोंपड़ी उभर आई जहाँ मार्घियोलीता इन्तजार कर रही होगी।

चचा इजेला ने आकर देखा वह सपनों में डूबा हुआ, शून्य में ताक रहा है।

जब वह उससे बोले तो नीता चौंक पड़ा।

"मैं जमींदार की कोठी पर गया था। काश, तुम नन का कमरा देख पाते! बड़े कीमती गालीचे ...पर क्या बात है छोकरे! तेरी तो हालत आपे में नहीं दिखाई पड़ती?"

नीता ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"कुछ भी तो बात नहीं चचा, मैं तो कुछ सोच रहा था..."

बूढ़ा जैसे सब कुछ समझ गया हो, इस तर्ज से हँसा।

"मैं जानता हूँ तुम किसके बारे में सोच रहे हो चिरंजीव! जब मैं तुम्हारी उम्र का था न, तब मैं भी तुम्हारी ही तरह सोचा करता था..."

"पर चचा, तुम जो समझ रहे हो, मैं वह नहीं सोच रहा था।"

"हाँ, हाँ, पर मैं तुम्हारे चेहरे को देखकर ही भाँप सकता हूँ। खैर, मुझे इससे क्या सरोकार? मैं खुद ही अपने बारे में सोच रहा था, अपनी ही परेशानियों के बारे में..."

बूढ़ा एक बार फर के ऊपर झुका और अपनी नाक से एक धुन गुनगुनाने लगा। चन्द मिनट बाद उसने अपनी आवाज ऊँची की—स्वर गम्भीर और दुःख पूर्ण था—"इन बातों की ओर कोई ध्यान न देना बेटे—यह तो दुखी मन का एक गीत है।"

उनकी आँखें एक दूसरे से मिलीं और दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े। और फिर दोनों ने बाहर फैले हुए कुहरे से ढंके उदास खेतों की ओर देखा।

जहाँ तक नीता समझता था, मार्घियोलीता आम लड़कियों की तरह न थी। उसका प्रेम घना और तीव्र था और ऐसा लगता था मानो इसी कारण उसकी बुद्धि भी तीखी हो गई थी। कभी-

कभी रात को जब वह उसके पास जाता था और बूढ़ा घर पर नहीं होता था, तो आलिंगनों के उपरान्त उसकी तबियत को मचली-सी आने लगती थी। माघियोलीता एक लैम्प जलाकर अलाव के पास रख देती थी और बातों-ही-बातों में उससे नाना प्रकार के सवाल पूछने लगती थी, जो कि उनके जीवन में उठ सकते थे।

एक बार उसने कहा—"मैं सोचती हूँ कि बसन्त में हमें जमींदार से मिलना चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि हम दोनों शादी करना चाहते हैं।...हम उनसे अपनी गृहस्थी बसाने के लिए मदद माँगेंगे—उस ओर सुन्दर-सा घर, जहाँ के बारे में हमने इतना सुना है..."

लेपादतू इन विचारों पर सोच-सोच कर आश्चर्य करता, पर वे उसे बुरे नहीं लगते थे।

"और शादी ठीक ढंग से होगी—गिरजाघर में, पादरी के द्वारा यहाँ के लोग तो यह सब बातें जैसे भूल गये हैं।"

और नीता सहमत होता—"तुम ठीक कहती हो। हमें भगवान् के सामने सच्चे ईसाई की तरह शादी करनी चाहिए। और हमें रजिस्ट्रार के दफ्तर भी जाना पड़ेगा।"

माघियोलीता के विचारों में डूबे-डूबे ही कह रही—"अगर जाना जरूरी हो, तो हम जायँगे ही।"

एक और दिन, जब वह अलग-अलग हो रहे थे, नीता को कुछ याद आया और हँसने लगा। बोला—"यह बताओ माघियोलीता, उस दिन चचा के घर पर क्या बात थी जो तुम मुझ से जमींदार की कोठी पर न जाने के लिए विनती कर रही थीं?"

"क्या तुम गये थे?"

"गया तो नहीं, पर मुझे ताज्जुब हुआ। लगा जैसे तुम उस नन से घृणा भी करती हो। पर तुम उसके पास जाती रहती हो और वह श्रीमती जी तुम्हारी कुशलता भी चाहती हैं।"

"ओह कुछ नहीं, कोई बात नहीं थी। बस मेरी सनक-सी थी।"

"हो सकता है मेरे न जाने से वह झुँझला गई हों। मेरा ख्याल है कुछ बात जरूर थी···"

माथियोलीता उत्फुल्ल होकर हँसी और अपना चेहरा युवक की छाती में दुबका लिया।

"अगर वह झुँझलाई भी होगी, तो अब बात आई-गई हो गई। भूल जाओ अब उस नन के बारे में।"

अपने मवेशियों के पास लौटते हुए नीता ने सोचा—"यह छोकरी बड़ी तेज है। क्यों मुझे यह अब तब चिढ़ाती है और डावाँ-डोल रखती है? पर मैं क्या करूँ, विवश हूँ। वह जानती है कि मैं उसे प्यार करता हूँ, इसीलिए वह···"

कुछ समय बाद उत्तर से ठंडी हवा बही और बादलों तथा कुहरे को उड़ा लेगई और कमजोर-सा पीला सूरज दमकने लगा।

पानी और कीचड़ के गढ़े पुर हो गये। एक साँझ; जो सूर्यास्त की कसेरी आभा से अनुप्राणित थी और बरफ से लदे-फँदे भारी बादलों में चारों ओर से आच्छादित था। बर्फ से जमी झीलों से एक तूफान उमड़ा और वर्फ की पहली पर्तों को बिखेरने लगा।

शीतकाल बर्फ के तूफानों के साथ आगे बढ़ रहा था।

रात को फलीबोग नीता के अस्तबल में आया और सदैव की नाई बोला—"सर्दी हमेशा की तरह नहीं शुरू हुई है—लक्षण बुरे हैं, दोस्त!"

युवक ने उत्तर दिया—"हाँ, सर्दियों में हमेशा मुश्किल रहती है। पर हम कर ही क्या सकते हैं। यह तो भगवान् की मर्जी है····।"

"क्या तुम्हारे पास अच्छी भेड़ की खाल की जाकट है? क्या तुम्हारे सुअर की खालवाले जूते काफी मजबूत हैं? इस सर्दी से लड़ना तो बड़ा ही मुश्किल रहेगा।"

"पर किया क्या जा सकता है ?" नीता ने हँसकर कहा।

फलीबोग दूसरे अस्तबलों की ओर चला गया।

जमींदार की कोठी के आस-पास की बस्ती और भी घनी हो उठी। गड़रिये अपनी भेड़ों को वहीं ले आये और विभिन्न वाड़ों में बाँट दिया। मवेशी-अस्तबलों में भर दिये गये।

सर्दी के डर के कारण जमींदार का सब माल एक ही स्थान पर एकत्रित हो गया। ऐसा लगता था जैसे हानिकारकहवा की पहिली साँस ने ही सब को हिला दिया हो। लोग सर्दी की इस पहिली साँझ को जोर से बातें करते थे, एक दूसरे को पुकारते थे, चीखते थे और कुत्तों पर नाराज होते थे।

नीता ने अपना कोट उलट लिया था, फर बाहर की ओर करली थी। वह मवेशियों की लम्बी कतारों में घूमता और यह निश्चय किया कि किसी को भी कुछ नहीं चाहिए फिर सीटी देकर अपने उस कुत्ते को पुकारा जो उसके नीचे काम करने वाले छोकरों ने उसे दिया था।

"ए सारमन् तुम्हारे पास जाड़े के लिए कोट है ?" उसने कुत्ते की थूथड़ी और गर्दन थपथपाते हुए कहा।

कुत्ते का काला कोट बर्फ के फुहारों के बीच चमक उठा। नीता कुछ देर विचारों में खोया-सा खड़ा रहा और दूर अँधेरे में ताकता रहा।

जब से वह विभिन्न जमींदारों के मवेशियों के पास रहता था और जहाँ तक उसकी स्मृति उसे पीछे ले जाने में समर्थ हो सकी थी, उसे भली प्रकार याद था कि शीत ऋतु के पहिले झोंके उसकी आत्मा को एक अजीब बेचैनी से भर देते थे—जैसे कोई चुभने वाला बोझ ऊपर आ पड़ा हो—मानो घृणा की चक्की चलने लगी हो, जो कोई अजानी दुनियाँ उसके ऊपर आकर छा देती थी।

वह कुत्ते से बोला—"चलो अब घर चलें।"

कंधे पर कोट डाले और चंद कदम पीछे चलते हुए कुत्ते के साथ नीता बर्फ के उड़ते टुकड़ों के बीच आगे बढ़ गया।

सिर्फ लोगों के घरों के झरोखों से धीमी रोशनी टिमटिमाती-सी दिखाई पड़ रही थी।

वह बूढ़े आदमी की झोंपड़ी में घुसा और आग के पास पड़ी बेंच पर बैठ गया। कुत्ता उसके पैरों के पास लेट गया। नवयुवक कुछ देर बैठे बैठे सोचता रहा। कभी-कभी कोई बर्फ से लदा थका नौकर या गड़रिया अन्दर आता, पाइप पीता और चला जाता। बूढ़े आदमी आपस में एक भविष्य के बारे में अजीब-सी धारणा करते हुए बातें करते अपने जीवन में आये पिछले कठिनतम जाड़ोंकी चर्चा कर रहे थे। ऐसा लगता था मानो वह युद्धों अथवा अन्य उसी प्रकार के दुर्भाग्यों की चर्चा कर रहे हों। जब वह बातें करते-करते रुकते, बाहर भयंकर तूफान की प्रबल गर्जना सुनाई पड़ती। चिमनी की राह से आये तेज हवा के झोंके लैम्प की थरथराती रोशनी को और भी प्रकम्पित कर जाते थे।

दूसरे दिन तूफान शान्त हुआ, पर बर्फ दूसरे दिन और दूसरी रात तक गिरती रही। आखिरी पर्त गिर जाने के बाद शीत और भी तेज हो गया। झोंपड़ियों में रहने वाले अपने घरों में से निकले मानो पृथ्वी की गहराईयों से निकले हों और गहरी फैली बर्फ पर राह-रास्ते तलाश करने लगे।

झोंपड़ियों की छतों से धुआँ सीधी लकीर जैसा निकला और शोर तथा आवाजें ऐसे गूँजने लगीं जैसे मोटे शीशे की छत के नीचे गूँजती हैं।

फलीयोग और लेवादत् सर्दी के लिए एकत्र भूसे और कड़ब के ढेर को देखने पहुँचे। वहाँ पर नौकर निरन्तर अपनी स्लेज गाड़ियाँ भर-भर ढो रहे थे। जहाँ भेड़ें बसाई गई थीं उन बाड़ों के आस-पास

गड़रिये बर्फ के ढेर साफ कर रहे थे। दूर-दूर क्षितिज के पार तक भी सफेदी का बेदाग सफेदी का राज्य फैला दिया गया था। एक परछाईं समय-समय पर उतरती और पृथ्वी पर आकर लुप्त हो जाती। यह कौओं का जलूस था जो चमकदार सफेद बर्फीली पर्त पर चलते-फिरते काले धब्बों के समान विस्तृत था।

५

सन्त निकोलस के दिन से दो दिन पहिले दोपहर के लगभग, पहा-ड़ियों की चोटी से खलिहानों की तरफ आती हुई स्लेज घंटियों की रुनुन-झुनुन सुनी जा सकती थी। बारूद-गाड़ी की नाईं अफ्वाह चारों ओर फैल गई—जमींदार जार्ज एंग्रामीनू वापस आरहे हैं। सभी दिशाओं से झोंपड़ियों के रहने वाले चींटी की नाईं दृष्टिगोचर हुए। यहाँ तक कि औरतें और नंगे पैर बच्चे भी अपनी सुरक्षा की जगह से देखने के लिए भकिियाते हुए अपनी गर्दनें बाहर की ओर लम्बी निकाल कर आगे बढ़े।

सच ही, मालिक चार घोड़ों वाली स्लेज से, जो प्रसन्नतापूर्वक रुनुन-झुनुन कर रही थी, वापस आरहे थे। फलीयोग और जना अपनी झोंपड़ी की देहलीज पर साफ कोट पहिने दिखाई दिये और जमींदार की कोठी पर उनसे मिलने चल दिये।

कारिन्दा की बीवी प्रशंसात्मक ढंग से चिल्लाई—"ओह साँदू, मैंने ऐसी बढ़िया स्लेज कभी नहीं देखी।"

फलीयोग खिलखिलाते हुए बोला—"चुप रहो। स्लेज के भीतर कुछ और बढ़िया और उम्दा चीज है···"

"क्या है?"

"बिल्कुल सच है। मैं तुम से लम्बा हूँ और मेरी गर्दन लम्बी है। पंजों के बल खड़ी होकर खुद ही देख लो····"

"अरे, साँदू, यह तो वही है, जो हमारी मालकिन बनेगी····कितनी सुन्दर नवयुवती है!"

मिस्टर जार्ज अपने देश लौट आये थे और साथ में उनकी पत्नी और बड़े जमींदार योन्स्कू रानू भी थे।

फलीयोग फुसफुसाया—"तो जना, आखिर हम जो कहते थे, वह

सच ही था। कौन जाने अब क्या हो ?"

जना अपने पुरुष की ओर मुड़ी और उसकी ओर तिरछी निगाहों से घूर कर देखा—

"तुम ऐसा क्यों कहते हो, साँदू ?"

"अरे जना, वह कबूतरी शहर की चिड़िया है। देखना एक-न-एक दिन यह मालिक को इस रेगिस्तान से बाहर ले जाकर दम लेगी।"

जना ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने अपनी जलती आँखें स्लेज पर, जो आप धीरे-धीरे आगे आरही थी, जमा दीं और फर में लिपटी नवयुवती का गुलाबी चेहरा बहुत गौर से देखा और पढ़ा।

फिर वह नरमाई से फुसफुसाई—"जल्द ही हमें इसका असली रूप देखने को मिल जायगा।"

स्लेज लट्ठों से बने मकान की सीढ़ियों के पास आगई। खिड़कियों पर पड़े सफेद पर्दे हटे, मानों पलकें गिरी हों, उठी हों और फिर गिरी हों। और अन्त में द्वार खुला और अपने फर-कोट में नन्हीं सी लग रही नन देहलीज़ पर आई। उसने आगन्तुक को उसके नरम चेहरे पर एक हँसी गड़ाये देखा। सभी दिशाओं से गाँव वाले झुंडों में चले आ रहे थे और अपनी टोपियाँ हाथों में लिए स्लेज के चारों ओर इकट्ठा हो रहे थे।

सबसे पहिले मिस्टर जार्ज फर और कोटों के ढेर से मुक्त हुए। वह तेजी से जमीन पर, अपने चमचमाते चेहरे पर प्रसन्न मुस्कान लिए कूदे।

फिर भारी और मोटे तथा सफेद मूँछ और काली भौंहों वाले बूढ़े जमींदार उतरे। और अन्त में मिस्टर जार्ज की बाहों की मदद से वह सुन्दर बालों वाली नवयुवती नीचे उतरी—वह तो एक तितली से भी हल्की थी। एक सफेद टोपी उसकी एक आँख पर आई हुई थी और उसके कपोल सेमूर से भली प्रकार ढके हुए थे।

वह घर में घुसे। आदर से झुककर नन उनके पीछे-पीछे होली। बाहर नौकर और गाँव के लोग आदर प्रकट करते हुए खड़े थे। वह स्लेज, घोड़ों और कोचवान को, जो अपने नीले फर के अस्तर वाले कोट और सिर पर सेमूर की कज्जाकी टोपी लगाये इधर-उधर फिर रहा था, देख रहे थे।

और जब गाड़ी अस्तबल की ओर मुड़ गई, तो भी वह थोड़ी देर वहीं खड़े आपस में जमींदारों और उन खुशनुमा-अजूबा देशों की बात करते रहे, जहाँ से ऐसे प्रसन्न और खूब हृष्टपुष्ट अच्छी तरह पले-पुसे लोग आये थे। यह सभी कुछ सूरज की किरणों के समान था। मानो राजा उनकी गंदुम जिंदगी में वापस आगया हो।

जब वे जमींदार लोग फिर बाहर आये, तो वे कीचड़ की बनी झोंपड़ियों में रहने वाले लोग दो कतारों में खड़े थे और उनको प्रशंसात्मक ध्यान से देख रहे थे। जमींदार लोगों के कपोल लाल थे और वे बड़ी प्रफुल्ल अवस्था में थे। मिस्टर जार्ज अपनी प्रजा के पास आये और मुस्करा कर बोले—

"भलेमानुसो, ये तुम्हारी मालकिन है।"

उन्होंने दो सुन्दर नैनों की ओर देखा, जो उनके चेहरे में दमक रही थीं, मानो वह किसी अमूल्य चीज की ओर देख रहे हों।

अनेकों आवाजों ने उत्तर दिया—"भगवान् इनकी तन्दुरुस्ती बनाये रखे। भगवान् की कृपा इन पर बनी रहे।"

बूढ़े जमींदार मुश्की सिगरेट होल्डर में लगाये सिगरेट पी रहे थे, और बेध्यानी से चारों ओर जमा लोगों को देख रहे थे। तब, सुन्दर बालों वाली युवती की ओर रुख करके वह एक फीकी-सी मुस्कान भरे भुनभुनाये—

"हुं, कितने गंदे और गुरबा हैं ये लोग।"

गाँव वाले आपस में फुसफुसाये—"क्या कह रहे हैं ये ?"

अपने को चमकदार फरों में लपेटे जमींदार लोग कई जगह घूमे। झोंपड़ियाँ देखकर वह रुक गये। सुन्दर नवयुवती खिलखिलाकर हँस पड़ी।

"अरे ये घर हैं। कितने अजीब दिखते हैं!"

और मिस्टर जार्ज की ओर प्यार भरी दृष्टि डालकर वह फरांसीसी में ही कहती चली गई—"घर! कितने अजीब घर!"

"सचमुच, यहाँ तो हम सभ्यता से कोसों दूर हैं!" मिस्टर योन्सकू ने धुँए के नीले बादल को चारों ओर छोड़ते हुए बात मिलाई।

"बहुत ही अजीब...सच, बहुत ही अजीब।" युवती भुनभुनाई और उसकी आँखें सहसा धुँधली सी हो गईं। "इन झोंपड़ियों को देखकर मुझे उन कोयला जलाने वालों की कहानियाँ याद आरही हैं, जो मैंने फरांसीसी स्कूल में पढ़ते समय पढ़ी थीं।"

झोंपड़ियों के रहने वाले उन लोगों के पीछे काफी फासले पर डरे हुए से और सन्तुष्ट झुंड की नाईं चल रहे थे। मालिक लोग मवेशियों के बाड़े और अस्तबलों की ओर मुड़े।

मिस्टर जार्ज कुछ झेंपती-सी मुस्कराहट से बोले—"मेरे यहाँ खेती-वाड़ी कम है। पर हम करें भी क्या? आप यह न भूलें कि हम यहाँ एक नई ज़मीन पर हैं।"

पूरे समय नवयुवती की आँखें उनपर जमी रहीं और वह मधुर-यहाँ मधुर मुस्कराती रही।

वह सचमुच बहुत सुन्दर और आकर्षक थी तथा झोंपड़ी में रहने वाले लोग उसे घूर रहे थे और प्रत्येक बारीकी को आश्चर्य तथा चकित होने के भाव से लेकर, धीमी-धीमी आवाजों में अपने विचार एक दूसरे पर प्रकट कर रहे थे।

फलीबोग ने जना से कहा—"वे फरांसीसी में बातें कर रहे हैं।"

युवती अपने पंजों के बल अदा से खड़ी होकर चहकी—"मैं नहीं

समझती यहाँ गर्मियों में भी मौसम कुछ खास अच्छा होता होगा।"

एब्रामीन् ने उत्तर दिया—"मेरा अपना ख़याल है कि मक्की के खेतों से और कुछ अच्छा नहीं हो सकता।....अरे वह फलीबोग है।"

उनकी निगाह उसी समय फलीबोग पर पड़ी।

उन्होंने तुरन्त कहा—"साँदू, यहाँ आओ!"

फलीबोग पास पहुँचा, कुछ कठोर-सा, पर उसने चेहरे के सारे भावों को भरसक नरम करने की कोशिश की।

"हम आपके हाथ चूमते हैं मालकिन!" उसने अपने पंजे के मानिन्द भारी हाथ को फैलाकर विनम्रता से कहा।

मिस्टर आर्ज ने अब भी फराँसीसी में ही कहा—"अपना हाथ चूमने को इसे दो।"

फलीबोग ने अपनी निगाहें उठाईं और पहिले मालिक की ओर देखा, फिर बढ़े हुए दस्ताने चढ़े छोटे हाथ को चूमा।

"अच्छा साँदू," जमींदार ने मेहरबानी से पूछा—"सब कुछ ठीक चल रहा है न, यहाँ पर?"

"जी हाँ मालिक, ठीक चल रहा है।" फलीबोग ने विनम्रता से उत्तर दिया। "हर पिछले साल की तरह मैं कोठी पर आकर काम काज के बारे में तफसील दूँगा।"

एब्रामीन् बोले—"हमारे पास अभी बिलकुल समय नहीं है। हमतो सिर्फ बीच में यहाँ ठहर गये हैं। हम कल सवेरे यहाँ से जा रहे हैं।"

"मालिक, क्या आप दूर जा रहे हैं....?"

"हाँ, काफी दूर। हम इटली जा रहे हैं....तुमने तो यह नाम भी न सुना होगा।"

"क्यों नहीं मालिक, यह नाम तो हमने सुना है, वहाँ पर" फली-बोग ने एक आह भर कर जना की ओर ताकते हुए कहा।

नवयुवती, सहसा हँस पड़ी।

वह निश्वास भर कर बोली—"मुझे सर्दी लग रही है, मुझे सर्दी लग रही है। चलो, हम भीतर चलें, चलें न?" उसने एऽशामीनू की बाँह ली और अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया। "देखो मैंने, तुम्हारी बात मानी....और हम धरती के छोर पर तुम्हारा राज देखने आ गये," और उत्फुल्ल हँसी। "पर, ईश्वर के लिए अब हम चलें, जल्दी, जल्दी! बहुत दूर...वहाँ जहाँ फूल हैं...गीत हैं...ओह जार्ज मैं कितनी प्रसन्न हूँ!"

उनके कदम तेज हो गये। बूढ़ा जमींदार उनका साथ देने के लिए कष्ट करता हुआआगे बढ़ा। उनके चेहरे पर झुँझलाहट थी। धीमी आवाज में वह बड़बड़ाया और उसे धमकाया।

"रोजीना, अक्ल से काम लो, लोग तुम्हें देख रहे हैं...." और अन्त में वह खाँसने लगे और सिगरेट फेंक दी।

होठों पर प्रशंसामूलक मुस्कान समोये, जना की आँखे अपनी मालकिन का पीछा कर रही थीं। उसने अपने पति से कहा—

"तुमने सुना साँवू, उनका नाम जोना है।"

फलीबोग ने कुछ न सुनाई पड़ने वाली बात कुड़कुड़ाई। जमींदार लोग घर में घुस गये।

कुछ समय बाद मिस्टर जार्ज अकेले बाहर आये। अपने कारिन्दा को बुलाया और जोरदार आवाज में कहा—"सुनो साँवू, एक आदमी को स्लेज लेकर गाँव भेजो। वह शराबघर जाकर बारह गैलन ब्राँडी ले आये! तुम मेरी ओर से उसे सब लोगों को बाँटोगे। आज ही शाम को। लेकिन तुम इसका ख्याल रखना...."

"मैं समझ गया मालिक......और आप वापस कब तक लौटेंगे?"

जमींदार ने ताज्जुब में भर कर पूछा—"कौन? ओह हाँ, श्रीमती

जी को यहाँ अच्छा नहीं लगता···लेकिन मैं जल्द ही लौटूँगा···अपनी तरफ से जल्दी-से-जल्दी····"

"सफर में आपको कोई तकलीफ न हो, मालकिन और आप सकुशल वापस लौटें, यही मेरी कामना है।"

एक सफेद हाथ खिड़की के भीतर की ओर खुटखुटा रहा था। मिस्टर जार्ज हँसते हुए मुड़े और भीतर चले गए।

भौं सिकोड़ते हुए फलीबोग उन नौकरों के साथ चला गया जो बाहर इन्तजार कर रहे थे। "तुम अपना सिर ढक सकते हो?" वह अपने दाँतों को पीसता हुआ बोला। उसने अपनी फर की टोपी फिर से पहन ली और कानों के ऊपर तक खींच ली।

"अन्द्रेई को शराब लेने जाने दो" वह अपनी स्वाभाविक रुखाई से चिल्लाया, "बाकी तुम लोग अपने काम पर लौट जाओ। जमींदार अब घर पर हैं और आराम कर रहे हैं। और अब तुम क्या चाहते हो?······"

धीरे-धीरे झोंपड़ियों के लोग बर्फ में से तिनकों से भरी चप्पलों को घसीटते और इस महान घटना पर टीका-टिप्पणी करते चले जा रहे थे। फलीबोग ने एक लड़के को बुलाया।

"ऐ, ग्रेकूसर? तुम जल्दी जाओ और मेरी घोड़ी पर जीन कसो। मैं यह देखने जाना चाहता हूँ कि उन्होंने मेरे सवेरे दिये हुए हुक्म को पूरा किया है नहीं।"

वह बड़बड़ाता हुआ एक दिशा में चला गया और ग्रेकूसर बर्फ ढेरों पर लम्बी छलांगे लगाता हुआ दूसरी ओर चला गया।

नीता लेपादतू ने अपने कुत्ते के साथ गौ-शाला के पास अपने स्वामी के आने की प्रतीक्षा की। उसने उन्हें अपनी तरफ आते देखा और अपने टोप को उतार लिया जबकि वे अभी दूर ही थे।

लेकिन फर के सफेद धागों में चमकती हुई आँखों ने उस पर नजर

तक न डालो, तुरन्त भाग कर कहीं और आराम करने लगीं जमींदार लोग फिर दूर चले गये और नीता उसी स्थान पर टोपी हाथ में लिये जमा रहा मानो वहीं जड़ हो गया हो।

फलीबोग कदम बढ़ाता उसके पास आया और बोला—"अच्छा, नीता! तुम इस के विषय में क्या सोचते हो?···परमात्मा के लिये, भले आदमी अपनी टोपी पहन लो।"

"वह कितनी छोटी और सुन्दर है!" नीता ने कहा।

"परन्तु उसके बारे मे क्या सोचा था, वह एक पवित्र जीव है, कि हमारी तरह नहीं जिनमें मिट्टी, गोबर और धुंआ की गंध आती हैं···वह एक जीव है—मैं कैसे बताऊं? मक्खन की बनी हुई।···वह एक प्राणी है जो नाजों में पला है···अरे, वह तो एक भिन्न नस्ल की है···"

लेपादतु चुप था। उसने अपने सामने देखा और मुस्कराया मानों उसकी आँखें कोई मधुर स्वप्न देख रही हों।

दूसरे दिन सवेरे, घाटी की शांति में स्लेज की घंटियों की कई तरह की टन-टन की आवाज सुनी जा सकती थी। धुंध कम हो गया था और सारे नीले आकाश में सूरज चमक रहा था। चार घोड़े, फ़र और ओढ़ने के कपड़ों से भरी हुई स्लेज को जोर से खींचते हुए घर की सीढ़ियों के नीचे ठहरे और कोचवान चलाने वाली जगह शान से ऊपर बैठा हुआ अपने आस-पास देखने की जरा भी कोशिश नहीं कर रहा था।

झोंपड़ियों के रहने वाले अपने मालिकों की विदाई देखने की प्रतीक्षा में इधर उधर इकट्ठे हो गये। पिछली तरफ़ घर के बरांडे में फलोबोग मिस्टर जार्ज के प्रश्नों का उत्तर दे रहा था और हुक्म ले रहा था।

जब कारिन्दा बाहर आया तो हरेक ने पहाड़ी पर खलिहानों की ओर देखा। एक छोटा घोड़ा-जुती तंग स्लेज उधर से जल्दी-जल्दी आ

रही थी। फलीबोग ने अच्छी तरह देखने के लिए अपनी आँखों पर हाथ से छाया डाली।

"हो न हो यह मेयर है" वह अपनी जगह से हटे बिना जोरसे बोला।

छोटा काला घोड़ा जल्दी चलता हुआ आया, यह कोठी तक आया और ठहर गया। एक छोटा, पेट वाला आदमी स्लेज से बाहर निकला, वह भेड़ की खाल का कोट पहन रहा था। उसके चौड़े कालर और फर की नोंकदार टोपी के बीच से एक मोटा लाल मुँह निकला हुआ था। दो छोटी आँखें चारों ओर पड़ताली निगाह से चल रही थीं।

"मेरे घोड़ों और लबादों की रखवाली कौन करेगा?" वह मोटा आदमी मोटी आवाज में बोला। उसने अपने ऊनी दस्ताने उतारे, अपनी टोपी पीछे फेंक दी और कोट के कालर को सीधा अपने कंधों पर खींच लिया।

"आप यहाँ कैसे पधारे महाशय?" फलीबोग ने पूछा।

सरकारी अफसर घूमा और उसके मोटे होठ मुस्कराने के लिए कुछ खुले।

"अरे, यह तुम हो, मिस्टर साँदू? जमींदार यहाँ हैं, हैं न? मैंने उन्हें कल देखा था .... जब वे गाँव से गुजर रहे थे।"

"हाँ, वे यहाँ हैं", फलीबोग ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "अब हमारी एक मालकिन भी है...."

"मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ", मेयर ने हँसते हुए कहा। "इसी लिए तो आने में जल्दी की है कि मैं उनका सम्मान कर सकूँ...."

झोंपड़ियों के आदमियों ने चुपचाप रहकर नजारा देखा।

मेयर कुछ मिनट तक इधर-उधर देखता रहा और फिर उसने जमींदार के घर पर दृष्टि जमा दी।

"इस रास्ते से"—फलीबोग ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा, "पीछे से..."

परन्तु सामने का दरवाजा खुला और जमींदार लोग फरों में ढके दिखाई दिये। मेयर सीढ़ियों की तरफ लपका। मिस्टर जार्ज ने उसे एकदम पहचान लिया, और कहा, कुछ हैरानी में कहा—"अरे, यह तो मिस्टर वाल्कू हैं! यहाँ कितनी देर से हो?"

"मैं अभी आया हूँ।" मेयर ने जमींदार की श्रीमतीजी को झुक कर नमस्कार करते हुए जवाब दिया।

"एक पल के लिए माफ करें मेयर, एक पल के लिए....."

मिस्टर जार्ज ने अपनी युवती बीवी की स्लेज में चढ़ने में सहायता की और उन्हें लबादों के पहाड़ में दबा दिया। उसने उनको चमकती हुई आँखों से देखा और लाल ताजा होंठों पर एक मासूम मुस्कान तैर गई।

"कैसा शानदार मौसम है!" वह धीमी आवाज में बोली! "जार्ज आओ। आओ अब हम चल पड़ें....."

"एक क्षण" एग्रामीनू ने धीमी आवाज में फराँसीसी में कहा।

"मैं इस आदमी से एक-दो बातें कर लूँ..."

बूढ़ा जमींदार लम्बी साँस भरता हुआ अपनी बारी आने पर स्लेज में चढ़ गया। नन नीची आँखें किये शान्त और आदर के भाव से बराँडे में खड़ी थी।

मालिक मेयर के पास गया और उसे एक तरफ ले गया। उन्होंने कुछ मिनट धीरे-धीरे बातें कीं। अन्त में एग्रामीनू ने अपना फर का कोट खोला, अपना हाथ जेब में डाला और एक थैली निकाली। फिर एक लम्बा नीला बैंक का नोट चुना, जिसे मिस्टर वाल्कू ने अपनी जेब में रखने में तनिक भी देर नहीं लगाई।

"बहुत-बहुत धन्यवाद", मेयर ने लम्बी मुस्कान के साथ कहा, "सदा की तरह मैं आपकी सेवा में हाजिर हूँ..."

"अच्छा, अच्छा!" एग्रामीनू ने दूर देखते हुए और अपने कोट के

बटन फिर से बन्द करते हुए जवाब दिया। "अलविदा मिस्टर वाल्कू ! अलविदा।"

"आपका सेवक"—मेयर ने सफेद फर की ओर आशातीत नीचे झुकते हुए कहा।

श्रीमतीजी ने पलक मारी और मिस्टर जार्ज ने स्लेज में चढ़ने की जल्दी की। नन वराँडे से दौड़ कर नीचे आई।

फलीओग भी दूसरी तरफ पहुँचा। कोचवान मुड़ा और सभी ने अपने फर और लबादों को ठीक-ठाक करने में अपनी पूरी कोशिश की।

"साँदू !" मिस्टर जार्ज ने एक वार फिर कहा, "देखो, हर चीज ठीक-ठीक रहे …"

फलोबोग ने अपनी टोपी उतारी।

"डरिए नहीं, मालिक !…विदा।…"

सब मिट्टी के झोंपड़ों में रहनेवालों ने अपनी टोपियाँ उतारीं।

"अलविदा !"… मिस्टर जार्ज ने आखिरी वार जोर से कहा। "हम चल दिये कोस्टाच !"

कोचवान ने अपना चाबुक फटकारा, घोड़ों की गलों की घंटियाँ फिर बजने लगीं और स्लेज आगे की ओर पहाड़ी की तरफ धीरे-धीरे उछलने लगी। पीछे-पीछे बहुत दूर पर छूटे रह गये मिस्टर वाल्कू अपने कपड़ों में लिपटे और टोप आँखों तक उतारे हुए तथा कोट के कालर ऊपर को खीचे हुए, अपने घर की ओर चले गये, केवल उनकी नाक दिखाई देती थी।

"अच्छा नीता !" फलीओग ने लेपादतू से कहा, "अब तुमने सरकारी अफसर को सबसे पास वाले गाँव के मेयर को खुद ही देख लिया। वह बड़ा चतुर बूढ़ा है, मिस्टर वाल्कू। जब कभी उसे भनक मिलती है कि जमींदार लौट आया है, वह समय नहीं खोता… हमारे मालिक बस एक नोट, नीला नोट, उसके पंजों में सरका देते हैं, ऐसा

करने को वह अपना कर्त्तव्य कहता है। उसके ऐसे आने के अलावा हम अपने आप में मस्त रहते हैं—बिना किसी मेयर या पादरी के। टैक्स लेने वाला साल में एक बार आता है और वह भी धन लेने के लिए। इसके बाद सब समाप्त····”

फलीबोग हँसा, जब कि उसकी आँखें छोटी लकड़ी की स्लेज को एक सुन्दर स्लेज की बराबरी करने की कोशिश में संलग्न देख रही थीं।

“लेकिन तुम, नीता”, उसने एक दम आगे कहा, “तुम कैसे बीच-बीच में कुछ उसाँसे से लग रहे थे···कल की तरह···तुम ऐसे लगते थे जैसे तुमने कहानियों में कही जाने वाली परी को देख लिया हो।”

स्लेज की घंटियों की हल्की-मुलायम ध्वनि दूरी में विलीन हो गई, जब कि जमींदार का घर और झोपड़ियाँ पहिले से अधिक सुनसान तथा एकान्त भी और शीत-शांति में ढकी हुई थीं।

कारिन्दा अपना काम देखने चला गया और नीता कुत्ते को साथ लिए अपने पशुओं के पास लौटा। परन्तु संध्या समय सब मिट्टी की झोंपड़ियों में रहने वाले आग के इर्द गिर्द इकट्ठे हुए और फिर दूसरे लोक के स्वप्न विशेष जैसी इस घटना के सम्बन्ध में जो उनकी अंधेरी जिन्दगी में क्षणभर के लिए आई थी, बातें आरम्भ कीं···

(६)

सर्दी धीरे-धीरे और शान्ति से चलती रही। साधारणतः मनुष्य और पशु कुछ बहुत बुरी तरह से नहीं रहे। और किसी बात ने उस अकेली बस्ती की एकान्तता को भंग नहीं किया। केवल बड़े दिन से एक दिन पहले की संध्या को मिस्टर वाल्कू के गाँव के गिरजे से एक पादरी और एक सैक्सटन घोड़े की पीठ पर चढ़ कर झोंपड़ियों के रहने वालों को ईसामसीह के जन्म का समाचार सुनाने आये थे। वे पहिले जमींदार के घर गये। वहां नन ने उनका स्वागत किया। इस समय वह सदा से अधिक भक्त और उदासीन दिखाई पड़ी। फिर वे झोंपड़ियों में से गुजरे और स्त्री और बच्चे उन्हें रास्ते में मिले। उनको वे आशीर्वाद देते गये।

फलीबोग ने अपना कर्त्तव्य पूरा किया और दोपहर के लगभग पादरी व सैक्सटन सफेद फैली हुई बर्फ पर अपने छोटे घोड़ों को चलाते हुए घर चले गए। आदमियों ने अपनी आँखों से तब तक उनका पीछा किया जब तक कि वे दूरी में दो काले धब्बों की तरह ओझल न हो गये।

बड़े दिन पर सभी ने सूअर का मांस खाया और शराब पी, जैसा कि रिवाज था। वे जानते थे कि एक नया साल शुरू होने वाला है, और झोंपड़ियों की गर्माहट में इसको मनाया। गड़रियों ने भी खाने-पीने में खूब ही हिस्सा लिया और मवेशियों के बाड़ों की रखवाली करने वाले आदमी भी नहीं चूके। भोर होने तक फलीबोग एक क्षण का आराम लिये बिना सब दिशाओं में यह देखने के लिए दौड़ता रहा कि कोई तिनकों और घास फूस के छप्परों में हुक्का तो नहीं पी रहा या कोई मवेशियों के बीच में तो नहीं गिर पड़ा है। ऐसे अवसरों पर

हरएक आदमी को खूब पीने की इजाजत थी, परन्तु शराबी की हालत कभी-कभी खतरा भी पैदा कर देती है।

ऐपीफानी के त्यौहार के बाद एक दिन संध्या-समय फलीबोग और लेपादतू बूढ़े आदमी की झोंपड़ी में बातचीत कर रहे थे, उत्तरीय पवन फिर बिखर पड़ा।

"अब तक," फलीबोल ने कहा, "हमारी सर्दियों का पहिला आधा समय तो बहुत मुश्किल से नहीं बीता। अच्छा, देखें अब आगे आने वाला आधा समय किस तरह का बीता है।"

"हुं!" नीता ने हँसते हुए जवाब दिया, "यह सर्दी और सर्दियों से भिन्न थोड़े ही हो सकती हैं।...जैसी होनी होगी वैसी ही होगी।"

"यह ठीक है, सर्दी अब तक कभी भेड़ियों के द्वारा नहीं खाई गई....फिर भी तुम देखते हो कि जैसे ही एपीफानी का त्यौहार समाप्त होता है मैं बसन्त के विषय में सोचने लगता हूं। जाड़े में इतना घर पर रहना पड़ता है कि दम घुटने लगता है! जना की भी यही हालत...वह बसन्ती सूरज की चाह करती रहती है..."

फलीबोग ने आग के पास नाक से साँस ली। मिखाइलेच प्रेस-कूरी बोला।

"बसन्त में मालिक अपने बच्चों सहित वापस आयँगे।"

फलीबोग ने अपना सिर हिलाया और लम्बी साँस ली।

"जब बर्फ पिघलने लगती है तो कैसा सुहावना लगता है और खेत हरे दिखाई देते हैं...लार्क-चिड़िया गाती हुई बहुत ऊँचे तक आकाश में चली जाती हैं। सब ओर चश्मों में जिंदगी आजाती है और वह झागों से सफेद दीख पड़ते हैं और एक गन्ध आती है, कह नहीं सकता कैसी....पर एक मीठी गन्ध। यहाँ तक कि मेरी घोड़ी अधीरता और खुशी से काँपती है और जब मैं उस पर सवार होता हूँ तो हिनहिनाती है। मिस्टर जार्ज भी अपने घोड़े पर सवार होते हैं और हम दोनों चल पड़ते हैं

यह तय करने के लिए कि किस कोने में काम करना है, कौनसे खेत चरागाहों के लिए छोड़ देने हैं, कहाँ घास बनानी है…ओह उन्हें काली जमीन पसन्द है …मेरी ही तरह….

"लेकिन, साँदु," चचा इमिया इन्द्रेल अपने कोने से बोले, मैं तुम्हें कुछ बताऊंगा, मैं…वह इस जमीन को प्यार करने में कैसे मदद कर सकता है ? मैंने अपनी ज़िन्दगी में अच्छी जगह देखी हैं और बहुत-सी जमीन अपने हाथों से जोती है। लेकिन यहाँ की कुछ बात और ही है…यहाँ जमीन इतनी अच्छी है….परमात्मा ने इसे ऐसे बनाया है… जो फसलें यहाँ पैदा होती हैं वैसी दुनियाँ में आज तक न किसी ने देखी हैं और न सुनीं….यहाँ पर मक्की घोड़े की पीठ पर खड़े आदमी से भी लम्बी होती है। गेहूँ कंधों तक पहुँच जाता है : और इससे बड़ी और भारी अनाज की बालें कहीं नहीं होतीं…मैं कैसे जानूं ? इस जमीन को ईश्वर ने आशीर्वाद दिया है, यह निश्चित है।"

"इसीलिए हमारे जमींदार और किसी स्थान पर नहीं रहना चाहते", फलीबोग धीमी आवाज में बोला। "इसी लिए वह सदा इस रेगिस्तान में रहते हैं,मानों वह इसको प्यार करते हों। सवेरे से रात तक वह मेरे साथ खेतों में घूमते हैं….गर्मियों में सावेनी शहर के बाजार जाते हैं जब कि दूर-दूर के फसलें बटोरने वाले इकट्ठा होते हैं और मजदूरी ठहराली जाती थी। वहाँ से जो मजदूर आते थे वे ऐसा अनुभव करते थे कि मेले में आये हों और वे दरांती लिए सीधे खेतों के आर-पार चले जाते थे। लगता कि यह कोई सेना है। और नीता, इसीलिए हमारे जमींदार हमेशा इस स्थान को पसन्द करते हैं; यहाँ धन मिलता है; धन जिसे फसलों को बटोरने वाले गट्ठों के रूप में बाँधते हैं। यह सच है कि यहाँ की ज़मीन उर्वरा है।

घियोर्घ बर्वा झोंपड़ी के दूसरे सिरे से अपनी बारी आने पर बोला: "मैं तुम से सहमत हूँ, फसल के समय यहाँ रहना अच्छा है।

सब खलिहानें भरी होती हैं···आदमी और औरतें हँसते हैं और संध्या-समय आने के पास गाते हैं: जब काफी मनुष्य होते हैं तो सदा ऐसा ही होता है····"

"सच बताओ बर्बा सच", फलीबोग उसको चिढ़ाता हुआ बोला, "सच बताओ, किसको तुम सबसे अधिक चाहते हो ? तुम लड़कियों के साथ गाते हो और मज़ाक करते हो। तुम्हें वह समय याद है जब तुम जवान थे।"

"मज़ाक करने से क्या फायदा।"····घियोर्घ बर्बा भुनभुनाया। "मैं एक बूढ़े आदमी के सिवा कुछ नहीं हूँ···जवानी के बराबर कुछ नहीं होता ! जैसा कि गीत भी है···"

हरेक हँसने लगा। चाचा इ्मिंया ने लेपादतू की ओर सिर हिलाया।

"कौन जानता है ?" नीता ने जवाब दिया, "हो सकता है कि आने वाली गर्मियों में मैं कुछ और सोच रहा हूँ।"

"लेकिन क्यों, मेरे लड़के ?"

"वह", फलीबोग ने कहा, "एक गुप्त बात है···और तुम इसको जानने के काबिल नहीं हो, चचा····और मैं हैरान नहीं हूँगा जब कि घियोर्घ बर्बा किसी की शादी के लिए बंसी बजा रहा हो····"

वे सब चुप थे। किसी ने और कोई प्रश्न नहीं पूछा। केवल चचा इ्मिंया लम्बी साँस के साथ भुनभुनाया—"परमात्मा की मदद से...."

चिमनी के नीचे चलने वाली हवा सुनी जा सकती थी।

मिखालेच प्रेस्कूरी ने कहा—"अब हमें खराब मौसम का सामना करना पड़ेगा।"

फिर शांति हो गई। एक क्षण के बाद सॉंदू फिर अपनी भर्राई हुई आवाज में बोला—

"हुँ, मैं हैरान हूँ वे कहाँ होंगे अब, हमारे जमींदार लोग....कौन जानता है वे कहाँ हैं। कहते हैं कि इटली का देश,जहाँ कहीं है, वहाँ का

समुद्र अपने आप गर्म होता है। वहाँ कभी वर्षा नहीं होती। हर समय बसन्त का समय होता है। यही एक बार जमींदार ने मुझसे कहा था। हम घोड़े की पीठ पर खेतों में थे और वह मुझ से बातें कर रहे थे और मुझे सब तरह की बातें बता रहे थे....”

“कौन जाने वह देश कहाँ है” नीता ने कहा।

“अगर वह समुद्र के किनारे है,” मिखालेच प्रेस्कूरी ने कहा, “तो यह पृथ्वी के छोर पर होना चाहिये, जहाँ अबाबील चिड़िया और सारस अपनी सर्दियाँ व्यतीत करते हैं....लेकिन मेरी हैरानी यह है कि इंसान वहाँ कैसे जा सकता है?”

“क्यों, बड़ी आसानी से,” फलीयोग ने हँसते हुए कहा।

“आजकल रेलगाड़ियाँ हैं....तुम बिजली की तरह तेज जा सकते हो....”

एक क्षण की चुप्पी के बाद, नीता ने पूछा—“क्या वहाँ के मनुष्य यहाँ के लोगों से अच्छी तरह रहते हैं?”

फलीयोग ने एक खीज के साथ उत्तर दिया—

“नहीं तो! हमारे जमींदार सिवा अच्छी तरह रहने के वहाँ क्यों गये हैं? अगर मैं जा सकता तो मैं सर्दी पड़ते ही वहाँ उड़ जाता... हालाँ कि, मैं नहीं जानता मुझे क्यों उड़ जाना चाहिए...और अब जब कि मुझे इसकी आदत पड़ गई है।”

“मैं सोचता हूँ”, नीता ने कहा, “जमींदार अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए केवल वहाँ गये हैं....वह इतनी कोमल और गोरी है कि मुझे कहना चाहिए मैंने इतना सुन्दर और प्राणी कभी नहीं देखा। यह वही हैं जो जमींदार को दूर खींच कर ले गई हैं। क्या तुमने नहीं देखा कि वे उनको कैसे देखते थे? एक कीमती जवाहरात की तरह! हो सकता है कि वे इस समय बातें कर रहे हों और आनन्द मना रहे हों।”

उन्होंने फिर हवा की आवाज सुनी जो चिमनी के नीचे उमड़ कर दहाड़ रही थी। तेल के दीपक की लौ काँपी और लगभग बुझ गई।

कारिन्दा खड़ा हुआ और अपना चाबुक और फर की टोपी को ढूंढ़ना शुरू कर दिया।

"मैं भी जाऊंगा", नीता ने उठते हुए और अपनी भेड़ की खाल का कोट अपने कन्धे पर डालते हुए धीमी आवाज में कहा—

"लड़के मेरे लिए इन्तजार कर रहे होंगे...."

जैसे ही वे झोंपड़े से बाहर निकले वर्फ के कतरे उनके मुँह पर उड़े। लेकिन कुछ आगे जाने पर उन्हें तूफान ने वर्फ के चक्कर में पकड़ लिया।

"इस सबको छोड़ो!" फलीबोग थूकते हुए और मुँह पोंछते हुए चिल्लाया—"यही तो सीधा गले में घुस जाता है...."

नीता ने अपने को बड़ी भेड़ की खाल से ढक लिया।

फलीबोग झोंपड़े में चला गया, "यह अच्छा नहीं", वह भुनभुनाया, "मुझे कोई और मोटी चीज ओढ़ने के लिए लेने जाना पड़ेगा....तुम, नीता, आज रात जानवरों से दूर न जाना। ऐसे तूफान में न जाने क्या हो जाय?"

"मैं तो और रातों में भी सदा उनके पास सोता हूँ।" नीता ने कारिन्दा से विदा होते हुए कहा।

पहले तो उसका चचा नस्ताश की झोंपड़ी पर जाने के विचार था। वह माधियोलीता से मिलना और उससे बात करना चाहता था।

लेकिन दूसरे ही क्षण वह अस्तबल में चला गया।

जमीन और आसमान पर कुछ अजीब चीज हो रही थी। हवा में हजारों सुइयों जैसी चुभन थी।

सुन्दर बर्फ़ कपड़े की छोटी-से-छोटी तह में घुस जाती थी। आकाश

में एक वेगवती धारा-सी गरजती व बहती लग रही थी। जब वह अस्त-बल के पास पहुँचा तो नीता ने अनुभव किया कि हवा तेज हो गई है। उसने लड़कों को अपनी इन्तजार में एक कोने में चिपके हुए देखा। उसका कुत्ता, जब उसने मालिक को देखा तो कूदा और उसकी टांगों से रगड़ने लगा। मवेशी अंधेरे में गतिहीन खड़े थे। नीता ने अनुभव किया कि वे बेचैन हैं, उनके सिर ऊपर को और कान झपके हुए थे।

बर्फ सूखी आवाज में बाड़ों के सरपत के बने कठघरों पर खड़खड़ा रही थी। बर्फ के टुकड़े छत की दरारों से अन्दर घुस रहे थे। कभी-कभी हवा का झोंका तेजी से साँय-साँय करता और अदृश्य परों को फड़फड़ाता मुलायम तख्तों पर टकराता था।

"चचा नीता" लड़कों में से एक ने, कहा।

"आज रात को पशुओं के बाड़ों में भेड़िये जरूर आयेंगे।"

"तुम चुप रहो?...और बकवास मत करो। अगर वे आयेंगे तो हमारे कुत्ते उनको ठीक कर देंगे....और हमारे पास बन्दूकें भी हैं। किसी तरह सही, ऐसे मौसम में भेड़िये भी अपनी भिड़ों से निकलने की हिम्मत नहीं करते।"

"चचा, तुम यहाँ अकेले कैसे रहोगे? सुनो न, बाहर क्या हो रहा है...यह तो प्रलय की सी आवाज है।"

नीता ने नरमी से कहा, "मैं जानता हूँ तुम्हें तूफान ने उसी तरह डरा दिया है जैसे मुझे तुम्हारी उम्र में डराया करता था, है न छोकरो!"

लड़के आपस में एक दूसरे को पकड़ते हुए झोंपड़े में चले गये और दरवाजा अच्छी तरह बन्द कर लिया। नीता पशुओं की कतारों के पास से अस्तबल के परले कोने पर गया और उनकी साँसों की आवाज सुनता रहा। फिर वह उस कोने में आया, जहाँ अक्सर अपना बिस्तर बिछाया करता था। वह वहाँ एक बन्दूक रखता था जो हमेशा भरी

रहती थी। लेकिन उसे अपने पीतल की मूठ वाले डंडे पर अधिक भरोसा था : इसलिए उसने उसे निकाला और ऐसे रखा कि जरूरत पर जल्दी से उठा सके। इन सावधानियों के बाद वह अपने को भेड़ की खाल में लपेट कर लेट गया।

बहुत देर तक पीठ के बल लेटे सोचता रहा। उसे नींद नहीं आ रही थी और बाड़ों के सब ओर तूफान उठ रहा था। वह बचपन के विषय में और अजनबी लोगों के साथ व्यतीत किये हुए जीवन के विषय में सोचने लगा। वह अपनी माँ और बाप किसी को भी फिर याद न कर सका, कुछ देर बाद उसने अपने प्रेम के बारे में सोचा और फिर उसे अनुभव हुआ कि मार्वियोलीता वहाँ खड़ी है, जीवित और मुस्कराती, उसके बिस्तर के सिरहाने।

उसके पीछे, दीवारों को हिलाती बारीक बर्फीली हवा चल रही थी; और उसके चारों ओर फैला अन्धकार उसमें ऐसा लग रहा था कि उसके स्वप्नों की तस्वीरें और छायामय शकलें छितरी हों...

उसने अचानक, अपने आपको कोहनी के सहारे उठाया, और लगी एक अजीब दूर तक फैली हुई कंपकपी..."

"यह हवा तो कुछ गैर मामूली तेज है...' उसने सोचा।

अब उसमें जरा भी रुकाव और आराम नहीं था। ऐसा लगता था कि एक अजीब, ऐसा तूफान, जिसकी कल्पना नहीं कर सकते, उठा है और वह अस्तबल को उखाड़ने वाला और दूर लेजाने वाला है। जहाँ पहिले शांति थी, वहाँ से अब हवा को चीरती हुई एक अनन्त गूँज खतरे की चिल्लाहट की भाँति क्षितिज तक प्रतिध्वनित हो रही थी।

"तूफान ने संसार को जड़ से हिला दिया है"...नीता ने काँपते हुए कहा।

मवेशी बेचैन होने लगे और एक साथ इकट्ठे होने लगे।

सारमनू भौंका, जैसे कि उसने किसी के आने की आहट सुनी हो।

"चुप रहो, कोई नहीं है।" नीता ने कहा।

वह उठा और अंधेरे में देखने की कोशिश की कि क्या हो रहा है। वह हैरान था कि जानवरों को शान्त करने के लिए क्या करे। लेकिन जानवरों को और कुत्ते को महसूस हो गया था आदमी से भी पहले और अनुभव हो गया था कि कुछ होने वाला है।

और जब मनुष्य ने अनुभव किया तो बहुत देर हो गई थी।

तेज आवाजों के साथ अस्तबल के जोड़ टूटने लगे।

मवेशी इस उपद्रव से डरे हुए एक दूसरे की तरफ दौड़े और घास की दीवारों से टकराये।

तूफान की भारी लहर से बाहर से धकेले जाने पर अस्तबल टूटने लगे। और दहाड़ते हुए मवेशी खुली जगहों में से निकल गये। सारमनू इंसान की तरह निराश होकर चिल्लाया।

एक घास का ढेर बड़े पँख की तरह लेपाद्तू से टकराया। झटके से घबराया हुआ और यह सोचते हुए कि उसे अपने को एक दुश्मन से बचाना है वह अपना डंडा उठाने के लिए झुका। लेकिन पास वाले एक झरोखे से हवा अन्दर आई और बर्फ़ के एक चक्कर ने उसे अन्धा कर दिया।

यह सब एक क्षण में ही हो गया।

जानवर चिंघाड़ते हुए आस-पास के खेतों में चले गये। नीता, जो उल्टा हाथ पैरों पर पड़ा था, उठने का वक्त न पा सका।

घास और तिनकों की छत पूरी नीचे गिरी और इसके बोझ से वह दब गया। उसको लगा कि वह मर जायगा।

एक क्षण तक वह अपने कुत्ते की भौंकने की आवाज सुन सका था। फिर हवा ने दुख भरी चीखों और मदद की पुकारों को दबा दिया।

फलीबोग अपनी घोड़ी पर सवार वर लौट रहा था, उसने हवा के झोंकों में मवेशियों के दहाड़ने की और अस्तबल के टूटने की आवाजें

सुनीं। उसने जल्दी रास्ता तय किया और सूखी आवाज में चिल्लाना शुरू किया।

"अरे, नीता तुम कहाँ हो? क्या हुआ?" वह अपनी घोड़ी से उतरा और बर्फ में घुस गया। बर्फ ने उसे अंधा कर दिया। उसने जमीन को हाथ पैरों से टटोला। फिर वह एक दम ठहर गया और जोर देकर सुना इसमें शक नहीं था कि पास ही कोई कराह रहा था। एक पल वह हिचकिचाया कि क्या वह पहले झोपड़ों में जाकर सावधान होने के लिए कहे? लेकिन वह सोचने के लिये नहीं ठहरा। उसने फिर अंधेरे में ढूँढना शुरू किया और बर्बाद हुए अस्तबल के, घास के तिनकों को दायें बायें फेंकने लगा। समय-समय पर आहट लेने के लिए रुकता। वह फिर चिल्लाया। "अरे, नीता तुम कहाँ हो? मैं हूँ, लड़के?....क्या तुम मेरी आवाज नहीं सुनते?"

अब कराहने की आवज पास ही साफ़ सुनाई पड़ रही थी। फलीबोग ने झोंपड़ी की तरफ चिल्लाना शुरू किया—

"अरे नीचे रहने वाले लोगो! परमात्मा के लिए जाग जाओ!"

फिर उसके मन में एक विचार आया। उसने अपनी बन्दूक जो उसके कन्धे पर लटक रही थी निकाली और दो बार गोली छोड़ीं। उसकी आवाज जंगली हवा की सॉय-सॉय में मिल गई...."

फलीबोग ने अपने हाथ फैलाये, फिर नीचे झुका—वह अधीरता से हाँपने लगा। उसने एक भेड़ की खाल महसूस की, नीता का कोट। इसमें लिपटी हुई जवान आदमी की देह अभी गर्म थी।

कारिन्दा ने उसको अपनी पूरी कोशिश से लकड़ी और घास के ढेर से याहर निकाला और भेड़ की खाल में लपेट दिया। तब वह अपनी घोड़ी पर चढ़ा और झोंपड़ियों की तरफ जाकर अपनी डरावनी आवाज में चिल्लाना शुरू किया।

उस खतरे और निराशा की रात में, नीता लगभग मर ही गया था।

उसे बूढ़े आदमी की झोंपड़ी में लाया गया। उसकी खोपड़ी फट गई थी और टाँगे टूट गईं थीं। वे जना को शराब में भीगी हुई रोटियों की पुल्टिस और उसके सिर के पास मोमबत्ती जलाने के लिए बुला कर लाये। बूढ़े आदमी ने दिन निकलने तक उसकी निगरानी की। वह आँखें बन्द किये निरन्तर कराहता रहा।

मुश्किल से दिन निकला था कि मार्घियोलीता वहाँ आई, मानो तूफान जो अब भी चल रहा था, उसे वहाँ खींच लाया हो। वह चिल्ला कर अपने सिर को हाथों में लेकर रोने लगी और नीचे गिर पड़ी, उसका मुँह जमीन की ओर था, उस बेंच के पास जहाँ कि उसका प्रेमी लेट रहा था।

नीता, जिसका शरीर पिस गया था, तीन दिन और रात होश में न आया। तब, आखिरकार, धुँधली रोशनी जो कि झोंपड़ी में छन कर आ रही थी उसकी आधी खुली आँखों पर चमकने लगी।....

●

उसने जवाब दिया, "आप जान ही गये हैं फलीबोग एक अजीब सा आदमी था जैसा कि वह स्वयँ ही कहा करता था। वह एक जंगली घोड़े के समान था। जब उसने देखा कि आबादी बढ़ रही है, एक के बाद दूसरे मालिक आते हैं और एक दूसरे से बहुत निर्दयी व लालची होता है, तो वह और जना अपने घोड़ों पर चढ़े और प्र त के पार चले गये। कौन जाने वे कहाँ गये? फिर किसी ने उनके बारे में नहीं सुना··· वे पक्षियों की कतार की भाँति आँख से ओझल हो गये।"

उसने टकटकी लगा कर कुछ देर तक हल्की सफेद धुन्ध को देखा जो दूरी पर इकट्ठी हो रही थी।

"अगर उस दिन फलीबोग न होता," अन्त में उसने कहा, "मैं उस भयानक रात में अवश्य ही मर गया होता। सच बात तो यह है कि मुझे कभी उस पर बहुत विश्वास न था, लेकिन उसका दिल अच्छा था। मैं हर साल उसकी आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना करवाता हूँ, सम्भवतः वह अब जीवित नहीं है···सम्भव है वहीं चला गया है, जहाँ हम सब एक दिन जायँगे···।"।

उस गर्मी की संध्या में नीता लेपादतू ने मुझ से इस प्रकार बातें कीं। और जब मैंने उस जमाने के लोगों के बारे में बूढ़ों के बारे में, नन के बारे में और सभी उन दूसरे लोगों के बारे में जो उन कीचड़ की बनी झोंपड़ियों में रहते थे, जानने योग्य सभी बातें जानलीं, तो इतना सन्तुष्ट हो गया मानों मैंने उनमें से एक कहानी अभी हाल ही पढ़ी हो, जिनमें यह कहा जाता है कि कैसे एक नायक रहता था और कैसे मरा—अच्छे नायक भी और बुरे भी।····और ठीक उसी :प्रकार जैसे कि अच्छी कहानी पढ़ कर होता है—काफी देर तक मुझे नींद नहीं आई। और जब मैं पड़ा सोच रहा था? भूत काल की परछाइयाँ, घास के उस बंडल की गंध में घुल मिल गईं, जिस पर मेरा सिर टिका हुआ था।

निवासियों को भी कुछ भूमि मिली। उनमें से बहुत से जो उन झोंपड़ियों में पैदा हुए और रहे थे, उन्होंने अपने ही भूमि के टुकड़े पर रहने की व्यवस्था कर ली और अपने लिए घर बना लिए। इसलिये आज हमारे पास, जिसे तुम कुछ अंशों में गाँव कह सकते हो—एक गाँव है, और हम अब दुनियाँ से बहुत दूर नहीं।"

जब नीता लेपादतू मुझे यह सब सुना रहा था, गाँव के दूसरे लोग खेतों से लौट कर उसके घर के आगे से जाने वाली सड़क से गुजर रहे थे और बहुत से लड़के गा रहे थे, उनके स्वर उस शांत संध्या में स्थिरता और उल्लास से ऊंचे चढ़ रहे थे।

मैंने और आस पास के सब देश को देखा, पहाड़ियों पर जहाँ सुनहरा अनाज धीरे-धीरे हवा के झोंकों में लहरा रहा था, उन छोटी घाटियों को जो चरागाहों के लिए और दक्षिण की ओर फैले हुए अनन्त अन्न के खेतों को देखते हुए मैंने अपने मेजबान से पूछा—

"जमींदार के पुराने घर का क्या हुआ?"

"वह गिरा दिया गया और दूसरा उससे बहुत ऊँचा एक नया बनाया गया। फिर दूसरा भी बिना स्वामी के रहा और वह भी गिरा दिया गया। दूसरे जमींदारों ने जागीर के मध्य में ईंटों का मकान बनाया था....वे लगभग प्रति वर्ष अपने मकान और स्थान को पशुओं के बाड़े की तरह बदलते रहते थे। लेकिन अब पशुओं के बाड़े भी अक्सर नहीं बदले जाते और वे ऐसे बनाये जाते हैं जैसे कि बनाये जाने चाहिएँ।"

नीता लेपादतू हँसा और कहने लगा—"मैंने ऐसा कहते सुना है कि यहाँ से बहुत दूर नहीं, जिजिया घाटी में रेल चालू की जा रही है...."

"हाँ, यह ठीक है", मैंने कहा। "क्यों, दुनियाँ में चीजें इसी प्रकार तो बदलती हैं। लेकिन फलीबोग? फलीबोग और उसकी जना का क्या हुआ?"

नीता कुछ देर बैठा सोचता रहा।

रात, के सम्बन्ध में भी जब वह लगभग मर गया था, और अपने बसन्त ऋतु तक रहने वाले दुखों के सम्बन्ध में भी बताया।

"लेकिन बसन्त में", मेरी ओर एक मुस्कान भरी दृष्टि डालकर वह कहता गया। "मैं अपनी झोंपड़ी छोड़कर गर्म धूप में बैठने लगा ...और जब अबाबील चिड़ियाँ वापिस आने लगीं और खेतों में फूल खिलने लगे तब मेरा कष्ट समाप्त हो गया। तब जमींदार भी घर आगये और मार्घियोलीता और मैंने उनको और उनकी श्रीमती को अपने विवाह के लिए निमन्त्रित किया।"

"क्या तुम जानते हो, विवाह के लिए हमें इयासी तक जाना पड़ा? श्रीमतीजी जो हमारा रेगिस्तान फिर नहीं देखना चाहती थीं, लेकिन उन्होंने विवाह में आने की स्वीकृति दे दी। यह मेरी उन सेवाओं का इनाम था जो मैंने उनकी अनुपस्थिति में, जब कि वे सदा गर्म रहने वाले समुद्र के किनारे रंगरेलियाँ मना रहे थे और आनन्दित हो रहे थे, कष्ट सह कर की थीं।

"हमने देश के बहुत बड़े भूभाग की सैर की और अनेक नगर और गाँव देखे...और जब हम लौटे तो हमारी मिल्कियत और वह भूमि जो हमारे मालिक ने हमें दे रखी थीं बिल्कुल ऊजड़ और छोड़ी हुई-सी लगती थी। और क्योंकि हमने बहुत-सी चीजें देखी थीं—मकान, फार्म और गाड़ियाँ और न जाने कितनी चीजें। इसलिए हमने सोचा कि हमें पूरी कोशिश करके झोंपड़ी से निकलना चाहिए और हमने अपने लिए एक मकान बनाया.......और फिर काफी लोगों ने बनाये.... लेकिन हमारा मालिक विचारा कुछ समय के बाद यहाँ कभी नहीं आया। उसने वही किया जो उनकी श्रीमतीजी ने कहा। वह यहाँ से चला गया और दूसरी जागीर खरीद ली—और यह खेत दूसरों के हाथों में चले गए। उनके टुकड़े-टुकड़े कर लिये गये। सब तरह के आदमी एक के बाद एक उन पर अधिकार करते गये, और पुराने

(७)

बोर्दीनी गाँव का एक किसान था जिसने हाल ही में मुझे प्रुत प्रांत की बर्बादी के समय की ये सब कहानियाँ सुनाई थीं।

गर्मियों में एक दिन मैं उस गाँव में पहुँचा जहाँ कि यह आदमी मेयर था और मैं उसके घर के आँगन में ठहरा जिसके आस पास सींकों की बाड़ लगी हुई थी।

उसने मेरे घोड़े को एक अस्तबल में शरण दी, जिसकी दीवारों पर सफेदी हो रही थी। बीच-बीच में नीला रंग पोता गया था और उसने मुझे अपने घर के छज्जे पर आराम करने के लिए निमन्त्रित किया।

वह लम्बे बालों वाला हृष्ट पुष्ट मनुष्य था। उसकी मूंछें भूरे रंग की छोटी थीं और आँखें घनी भौंहों में घुसी हुई थीं। मैंने देखा वह एक ओर झुक कर चलता था—कुछ लँगड़ाता था।

उसने बड़ी नम्रता से मुझसे ठंडे पानी को पीकर प्यास बुझाने के लिए निवेदन किया। इस बीच अतिथियों का स्वागत करने के लिए उसकी बीवी ने एक मोटी मुर्गी संध्या के समय के भोजन के लिए पकते हुए चुकन्दर की जड़ के शोरबे में मिला दी। दो सुन्दर और चंचल छोटे बच्चे आये और चले गये। फिर घर के काम में लग गये और साफ छप्पर से पशुओं के बाड़े तक इधर-उधर दौड़ते रहे।

बहुत देर के बाद, जब मैंने खाना खा लिया, तो वह आदमी छज्जे पर आया और कुछ कदम की दूरी पर बैठ गया, फिर अपनी बीवी को बुलाया। वह शान्त आवाज में बोला—

"मर्वियोलीता, आओ और एक ग्लास शराब पीलो।"

जब वह स्त्री अपने कर्घे पर लौट गई तो किसान, नीता लेपादतू ने मुझे जमींदार एन्रामीनू के राज्य में बिताये अपने जीवन के सम्बन्ध में बताना आरम्भ किया। उसने मुझे हरेक बात बताई, उस रात, खतरनाक